जियोर्जिया की लोक कथाएं–1

संकलनकर्ता
सुषमा गुप्ता

Book Title: Georgia Ki Lok Kathayen-1 (Folktales of Georgia-1)
Cover Page picture : A Scene in Tbilisi, Georgia
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: sushmajee@yahoo.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm
Read More such stories at: www.scribd.com/sushma_gupta_1

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of Georgia

विंडसर, कैनेडा
मार्च 2018

Contents

सीरीज़ की भूमिका 4

जियोर्जिया की लोक कथाऐं–1 5

1 गुरू और चेला 7

2 तीन बहिनें और उनकी सौतेली माँ 16

3 बिल्कुल बेकार 29

4 मेंढक की खाल 39

5 किस्मत 52

6 साँप और किसान 60

7 गुलाम्बरा और सुलाम्बरा 67

8 दो भाई 81

9 राजकुमार 87

10 एक गड़रिया और एक खुशनसीब बच्चा 108

11 दो चोर 118

12 एक लोमड़ा और एक राजा का बेटा 137

13 एक राजा और सेब 150

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब 100 साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक 1200 से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से 400 से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब 95 प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
मई 2018

जियोर्जिया की लोक कथाऐं–1

संसार में सात महाद्वीप हैं – एशिया, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, अन्टार्कटिका, यूरोप और आस्ट्रेलिया – सबसे पहले सबसे बड़ा और सबसे बाद में सबसे छोटा। साइज़ में यूरोप आस्ट्रेलिया से पहले आता है। जैसा कि यूरोप के बाहर दुनियाँ में लोगों का विश्वास है सारे यूरोप में अंग्रेजी नहीं बोली जाती। वहाँ भी बहुत सारी भाषाऐं बोली जाती हैं। पर यूरोप की बहुत सारी लोक कथाऐं अंग्रेजी भाषा में भी मिल जाती हैं।

इस महाद्वीप का अपना लिखा साहित्य और इसके बारे में लिखा साहित्य और दूसरे महाद्वीपों की तुलना में काफी मिलता है और इसी वजह से हमने इस महाद्वीप की केवल कुछ लोक कथाऐं ही हिन्दी भाषा में प्रस्तुत करने का विचार किया है। दूसरे क्योंकि इस महाद्वीप की लोक कथाओं के बिना दुनियाँ का लोक कथा साहित्य कुछ अधूरा सा लगता है इसलिये भी इनमें से कुछ लोक कथाओं को इस प्रोजैक्ट में शामिल कर लिया गया है।

इस महाद्वीप में कुल मिला कर 50 से ज़्यादा देश है पर इतने सारे देशों में से केवल कुछ ही देशों की ही लोक कथाऐं ज़्यादा मिलती हैं जैसे इंगलैंड, नौर्स देशों के पाँच देश[1], जर्मनी, इटली, आयरलैंड जियोर्जिया आदि। इसलिये इन देशों की लोक कथाऐं इन देशों के नाम से ही दी गयीं हैं। शेष देशों की लोक कथाऐं "यूरोप की लोक कथाऐं" नाम की पुस्तक के अन्तर्गत प्रकाशित की जा रही हैं।

इस महाद्वीप की सबसे ज़्यादा कथाऐं ग्रिम्स और ऐन्ड्रू लैंग की कथाओं के संग्रहों में मिलती हैं। दूसरे देशों की लोक कथाऐं कम मिलती हैं और कुछ देशों की लोक कथाऐं तो मिलती ही नहीं हैं।

सो प्रस्तुत है तुम सबके हाथों में यह पुस्तक "जियोर्जिया की लोक कथाऐं–1"।[2] इस पुस्तक में यूरोप महाद्वीप के जियोर्जिया देश की लोक कथाऐं प्रस्तुत की जा रही हैं। ये लोक कथाऐं हमने एक पुस्तक से ली हैं।[3] इस पुस्तक के तीन हिस्से हैं – जियोर्जिया की लोक कथाऐं, मिन्ग्रैलियन की लोक कथाऐं और गुरियन लोक कथाऐं।[4] इस पुस्तक में केवल जियोर्जियन लोक कथाऐं ही दी जा रही हैं। इस भाग में कुल सोलह कथाऐं दी गयीं हैं जिनमें से छठी ग्यारहवीं और बारहवीं लोक कथाऐं नहीं दी गयी हैं। इस प्रकार इसमें वहाँ की केवल तेरह कथाऐं ही दी गयीं हैं।

आशा है कि ये लोक कथाऐं तुम लागों को पसन्द आयेंगी और यूरोप की वे लोक कथाऐं जो अंग्रज़ी में होने की वजह से या फिर उनके भारत में उपलब्ध न होने की वजह से तुम लोग नहीं पढ़ सकते वे सब अब तुम हिन्दी में पढ़ सकोगे।

---

[1] Norse or Nordic or Scandinavian countries are five – Iceland, Denmark, Finland, Norway and Sweden

[2] Georgia Ki Lok Kathayen-1 – contains folktales from Georgia country of Europe

[3] Taken from the book "Georgian Folk Tales" Translated by Marjorie Wardrop. London: David Nutt in the Strand. 1894. 38 folktales. This book is available on http://www.archive.org/stream/cu31924029936006#page/n7/mode/2up

[4] Georgian Tales (16 Tales), Mingrelian Tales (8 Tales) and Gurian Tales (14 Tales).

1 गुरू और चेला[5]

एक बार की बात है एक बहुत ही गरीब किसान था। उसके एक बेटा था। एक दिन किसान की पत्नी ने अपने पति से कहा — “हमारे बेटे को कोई काम सीखना चाहिये क्योंकि जब वह तुमसे अलग हो जायेगा तो अगर वह तुम्हारी तरह से बे पढ़ा लिखा रहा तो फिर वह क्या करेगा।”

पहले तो किसान ने पत्नी की बात सुनी अनसुनी कर दी पर पत्नी भी उसके पीछे पड़ी रही और उसको चैन से बैठने ही नहीं दिया। आखिर उसको अपने बेटे को ले कर बाहर जाना ही पड़ा।

सो किसान अपने बेटे को ले कर उसके लिये कोई गुरू ढूँढने चल दिया। रास्ते में उनको प्यास लगी। किसान को एक छोटी से नदी दिखायी दे गयी। उसने उसमें से जब तक उसकी प्यास नहीं बुझी बहुत जल्दी जल्दी पानी पिया।

पानी पी कर जब उसने सिर ऊपर उठाया वह बोला “ओह तू कितना अच्छा है।”

जैसे ही उसने यह कहा तो पानी में से एक शैतान एक आदमी के रूप में निकला और किसान से पूछा — “ओ आदमी तुझे क्या चाहिये? मैं वख्रक[6] हूँ। तुझे क्या परेशानी है?”

---

[5] Master and Pupil (Tale No 1) – a folktale from Georgia, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.archive.org/stream/cu31924029936006#page/n19/mode/2up

[6] Vakhraca

किसान ने उसको अपनी सारी कहानी सुनायी। शैतान को जब यह सब पता चला तो उसने किसान से कहा — "तू अपना यह बेटा मुझे दे दे। मैं इसको एक साल तक पढ़ाऊँगा।

फिर तू यहाँ आना। उस समय अगर तू इसको पहचान ले तो ठीक है यह तेरा। और अगर तू इसको न पहचान सके तो फिर यह मेरा, केवल मेरा होगा। तेरा इससे कोई लेना देना नहीं होगा।"

इस शैतान के पास इन शर्तों पर और भी बच्चे थे पालने के लिये। और एक साल में तो बच्चे इतना बदल जाते हैं कि उनके माता पिता भी उनको नहीं पहचान सकते हैं। और वह शैतान इस बात का फायदा उठा रहा था।

पर किसान को तो इन सब बातों कुछ भी पता नहीं था सो वह शैतान की इस बात पर राजी हो गया और अपने बच्चे को शैतान को दे कर चला गया।

धीरे धीरे एक साल गुजर गया। और एक साल गुजरने के बाद वह किसान फिर उसी नदी के किनारे आया।

उसको शैतान तो घर पर नहीं मिला हाँ उसके आँगन में बहुत सारे लड़के खेलते हुए मिले। उसने उन लड़कों में से अपने बेटे को पहचानने की बहुत कोशिश की उनको बार बार देखा पर वह अपने बेटे को नहीं पहचान सका।

यह देख कर किसान बहुत दुखी हुआ। वह दुखी दुखी खड़ा था कि उसके बेटे ने खुद ने उसको पहचाना।

बेटे ने पिता से कहा — "मेरा गुरू अभी अभी आने वाला होगा। वह हम सबको फाख्ताओं[7] में बदल देगा और फिर हम सब उड़ जायेंगे। उस उड़ान में सबसे पहले मैं उड़ूँगा और जब हम वापस लौटेंगे तब मैं सबके पीछे होऊँगा।

जब मेरा गुरू आपसे पूछे कि इनमें आपका बेटा कौन सा है तब आप मेरी तरफ इशारा कर दीजियेगा।"

यह सुन कर किसान बहुत खुश हुआ और वह अपने लड़के के गुरू के आने का इन्तजार करने लगा। कुछ ही देर में गुरू आ गया। उसने अपने सब शिष्यों को बुलाया उनको फाख्ताओं में बदला और उनको उड़ जाने के लिये कहा। किसान का बेटा उन सबमें सबसे पहले उड़ा और जब वे सब लौटे तो वह सबसे पीछे था।

गुरू ने पूछा — "क्या तू जानता है कि तेरा बेटा कौन सा है?"

किसान को तो मालूम था कि उसका बेटा कौन सा है सो उसने उसकी ओर इशारा कर दिया।

जब शैतान को अपने शिष्य की चाल का पता चला तो वह बहुत गुस्सा हुआ। पर अब क्या हो सकता था। अपनी शर्त के अनुसार बेटा अपने पिता के साथ चला गया।

---

[7] Translated for the word "Dove" – see its picture above.

पिता अपने बेटे को ले कर चला गया।

चलते चलते वे एक ऐसी जगह आये जहाँ कुछ कुलीन लोग शिकार के लिये आये हुए थे। उनके कुछ ग्रेहाउन्ड कुत्ते एक बड़े खरगोश[8] का पीछा कर रहे थे पर वे उसको पकड़ नहीं पा रहे थे।

बेटे ने पिता से कहा — "आप जंगल में जाइये और एक बड़े खरगोश का पीछा कीजिये। मैं अपने आपको एक कुत्ते में बदल लूँगा और फिर मैं उस बड़े खरगोश को उनके सामने ही पकड़ लूँगा।

ये कुलीन लोग आपका पीछा करेंगे और आपसे मुझे उनको बेचने के लिये कहेंगे। आप मुझे उनको ऊँची कीमत पर बेच दीजियेगा। फिर मैं पहला मौका पाते ही उनसे बच कर आपके पास भाग आऊँगा और आ कर आपको पकड़ लूँगा।"

यह सुन कर पिता जंगल में गया और एक बड़े खरगोश का पीछा किया। इधर बेटे ने अपने आपको एक ग्रेहाउन्ड कुत्ते में बदला और कुलीन आदमियों के सामने सामने ही उस खरगोश को पकड़ लिया।

---

[8] Translated for the word "Hare" – Hare is a rabbit-like animal, but a bit larger than the rabbit – see its picture above.

यह देख कर वे तो भौंचक्के रह गये। वे उस किसान के चारों तरफ इकट्ठा हो गये और उससे वह कुत्ता उन्हें बेचने के लिये जिद करने लगे। किसान ने उनसे उसकी बड़ी ऊँची कीमत माँगी जो उन्होंने उसको दी और उस कुत्ते को खरीद लिया।

उन्होंने उस कुत्ते के गले में रस्सी बाँधी और उसको ले कर चल दिये। काफी दूर जाने के बाद उन्होंने देखा कि एक बड़ा खरगोश एक झाड़ी में से निकल कर भागा। उसको देखते ही उन्होंने अपने हाउन्ड को खोल दिया और उसको बड़े खरगोश के पीछे भेज दिया।

जब कुत्ते ने बड़े खरगोश का काफी देर तक पीछा कर लिया और कुलीन लोगों को भी उसने पीछे छोड़ दिया तो वह फिर से लड़के में बदल गया और अपने पिता के पास भाग गया।

पिता और बेटा अपने रास्ते चले गये। पर जो पैसा अभी

उन्होंने कमाया वह काफी नहीं था। बेटा बोला "मुझे अभी और पैसा कमाना है।"

उन्होंने चारों तरफ देखा तो उन्होंने देखा कि कुलीन लोगों का एक और समूह एक चिड़िया का पीछा कर रहा था। कुछ बाज़[9] उसके पीछे उड़ रहे थे पर वे उस चिड़िया को पकड़ नहीं पा रहे थे।

[9] Translated for the word "Falcon"

सो लड़के ने एक बाज़ का रूप रखा और कुलीन लोगों के सामने सामने हवा में इस चिड़िया का पीछा करने लगा और जल्दी ही उसे नीचे गिरा दिया।

कुलीन लोग यह देख कर बहुत खुश हुए। उन्होंने किसान से कहा कि वह वह बाज़ उनको बेच दे। किसान ने उनसे फिर से इसकी बड़ी ऊँची कीमत माँगी और वह बाज़ उनको बेच दिया। बाज़ बेच कर वह किसान अपने रास्ते चला गया।

कुलीन लोग उस बाज़ को ले कर अपने रास्ते चले गये। चलते चलते उनको एक और चिड़िया मिली तो उन्होंने अपने बाज़ को उस चिड़िया के पीछे उसको पकड़ने के लिये छोड़ दिया।

बाज़ उस चिड़िया के पीछे उड़ने लगा। जैसे ही उसने देखा कि वे कुलीन लोग अब उसकी आँखों से ओझल हो गये हैं तो उसने अपने आपको लड़के में बदला और अपने पिता के पास आ गया।

पिता और बेटा अपने उस पैसे को ले कर फिर अपने घर की तरफ चल दिये। पर बेटा अपने उतने पैसे से अभी भी सन्तुष्ट नहीं था। उसने अपने पिता से कहा — "आइये अब मैं अपने आपको एक घोड़े में बदल लेता हूँ। आप मेरे ऊपर सवार होइये किसी शहर में जाइये और मुझे बेच दीजिये।

पर ध्यान रहे कि आप मुझे किसी ऐसे आदमी को मत बेचियेगा जिसकी आँखें कई रंग की हों। और अगर आप मुझे उसे बेच भी दें तो उसको मेरे सिर पर लगाने वाला मत दीजियेगा। क्योंकि आपको

मालूम हैं कि अगर आपने ऐसा किया तो मैं उस आदमी से अपने आपको छुड़ा नहीं पाऊँगा।

यह कह कर उस लड़के ने अपने आपको एक बहुत ही शानदार घोड़े में बदला। उसका पिता उस पर चढ़ गया और उस पर सवार हो कर शहर चल दिया। वहाँ जा कर उसने देखा कि उस घोड़े को तो बहुत लोग खरीदना चाहते थे।

पर उनमें से जो उस घोड़े को सबसे ज़्यादा खरीदना चाहता था वह था एक कई रंग वाली आँखों वाला आदमी।

जब भी कभी कोई उसकी कीमत एक रूबल[10] भी बढ़ाता तो वह आदमी उसकी कीमत दस रूबल बढ़ा देता। किसान को पैसे का लालच आ गया और उसने उस घोड़े को उसी कई रंग वाली आँखों वाले आदमी को बेच दिया। उस आदमी ने उस घोड़े के साथ साथ उसके सिर पर लगाने वाला भी खरीद लिया।

घोड़ा खरीद कर वह उस घोड़े पर चढ़ा और चल दिया। वह वहाँ से दौड़ गया और तुरन्त ही किसान की आँखों से ओझल हो गया। वह बहुत खुश था कि उसने अपने शिष्य को एक बार फिर से पा लिया था।

वह घर पहुँचा और उस घोड़े को एक अँधेरे कमरे में बन्द कर दिया और कमरे के दरवाजे को ताला लगा दिया। उसका शिष्य लेट

---

[10] Rouble is presently the name of the currency of Russia but was of some nearby countries too. Presently the currency of Georgia is Georgian Lari.

गया। वह बहुत दुखी था। वह सोचता रहा और रोता रहा। पर उसको कोई सहायता नजर नहीं आ रही थी।

समय गुजरता रहा पर उसको वहाँ से भागने का कोई मौका हाथ नहीं लगा।

एक दिन उसने देखा कि सूरज की एक किरन एक छेद में से हो कर अस्तबल में आयी। बस उसने आपको एक चूहे में बदला और बाहर भाग लिया।

उसके गुरू ने देखा तो उसने अपने आपको एक बिल्ली के रूप में बदला और उसके पीछे भागा। सो चूहा आगे आगे और बिल्ली उसके पीछे पीछे।

जैसे ही बिल्ली चूहे को अपने मुँह में दबोच कर पकड़ने वाली थी चूहा तुरन्त ही एक मछली में बदल गया और एक नदी में तैरने लगा। गुरू एक जाल में बदल गया और मछली का पीछा करने लगा।

जैसे ही जाल मछली को पकड़ने वाला था कि मछली एक चिड़िया में बदल गयी और वहाँ से उड़ गयी। उसके गुरू ने उसका

एक बाज़ का रूप रख कर पीछा किया। जब बाज़ उसको अपने पंजों में पकड़ने ही वाला था कि वह एक लाल सेब में बदल गया और राजा की गोद में जा गिरा।

बाज़ ने अपने आपको राजा के हाथ में एक चाकू में बदला। जब राजा चाकू से उस सेब को काटने जा रहा था कि सेब **80** पौंड बाजरे में बदल कर कपड़े पर बिखर गया।

शैतान ने अपने आपको एक मुर्गी में बदला और उस बाजरे को खाना शुरू कर दिया। जब उसने करीब करीब सारा बाजरा खा लिया और केवल बाजरे का एक दाना रह गया तो यह दाना एक सुई में बदल गया और उसने अपने आपको मुर्गी के सामने लुढ़का दिया। मुर्गी ने भी उसको तुरन्त ही देख लिया और अपने आपको एक धागे में बदल कर उस सुई के छेद में पिरो दिया।

जैसे ही वह धागा उस सुई को पकड़ कर रखता कि सुई आग में बदल गयी और उसने धागे को जला दिया। धागे के जलते ही लड़का शैतान के चंगुल से निकल कर भाग गया।

वह सीधा अपने पिता के पास पहुँच गया और फिर वे सब खुशी खुशी रहे।

2 तीन बहिनें और उनकी सौतेली माँ[11]

एक बार की बात है एक बहुत ही गरीब किसान था। उसके तीन बेटियाँ थीं। इस किसान की पत्नी मर गयी थी सो उसने दूसरी शादी कर ली थी। यह दूसरी पत्नी इन तीनों बेटियों को इस तरह नफरत करती थी जैसे लोग प्लेग को नफरत करते हैं।

वह रोज अपने पति को तंग करती "अपनी इन तीनों बेटियों को यहाँ से ले जाओ और कहीं छोड़ आओ। मुझसे नहीं सँभलती तुम्हारी ये बेटियाँ।"

एक दिन जब उससे नहीं रहा गया तो वह बीमार पड़ गयी और बिस्तर पर लेट गयी। वह अपनी करारी रोटी भी साथ में ले गयी और कराहने लगी। वह एक तरफ लेट गयी और उसने वह रोटी अपने नीचे दबा ली।

अब जब वह करवट बदलती तो वह रोटी उसके नीचे टूटती और आवाज करती तो वह कहती मेरी तो हड्डियाँ चटक रही हैं। मुझे दूसरी करवट लिटा दो।"

पर इसकी असली वजह तो उसकी वे तीनों सौतेली बेटियाँ थीं। उसके पति ने यह सब देख कर आखिर यह तय कर लिया कि वह उनको कहीं छोड़ आयेगा।

---

[11] Three Sisters and Their Stepmother (Tale No 2) – a folktale from Georgia, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.archive.org/stream/cu31924029936006#page/n19/mode/2up

अगले दिन वह एक जंगल में दूर चला गया। वहाँ उसने सेब का एक बहुत बड़ा पेड़ देखा जिस पर बहुत सारे सेब लदे पड़े थे। उसने उसके नीचे एक गहरा गड्ढा खोदा। पेड़ पर से अपनी तीनों बेटियों के लिये तीन सेब तोड़े और घर चला गया।

घर पहुँच कर एक एक सेब उसने अपनी तीनों बेटियों को दिया। उसकी बेटियों को उन सेबों का स्वाद बहुत अच्छा लगा तो उन्होंने अपने पिता से कहा — "पिता जी ये सेब आपको कहाँ से मिले? क्या आप हमारे लिये ऐसे सेब और नहीं ला सकते?"

पिता ने जवाब दिया — "जंगल में तो ऐसे पेड़ बहुत सारे लगे हैं पर अभी तो वहाँ से और सेब लाने का मेरे पास समय नहीं है। अगर तुमको ये सेब इतने ही अच्छे लगे तो तुम मेरे साथ चलो। मैं वहाँ पेड़ हिला कर सेब गिरा दूँगा तुम उनको बीन लेना और घर ले आना।"

किसान की बेटियाँ तो यह सुन कर बहुत खुश हो गयीं और पिता के साथ चलने के लिये तुरन्त ही तैयार हो गयीं। उनके पिता ने जो सेब के पेड़ के नीचे गड्ढा खोदा था वह उसने उनसे छिपा कर ढक दिया था।

वह उनको वहाँ ले गया और बोला — "देखो ये रहे वे सेब। मैं इस पेड़ को हिलाता हूँ पर जब तक मैं तुमसे इन्हें बीनने के लिये न कहूँ तुम इनको बीनना मत। फिर जब मैं बोलूँ तब तुम उन

सबको मिला लेना और जो कोई भी जो सेब ले ले वह सेब उसका।”

सो पिता पेड़ के ऊपर चला गया और वहॉ जा कर उस पेड़ को हिलाया। फिर उसने अपनी बेटियों को बुलाया और कहा — “अब पकड़ो कौन सेब पकड़ सकता है।”

तीनों बेटियॉ अचानक ही उस ढके हुए गड्ढे की तरफ दौड़ पड़ीं। गड्ढा जिस चीज़ से ढका हुआ था वह उनका बोझ नहीं सह सका सो वह तीनों लड़कियों को लिये हुए गड्ढे में गिर पड़ा।

उनके पिता ने उनके लिये उस गड्ढे में बहुत सारे सेब फेंक दिये और उनको वहीं छोड़ कर वहॉ से घर चला गया।

पहले तो लड़कियों को अपने पिता का व्यवहार समझ में नहीं आया पर बाद में उनको पता चला कि उनका पिता उनको उस जंगल में किसी खास उद्देश्य से लाया था।

उन्होंने आपस में बात की कि हमारी नीच सौतेली मॉ ही इस सबके लिये जिम्मेदार थी। पर अब क्या हो सकता था अब वहॉ तो उनको किसी सहायता की भी उम्मीद नहीं थी। सो तीनों की तीनों लड़कियॉ बैठ कर रोने लगीं।

वे रोती रहीं रोती रहीं जब तक उनके चेहरे पीले नहीं पड़ गये। उनके ऑसुओं से ऊपर आसमान और नीचे जमीन दोनों ही हिल गये।

आखिर पेड़ से झड़े सेब भी खत्म हो गये। सो उन्होंने सोचा और सोचा तो आपस में तय किया कि वे तीनों अपनी अपनी सबसे छोटी उँगली से खून निकालेंगी और जिसका खून सबसे मीठा होगा उसको खा लिया जायेगा।

सो उन्होंने ऐसा ही किया। सबका खून निकालने के बाद यह पाया गया कि सबसे छोटी लड़की का खून सबसे मीठा है।

यह देख कर वह डर गयी वह बोली — "बहिनों तुम लोग मुझे मत खाओ। मैंने तीन सेब छिपा कर रखे हैं। हम अभी उन्हें खा लेते हैं फिर भगवान शायद हमारी कुछ सहायता करें।"

कह कर वह घुटनों के बल बैठ गयी और प्रार्थना करने लगी — "हे भगवान तेरे नाम पर, मैं तुझसे प्रार्थना करती हूँ कि तू मेरा एक हाथ कुल्हाड़ी बना दे और दूसरा हाथ फावड़ा बना दे।"

भगवान ने उसकी सुन ली उसने तुरन्त ही उसका एक हाथ कुल्हाड़ी बना दिया और दूसरा हाथ फावड़ा बना दिया। सो एक हाथ से उसने गड्ढा खोदा और दूसरे हाथ से गड्ढे की मिट्टी बाहर फेंकी।

वह गड्ढा खोदती रही खोदती रही जब तक कि उसको एक चूहे का बिल नहीं मिल गया। उसने वहाँ से कुछ छोटी छोटी गिरियाँ उठायीं और अपनी बहिनों को दीं।

उसके बाद भी वह खोदती रही खोदती रही कि उसने अस्तबल की एक दीवार तोड़ दी। अब अस्तबल की यह दीवार एक राजा

की थी। इसमें बादाम और किशमिश बिखरे पड़े थे। सो ये लड़कियॉ उस अस्तबल में जाती और बादाम और किशमिश चुराती और उन्हें खा लेतीं।

अस्तबल में घोड़ों की देखभाल करने वाले बहुत ताज्जुब में थे कि वहॉ से ये बादाम और किशमिश कौन चुरा कर ले जाता है। हमारे घोड़े बेचारे भूखे रहते हैं।

छोटी लड़की फिर खोदती रही खोदती रही कि उसने एक बुढ़िया के घर की खिड़की तोड़ी। यह बुढ़िया रोज सुबह मास[12] के लिये चर्च जाया करती थी।

बुढ़िया के लिये दुखी होते हुए वह उसके घर में घुस गयी। वहॉ जा कर उसने उसका घर साफ किया फिर बीन्स उबलने रखीं। अपने तीनों के लिये काफी सारी रोटी ली और चोरी से वहॉ से वापस चली आयी।

जब वह बुढ़िया घर आयी तो वह तो बहुत आश्चर्यचकित रह गयी। “यहॉ कौन आया था जो मेरी रोटी चुरा कर ले गया।” शायद वह इसका पता लगा सकती थी। सो अगले दिन वह चर्च नहीं गयी। अगले दिन उसने अपने आपको एक चटाई में लपेटा और दरवाजे के साथ लग कर खड़ी हो गयी।

---

[12] Mass is one of the names by which the sacrament of the Eucharist is commonly called in the Catholic Church. The term Mass often colloquially refers to the entire church service in general.

उसने देखा कि कुछ देर बाद ही एक एक करके तीन लड़कियाँ वहाँ आयीं। असल में उन्होंने सोचा कि इस समय तो बुढ़िया तो चर्च गयी होगी तो उसके घर में चलते हैं।

बुढ़िया ने उनको अपनी चटाई के अन्दर से देखा। तो वह तो जो कुछ उसने देखा उसको देख कर आश्चर्यचकित रह गयी। उसने देखा कि तीनों लड़कियाँ उसके घर में घुसीं। तीनों एक से एक सुन्दर थीं। एक से एक गोरी थीं लगता था जैसे उनको सूरज ने कभी छुआ ही न हो।

वह उनको देखती रही और देखती रही पर जब उससे नहीं रहा गया तो उसने अपनी चटाई हटा दी और उनमें से एक को अपनी बाँहों में पकड़ लिया और पूछा — "तुम कौन हो जो एक देवदूत की तरह लगती हो? तुम इन्सान हो या कोई देवदूत हो?"

लड़की बोली — "हम देवदूत नहीं हैं हम इन्सान हैं। हम तीन बहिनें हैं। बस हम पर बहुत मुसीबत आ पड़ी है इसलिये हम यहाँ हैं।"

तब उसने अपनी कहानी बुढ़िया को बतायी। उसकी कहानी सुन कर बुढ़िया बहुत खुश हुई कि उसको वे तीनों बहिनें मिल गयीं। वह उनकी अपनी आँखों की पुतली ती तरह से रक्षा करती। जब वह बाहर जाती तो वह उनके ऊपर टोकरी ढक जाती ताकि उन्हें कोई देख न ले और उन्हें कोई ले न जाये।

एक बार बुढ़िया ने लड़कियों को टोकरी के नीचे रखा और घर का दरवाजा बन्द करके वह मास के लिये चर्च चली गयी।

लड़कियों के दिमाग में आया कि वे किशमिश खायें। सो वे उठीं उन्होंने अपने ऊपर से टोकरी उठायी और वहॉ से निकल कर अस्तबल में चली गयीं। जैसे ही वे किशमिश चोरी कर रही थीं कि घोड़ों के रखवाले बाहर निकल आये और उन्होंने उन तीनों लड़कियों को पकड़ लिया। पकड़ कर वे उन्हें राजा के पास ले गये।

राजा ने उनसे पूछा कि वे कौन हैं तो उन्होंने राजा को भी अपनी पूरी कहानी सुना दी। राजा ने पूछा — "तुम लोग क्या क्या कर सकती हो?"

सबसे बड़ी लड़की ने कहा — "मैं एक ऐसा कालीन बुन सकती हूॅ जिसके ऊपर आपकी सेना का हर सिपाही बैठ जाये उसके बाद भी आधा कालीन बिना खुला रह जाये।"

दूसरी लड़की बोली — "मैं एक अंडे के खोल में इतना सारा खाना पका सकती हूॅ कि आपकी सारी सेना वह खाना खाले फिर भी उतना ही खाना और बच जाये।"

राजा ने तीसरी लड़की से पूछा — "और तुम क्या कर सकती हो?" तो तीसरी लड़की बोली — "मैं सुनहरे बालों वाले बेटे पैदा कर सकती हूॅ।"

राजा उसके इस जवाब से बहुत खुश हुआ। उसने उससे शादी कर ली। राजा ने उसकी सबसे बड़ी बहिन का काम जॉचने की कोशिश की पर वह तो इतना बड़ा कालीन भी नहीं बुन सकी जिस पर एक आदमी भी बैठ जाये।

उसकी दूसरी बहिन भी अंडे के खोल में इतना भी खाना नहीं पका सकी जो एक चिड़िया के पेट भरने के लिये भी काफी हो।

राजा को उन दोनों पर बहुत गुस्सा आया तो उसने अपनी पत्नी से कहा — "अगर तुमने भी मुझे धोखा दिया तो देखना तुम तीनों में से कोई ज़िन्दा नहीं बचेगा।"

कुछ समय बाद राजा की पत्नी को बच्चे की आशा हुई। उसी समय इत्तफाक से राजा के एक दुश्मन ने राजा पर हमला कर दिया और राजा को लड़ाई के लिये जाना पड़ा।

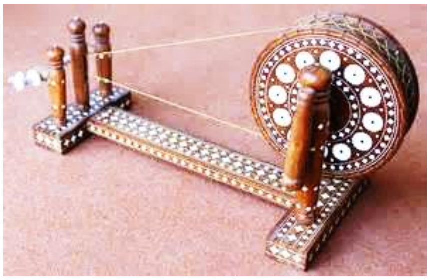

जाने से पहले उसने यह सन्देश छोड़ा "अगर मेरी पत्नी के बेटा हो तो दरवाजे पर तलवार लटका देना और अगर उसके बेटी हो तो चरखा लटका देना।"

कुछ दिनों बाद ही उसकी पत्नी के बच्चा होने वाला हुआ तो उसकी बहिनें किसी को उसके कमरे में अन्दर ही न जाने दें। वे खुद ही उसकी देखभाल करती रहीं। उसने एक सुनहरे बाल वाले बेटे को जन्म दिया।

यह देख कर उसकी दोनों बड़ी बहिनें बहुत गुस्सा हुईं। उनको लगा कि वे तो राजा के सामने झूठी पड़ गयीं और उनकी यह छोटी बहिन अपनी बात की सच्ची निकली। उनकी इच्छा हुई कि वह भी उनकी तरह से झूठी साबित हो।

सो वे उठीं और बिना माँ की जानकारी के उन्होंने सुनहरे बालों वाले बच्चे को उठा कर उसकी जगह एक कुत्ते के बच्चे को रख दिया। बच्चे को मारने की उनकी हिम्मत नहीं हुई सो उसके लिये उन्होंने एक बक्सा बनाया उसको उसमें रखा और नदी में बहा दिया।

नदी का पानी उस बक्से को बहा ले चला। वह बक्सा जा कर एक मिल चलाने वाली मशीन में फँस गया जिससे मिल रुक गयी। मिल वाला वहाँ देखने के लिये आया कि उसकी मिल क्यों रुक गयी तो उसने देखा कि वहाँ तो एक बक्सा फँसा पड़ा था।

उसने बक्सा निकाल लिया और उसे खोला तो उसमें तो उसको सुनहरे बालों वाला एक लड़का निकला। मिल वाले के कोई बच्चा

नहीं था सो वह उस बच्चे को घर ले आया और उसे अपने बच्चे की तरह पालने लगा। इस बीच बहिनों ने एक मूसल[13] दरवाजे के ऊपर टाँग दिया।

[13] Translated for the word “Pestle” – a small stick made of wood, stone or metal to grind something. A picture is given given to show a mortar and pestle.

कुछ समय बाद राजा लड़ाई पर से लौटा तो उसने दरवाजे पर मूसल टॅगा देखा तो लोगों से पूछा — "अरे यह क्या, यह मैं क्या देख रहा हूॅ? मेरी पत्नी के क्या बच्चा हुआ है?"

लोगों ने जवाब दिया "कुत्ते का बच्चा।"

यह सुन कर राजा को गुस्सा तो बहुत आया पर फिर सोचा लगता है कि किसी ने मेरे साथ मजाक किया है। देखता हूॅ कि अबकी बार मेरी पत्नी किसको जन्म देती है।

इस बात को एक साल गुजर गया। उसकी पत्नी को फिर से बच्चे की आशा हो आयी। एक दिन जब राजा शिकार के लिये गया हुआ था तो उसकी रानी ने फिर से एक सुनहरे बालों वाले लड़के को जन्म दिया।

उसकी बहिनों ने पहले की तरह से फिर से किसी को भी उसके कमरे में नहीं जाने दिया। बच्चे को उन्होंने फिर से मॉ के पास से उठाया और अबकी बार उन्होंने उसके पास कुत्ते के बच्चे की बजाय एक बिल्ली का बच्चा रख दिया।

इस बार भी उन्होंने उसके बच्चे को एक बक्से में बन्द किया और बक्से को नदी में बहा दिया। इत्तफाक से वह बच्चा फिर से उसी मिल वाले को मिल गया।

मिल वाला उस बच्चे को भी उठा कर घर ले आया और अपने पहले बच्चे की तरह से उसको भी अपने बच्चे की तरह से पालने लगा।

बहिनों ने दरवाजे के ऊपर फिर से मूसल लटका दिया।

राजा जब शिकार से लौटा और उसने दरवाजे पर मूसल लटका देखा तो वह गुस्से से जल उठा और उसकी ऑखों से चिनगारियॉ निकलने लगीं।

उसने अपनी पत्नी को बाहर निकाला बैल की खाल में लपेटा और महल के सामने एक खम्भे से बॉध दिया। फिर जो भी वहॉ से गुजरता उसको उसके चेहरे पर थूकने का और उसको मारने का हुकुम दिया जाता। इस तरह वह उसको अन्यायपूर्वक परेशान करता रहा।

उधर वह मिल वाला उन दोनों सुनहरी बालों वाले लड़कों को बहुत प्यार करता था जैसे कि वे उसकी ऑखों के तारे हों। बच्चे जल्दी जल्दी बड़े हो रहे थे। वे अक्लमन्द बहादुर और सुन्दर होते जा रहे थे।

एक बार राजा फिर शिकार खेलने गया तो वहॉ उसने कुछ बच्चे खेलते हुए देखे। उनमें से दो बच्चे दूसरे बच्चों से बहुत अच्छा खेल रहे थे। राजा को वे दोनों बच्चे बहुत अच्छे लगे।

वह उन पर से अपनी ऑखें ही नहीं हटा सका। वह उनको देखता का देखता रह गया। वह उनको देखते थक ही नहीं रहा था। वह उनकी तरफ देखते ही रहना चाह रहा था।

उसने यह भी देखा कि उनकी शक्ल उससे कितनी मिलती जुलती है। वह यह देख कर बहुत आश्चर्यचकित था उसने अपने

मन में सोचा "ये बच्चे किसके हो सकते हैं जिनकी शक्ल मुझसे इतनी ज़्यादा मिलती है।" पर वह सच्चाई नहीं जान सका।

उसी समय खेलते समय उनमें से एक भाई की टोपी नीचे गिर गयी जिससे उसके सुनहरे बाल दिखायी दे गये। यह देख कर राजा तो भौंचक रह गया। उसको याद आया कि उसकी पत्नी ने शादी से पहले कहा था कि वह उसको सुनहरे बालों वाले बच्चे देगी।

उसने पूछा — "ये बच्चे किसके है?" तो उसको पता चला कि वे बच्चे तो एक मिल वाले के बच्चे हैं।

अगले दिन राजा ने एक दावत का इन्तजाम किया जिसमें उसने उस मिल वाले को और उसके दोनों बेटों को बुलाया। जब बच्चे राजा के ऑगन में आये तो उन्होंने एक स्त्री को एक खम्भे से बॅधा देखा। उसको देख कर उनको लगा कि वह उनकी मॉ होनी चाहिये।

रसोइया एक चिड़िया पका रहा था। तो बड़ा भाई अन्दर चला गया। उसने रसोइये से एक लोहे की सलाख ली और आग के पास बैठ गया और चिड़िया को आग में भूनने के लिये उससे उसको अलटने पलटने लगा।

जब वह भुन कर लाल हो गयी और पक गयी तो उसने एक कहानी कहनी शुरू की। सबके कान खड़े हो गये और लोग उसके चेहरे की तरफ देखने लगे।

लड़के ने फिर अपनी मॉ की कहानी कहनी शुरू की। उसने बताया कि कैसे उसकी मॉ ने सुनहरे बालों वाले लड़कों को जन्म दिया। कैसे उसकी मॉ की बहिनें बहुत ही नीच थीं। अन्त में उसने कहा — “अगर यह सब सच है तो इस बैल की खाल फट जाये और हमारी मॉ आजाद हो जाये।”

लड़के के यह कहते ही बैल की खाल फट गयी और उसकी मॉ आजाद हो कर अन्दर आयी।

जब उसकी कहानी खत्म हो गयी तो उसका छोटा भाई अन्दर आया और लोहे की सलाख हाथ में उठायी और बोला — “अगर मेरे भाई की सारी कहानी ठीक है तो सचमुच यह हमारी मॉ है। इस भुनी हुई चिड़िया के पंख आ जायेंगे और यह उड़ जायेगी।”

तुरन्त ही उस भुनी हुई चिड़िया के पंख प्रगट हो गये और वह उड़ गयी। लोग तो यह देख कर उसको मुॅह फाड़े देखते रह गये।

राजा ने अपनी पत्नी की दोनों बहिनों को वहॉ बुलवाया और उनके घोड़े की पूॅछ से बॅधवा कर चारों तरफ घिसटवाया।

राजा ने अपनी पत्नी और बच्चों को महल में बुलवा लिया। महल में खूब खुशियॉ मनायी गयीं। राजा को अब सच का पता चल गया था और उसने अपने सुनहरे बालों वाले दोनों बेटों को भी पा लिया था। सब लोग खुशी खुशी रहने लगे।

3 बिल्कुल बेकार[14]

यह एक ऐसे आदमी की कहानी है जो अपने रहने सहने के लिये कुछ नहीं करता था। उसकी पत्नी उससे बहुत परेशान थी। उनकी ज़िन्दगी फिर कैसे आगे चली... आओ देखते हैं।

एक बार एक आदमी था जो "बिल्कुल बेकार" का था। वह किसी काम का नहीं था। दूसरी तरफ उसकी पत्नी बहुत ही बुरे स्वभाव की थी। वह उसको बिल्कुल चैन नहीं लेने देती थी।

वह हमेशा उसको कहती रहती थी — "तुम बाहर जाओ और इधर उधर देखो और कुछ कमा कर लाओ। तुम देखते तो हो कि हम लोग कितने गरीब हैं। हम लोग कैसे खायें पियें और कैसे रहें।"

आखिर पति से जब नहीं सहा गया तो वह उठा और बाहर चला गया। वह तो बस चलता ही चला जा रहा था पर उसको यह पता नहीं था कि वह जा कहाँ रहा था।

सो वह चलता गया चलता गया और जब वह जहाँ से उसने चलना शुरू किया था वहाँ से नवें पहाड़ पर चढ़ा तो उसने एक बहुत बड़ा सा घर देखा। इस घर में देवियाँ[15] रहती थीं।

[14] Good For Nothing (Tale No 3) – a folktale from Georgia, Europe.
Adapted from the Web Site :
http://www.archive.org/stream/cu31924029936006#page/n19/mode/2up

[15] Written here for the word "Devis" – Devi seems like some demon type of beings.

वह इस घर के पास आया तो उसने देखा कि एक कमरे के बीच में आग जल रही है। उस आग के चारों ओर देवियाँ बैठी हैं और उस आग से अपने हाथ गरम कर रही हैं।

वह उस कमरे में चला गया और दोस्ताना अन्दाज में उनको नमस्ते की और वहीं आग के पास बैठ गया। क्योंकि वह उनसे ठीक से बोला था तो देवियों ने भी उसके साथ ठीक से ही बरताव किया।

वह उनके साथ दिन रात रहा। उसने उन्हीं के साथ खाना खाया उसने उन्हीं के साथ पिया और वह उन्हीं के साथ सोया। वह उनके साथ उनके छोटे भाई की तरह ही रहा।

इन देवियों के पास एक इच्छा पूरी करने वाला पत्थर था। जब वे एक साथ बैठती थीं तब वह अपना पत्थर बाहर निकालती थीं तो अगर वह दोपहर का खाना चाहती थीं तो उससे उनको दोपहर का खाना मिल जाता था। अगर वे उससे शाम का खाना चाहती थीं तो उससे उनको शाम का खाना मिल जाता था।

इस तरह वे बिना कोई चिन्ता किये रहती थीं। उनको कोई दुख नहीं था और यही तो हमारे "बिल्कुल बेकार" आदमी को बहुत अच्छा लगा। उसने ऐसी ज़िन्दगी को अच्छा समझा सो उसने वह "इच्छा पूरी करने वाला पत्थर" चुराने की सोचा।

एक बार जब देवियाँ गहरी नींद में सोयी हुई थीं तो वह चुपके से सोने वाले कमरे से बाहर निकला "इच्छा पूरी करने वाला पत्थर" उठाया और बाहर जाने के लिये दरवाजे के पास आया।

उसने दरवाजा खुलने की इच्छा प्रगट की तो वह दरवाजा चरचराने लगा। वह चरचराया और बोला — "मेहमान ने इच्छा पूरी करने वाला पत्थर चुरा लिया है।"

बिल्कुल बेकार तुरन्त पीछे घूमा और उस पत्थर को उसकी जगह पर रख दिया। फिर वह सोने के कमरे में चला गया और सोने का बहाना करने लगा।

दरवाजे के चरचराने ने देवियों को जगा दिया। उन्होंने उठ कर तुरन्त ही इधर उधर देखा तो अपने इच्छा पूरी करने वाले पत्थर को वहीं रखा पाया जहाँ उन्होंने रखा था। और बिल्कुल बेकार को मीठी नींद सोते पाया। यह देख कर वे खुश हो गयीं कि सब कुछ ठीक ठाक था। उन्होंने दरवाजा बन्द किया और फिर से सोने चली गयीं।

जब वे फिर से गहरी नींद सो गयीं तो बिल्कुल बेकार फिर से उठा उसने फिर से वह पत्थर उठाया दरवाजे पर गया और जब उसने फिर दरवाजा खोलना चाहा तो दरवाजा फिर से चरचराया और बोला — "मेहमान ने इच्छा पूरी करने वाला पत्थर चुरा लिया है।"

बिल्कुल बेकार फिर से लौट पड़ा उसने इच्छा पूरी करने वाला पत्थर फिर से उसकी जगह पर रखा और फिर से अपने सोने के कमरे में जा कर खर्राटे मारने शुरू कर दिये जैसे कि वह सो रहा हो।

अबकी बार देवियाँ बहुत गुस्सा हुईं। वे बहुत ज़ोर से कूदीं और अपना पत्थर देखने के लिये गयीं। उनको पत्थर वहीं का वहीं रखा मिल गया फिर वह बिल्कुल बेकार को देखने गयी तो वह भी उनको सोता हुआ मिला। वे सन्तुष्ट हो गयीं। उन्होंने दरवाजा बन्द किया और फिर सोने चली गयीं।

बिल्कुल बेकार ने यह चाल उस रात कई बार खेली। इस बात से देवियों को बहुत गुस्सा आया। उन्होंने दरवाजा तोड़ा और आग में डाल दिया। दरवाजा जला कर देवियाँ फिर से सोने चली गयीं।

उनके सोने के बाद बिल्कुल बेकार फिर से उठा उसने फिर से वह पत्थर उठाया और उसको जेब में रख कर बाहर चला गया।

अगली सुबह जब देवियाँ उठीं तो उन्होंने देखा कि न तो वहाँ उनका इच्छा पूरी करने वाला पत्थर है और न ही वहाँ उनका मेहमान है। उन्होंने उन दोनों को इधर उधर ढूँढा पर वे उनको कहीं दिखायी नहीं दिये। उनको या तो जमीन खा गयी या फिर आसमान निगल गया। इसलिये उनको कुछ पता ही नहीं चला कि वे दोनों कहाँ थे।

बिल्कुल बेकार अपने रास्ते खुशी खुशी चला जा रहा था। उसे किसी बात की चिन्ता नहीं थी क्योंकि वह इच्छा पूरी करने वाला पत्थर चुराने में कामयाब हो गया था।

उसे तो बस अब इस बात की खुशी थी कि वह अब किस तरह बिना किसी परेशानी के खुशी खुशी रह सकेगा।

वह चलता जा रहा था चलता जा रहा था कि सड़क पर उसको एक आदमी डंडे के साथ चलता हुआ मिला। वह आदमी उससे बोला — "भाई मुझे बहुत भूख लगी है मुझे कुछ खाना दो।"

बिल्कुल बेकार ने अपनी जेब में हाथ डाला और अपना इच्छा पूरी करने वाला पत्थर निकाला। उसने उससे अपनी इच्छा प्रगट की कि उसको खाना चाहिये तो बस वहाँ खाने लायक बहुत सारी चीज़ें आ गयीं।

दोनों ने मिल कर पेट भर खाना खाया। जब उन्होंने अपना खाना खत्म कर लिया तो डंडे वाला आदमी बोला — "आओ मैं अपना डंडा तुम्हारे इस पत्थर से बदल लेता हूँ।"

बिल्कुल बेकार बोला — "तुम्हारे इस डंडे की क्या खासियत है।"

डंडे वाला आदमी बोला — अगर कोई भी आदमी अपने हाथ अपने सामने फैलाता है और बोलता है "डंडे बाहर आ।" तो यह डंडा अपने मालिक के सामने खड़े आदमी को मारने लगेगा।"

बिल्कुल बेकार ने उससे वह डंडा ले लिया और अपना पत्थर उसको दे दिया। उसके बाद वह फिर अपने घर की ओर चल दिया। वह थोड़ी दूर ही गया था कि उसने कहा "डंडे बाहर आ।" और यह कह कर उसने अपना हाथ डंडे के पुराने मालिक की तरफ बढ़ाया।

बस उस डंडे ने अपने पुराने मालिक को मारना शुरू कर दिया और तब तक मारता रहा जब तक उसकी सारी हड्डियाँ मुलायम नहीं हो गयीं। तब बिल्कुल बेकार वहाँ आया उसने अपना पत्थर उससे लिया अपना डंडा लिया और फिर से अपने घर की ओर चल दिया।

वह चलता रहा चलता रहा। चलते चलते उसको एक आदमी मिला जिसके पास एक तलवार थी। वह बोला — "भाई मुझे भूख लगी है कुछ खाना दो।" बिल्कुल बेकार ने अपना इच्छा पूरी करने वाला पत्थर निकाला और उससे खाना माँगा। खाना हाजिर हो गया। तलवार वाले आदमी ने खूब पेट भर कर खाना खाया।

खाने के बाद तलवार वाले आदमी ने बिल्कुल बेकार से कहा — "तुम मुझे अपना यह पत्थर दे दो मैं तुम्हें अपनी तलवार दे दूँगा।"

बिल्कुल बेकार ने पूछा — "तुम्हारी इस तलवार की क्या खासियत है।"

तलवार वाला आदमी बोला — “जिसके पास भी यह तलवार होती है वह आदमी हजारों आदमियों के सिर काट सकता है।”

बिल्कुल बेकार राजी हो गया। उसने उसकी तलवार ले ली और अपना पत्थर उसको दे दिया और फिर से अपने घर की ओर चल दिया।

कुछ देर चलने के बाद ही उसने अपने डंडे को हुकुम दिया “डंडे बाहर आ।” डंडा उसके पास से निकला और जा कर तलवार वाले आदमी को बेरहमी से मारना शुरू कर दिया। और इतना मारा इतना मारा कि उसको मार ही दिया। बिल्कुल बेकार ने उससे अपना पत्थर और तलवार ली और फिर अपने घर की ओर चल दिया।

आगे जाने पर वह एक ऐसे आदमी से मिला जिसके पास फ़ैल्ट[16] का एक टुकड़ा था। उसने भी बिल्कुल बेकार से खाना माँगा। बिल्कुल बेकार ने अपना पत्थर निकाला और उससे खाना माँगा। खाना वहाँ आ गया।

जब फ़ैल्ट वाले आदमी ने पेट भर खाना खा लिया तो वह बोला — “आओ मैं तुमको तुम्हारे पत्थर के बदले में अपना फ़ैल्ट का यह टुकड़ा देता हूँ।”

“तुम्हारी फ़ैल्ट का क्या फायदा है।”

“अगर किसी आदमी का सिर कट जाये तो बस तुमको इस फ़ैल्ट का एक टुकड़ा लेना है और उसकी गरदन पर लगा देना है

---

[16] Felt is kind of thick cloth.

उसका सिर उसकी गरदन पर लग जायेगा और वह आदमी ज़िन्दा हो जायेगा।"

बिल्कुल बेकार ने अपना पत्थर उसको दिया उसकी फ़ैल्ट उससे ली और अपने घर की ओर चल दिया। कुछ देर चलने के बाद ही उसने अपने डंडे को हुकुम दिया कि वह उस फ़ैल्ट वाले आस्मी को मारे। बस उस डंडे ने उसको खूब मारा। बिल्कुल बेकार ने उससे अपना पत्थर वापस लिया और फिर अपने घर की ओर चल दिया।

आखिर वह अपने घर आया। डंडा उसने अपने घर के दरवाजे के पीछे रख दिया और अपनी पत्नी से मिला और बोला — "प्रिये देखो मैं क्या ले कर आया हूँ।" कह कर उसने उसको तलवार फ़ैल्ट और अपना इच्छा पूरी करने वाला पत्थर दिखाया।

पर उसकी पत्नी फिर से गुस्से से देखा और उसको जी भर कर बुरा भला कहना शुरू कर दिया। जब बिल्कुल बेकार से बिल्कुल ही नहीं सहा गया तो वह बोला "डंडे बाहर आ।"

बस उसका यह कहना था कि डंडा दरवाजे के पीछे से उठा और उसकी पत्नी को बेरहमी से मारना शुरू कर दिया।

फिर उसने अपने छोटे छोटे बच्चों को बुलाया और अपने पत्थर से स्वादिष्ट खाना लगाने के लिये कहा। वहाँ बहुत सारा खाना प्रगट हो गया। सब लोगों ने बहुत स्वाद ले ले कर खाना खाया जबकि पत्नी बहुत गुस्से से उन सबको खाना खाते केवल देखती ही रही।

कुछ समय तक तो वह देखती रही पर जब वह और न सह सकी तो वह आ कर अपने पति के घुटनों से लिपट गयी और उससे माफी माँगने लगी। पति ने उसको माफ कर दिया और दोनों ने एक दूसरे के ऊपर प्यार से हाथ फेरा।

कुछ समय बाद इस इच्छा पूरी करने वाले पत्थर ने उनको बहुत अमीर बना दिया। अब उनके घर में सोने की बरतन हो गये थे।

यह सब देख कर एक बार पत्नी ने पति से कहा — "अब आपको राजा को खाने पर बुलाना चाहिये और उनके लिये एक अच्छी दावत का इन्तजाम करना चाहिये।"

उसके पति ने कहा — "क्या तुमको मालूम नहीं है कि यह राजा सबसे बहुत जलता है। जब वह यह सब चीज़ें हमारे पास देखेगा तो वह हमसे ये सब ले लेगा। और हमें जेल में डाल देगा।"

पत्नी उससे बराबर जिद करती रही जब तक वह राजा को खाने पर बुलाने के लिये राजी नहीं हो गया। सो उन्होंने राजा को खाने पर बुलाया और उसके लिये बहुत अच्छी दावत का इन्तजाम किया।

जब दावत खत्म हो गयी तो राजा ने बिल्कुल बेकार से उसका इच्छा पूरी करने वाला पत्थर माँगा। बिल्कुल बेकार ने कहा कि वह यह पत्थर उसको नहीं दे सकता। यह सुन कर राजा बहुत गुस्सा हो गया उसने अपनी सारी सेना को हुकुम दिया कि वह उस आदमी का घर चारों तरफ से घेर ले।

बिल्कुल बेकार ने अपने मन में कहा "यह सब नहीं चलेगा। अगर ये लोग मुझे जबरदस्ती अपने काबू में करना चाहते हैं तो मैं भी अपनी ताकत इनको दिखा दूँगा।"

जब वह यह सब सोच हा था तो उसने अपनी तलवार तो सेना की ओर की और अपना डंडा राजा की ओर किया। बस तलवार ने राजा की सारी सेना को मार दिया और डंडे ने राजा को बेरहमी से मारना शुरू कर दिया।

जब राजा डंडे से काफी पिट लिया और वह डंडे की मार और न सह सका तो वह बोला — "मेहरबानी करके मुझे छोड़ दो और मेरी सेना को ज़िन्दा कर दो। मैं वायदा करता हूँ कि मैं यहाँ से शान्तिपूर्वक चला जाऊँगा।"

बिल्कुल बेकार उठा और फ़ैल्ट का एक टुकड़ा लाया और उसको हर सिपाही की गरदन पर रखा जिससे राजा की सारी सेना ज़िन्दा हो गयी।

राजा ने उससे अपनी दुश्मनी दिखाने की फिर कभी हिम्मत नहीं की। बिल्कुल बेकार की पत्नी भी उसके बाद से अपने पति का कहना मानती रही। इस तरह से वे सब फिर खुशी खुशी रहे।

4 मेंढक की खाल[17]

एक बार की बात है कि एक जगह तीन भाई रहते थे। वे शादी करना चाहते थे तो उन्होंने आपस में कहा — "चलो हम लोग अपना अपना तीर चलाते हैं और जहॉ जिसका तीर जा कर पड़ेगा उसको उसी की बेटी से शादी करनी होगी।"

तीनों को शादी करने का यह जुआ बहुत पसन्द आया सो तीनों ने अपने अपने तीर चलाये। दोनों बड़े भाइयों के तीर कुलीन लोगों के घरों जा कर पड़े पर सबसे छोटे भाई का तीर एक झील में जा कर पड़ा।

सो दोनों बड़े भाइयों की शादी तो उन कुलीन लोगों की बेटियों से हो गयी पर सबसे छोटे भाई को झील के किनारे जाना पड़ा। जैसे ही वह झील के किनारे पहुँचा कि एक मेंढकी झील में से बाहर निकल कर आयी और बाहर आ कर एक पत्थर पर बैठ गयी। उसके मुँह में उसका तीर था।

छोटे भाई ने मेंढकी को उठाया और उसे घर ले आया। इस तरह तीनों भाई अपनी अपनी किस्मत को ले कर घर आये – दोनों बड़े भाई कुलीन परिवार की बेटियों के साथ और सबसे छोटा भाई एक मेंढकी के साथ।

---

[17] Frog's Skin (Tale No 4) – a folktale from Georgia, Europe.
Adapted from the Web Site :
http://www.archive.org/stream/cu31924029936006#page/n19/mode/2up

भाई लोग बाहर काम पर चले जाते और उनकी पत्नियाँ उनके पीछे उनका घर सँभालतीं। उनके लिये खाना बनातीं और घर के दूसरे कामों की देखभाल करतीं। पर मेंढकी एक तरफ को बैठी बैठी टर्र टर्र करती रहती और उसकी आँखें चमकती रहतीं।

इस तरह वे प्रेम से एक साथ मिल कर बहुत दिनों तक रहे। पर दोनों बड़ी बहुऐं उस मेंढकी को देखते देखते थक गयीं। एक दिन जब उन्होंने घर की सफाई की तो उन्होंने कूड़े के साथ साथ उस मेंढकी को भी बाहर फेंक दिया।

अगर सबसे छोटे भाई ने उसे देख लिया होता तो वह उसको हाथ में उठा लेता और अगर नहीं देखता तो वह मेंढकी अपनी पुरानी जगह आग के पास जा कर बैठ जाती और फिर से टर्र टर्र करती रहती।

कुलीन बहुओं को यह बिल्कुल अच्छा नहीं लगा तो उन्होंने अपने अपने पतियों से इसकी शिकायत की — "इस मेंढकी को बाहर निकालो और अपने भाई के लिये कोई असली पत्नी ले कर आओ। यह कोई तरीका नहीं है।"

सो रोज दोनों बड़े भाई अपने छोटे भाई से कहते कि वह कोई असली पत्नी ले कर आये। और वह हमेशा यही जवाब देता — "शायद यह मेंढकी ही मेरी किस्मत है भैया। इससे अच्छी चीज़ मेरी किस्मत में है ही नहीं। मुझे इसी का वफादार रहना चाहिये।"

इस जवाब को सुन कर दोनों बड़ी बहुओं ने कहा कि अगर यह कोई असली पत्नी नहीं लाता तो इन दोनों को घर से कहीं और भेज देना चाहिये। हम इस तरह से एक मेंढकी के साथ नहीं रह सकते। आखिर दोनों बड़े भाई ऐसा करने पर राजी हो गये।

अब छोटा भाई बिल्कुल अकेला रह गया था। उसका खाना बनाने वाला कोई नहीं था। जब वह काम से लौट कर आता तो कोई उसका दरवाजे पर खड़ा इन्तजार करता नहीं होता।

कुछ समय के लिये एक पड़ोसन घर में उसका इन्तजार करती पर फिर उसके पास भी समय नहीं रहा सो वह फिर अकेला पड़ गया। अब वह बहुत दुखी रहने लगा।

एक बार जब वह बड़े दुखी मन से अपने अकेलेपन के बारे में सोच रहा था तब वह काम पर गया। जब उसका काम खत्म हो गया तो वह अपने घर चला आया।

घर जा कर उसने अपना घर देखा तो वह तो उसे देख कर आश्चर्य में पड़ गया। उसके खाने के कमरे की आलमारी भरी हुई थी। मेज पर बहुत सुन्दर मेजपोश बिछा हुआ था जिस पर बहुत सारे स्वादिष्ट खाने लगे हुए थे।

उसने इधर उधर देखा तो एक कोने में मेंढकी को बैठे टर्र टर्र करते पाया। यह देख कर उसने सोचा कि शायद यह सब उसकी भाभियाँ उसके लिये कर गयी होंगी। वह खाना खा कर फिर से अपने काम पर चला गया।

सारा दिन बाहर काम करने के बाद जब वह शाम को घर आता तो वह रोज ही अपने लिये ऐसी सब चीज़ें तैयार पाता।

एक बार उसने सोचा "मैं एक बार देखना चाहता हूँ कि यह कौन भला आदमी है जो मेरे लिये इतना अच्छा कर रहा है और मेरा इतना खयाल रख रहा है। सो उस दिन वह घर पर ही रहा। वह घर की छत पर जा कर बैठ गया और देखता रहा कि घर में क्या होता है।

कुछ देर बाद उसने देखा कि मेंढकी आग जलाने की जगह से उठी और दरवाजे की तरफ कूदी और कमरे में चारों तरफ घूमी। फिर यह देखने के बाद कि वहाँ कोई नहीं है वह वापस चली गयी और उसने अपनी मेंढकी की खाल उतार कर आग के पास रख दी।

अब क्या था उसके अन्दर से तो एक बहुत सुन्दर लड़की निकल आयी – सूरज की तरह से चमकती हुई। इतनी सुन्दर कि वह लड़का उससे ज़्यादा सुन्दर लड़की के बारे में सोच ही नहीं सका।

पलक झपकने में ही उसने सारी सफाई कर दी और खाना बना कर तैयार कर दिया। जब उसका काम खत्म हो गया तो वह फिर से आग के पास गयी अपनी खाल ओढ़ी और फिर से टर्र टर्र करने लगी।

जब उस लड़के ने यह देखा तो वह तो बड़े आश्चर्य में पड़ गया। वह तो बहुत खुश हो गया और भगवान को धन्यवाद दिया कि उसने उसको इतनी खुशी दी। वह छत से नीचे उतर आया घर के अन्दर गया मेंढकी को बड़े प्यार से सहलाया और फिर अपना खाना खाने बैठ गया।

अगले दिन वह फिर से उसी जगह छिप कर बैठ गया जहॉ वह पिछले दिन छिप कर बैठा था। मेंढकी ने फिर इधर देखा उधर देखा और जब उसने देखा कि वहॉ कोई नहीं है तो उसने अपनी खाल उतारी और अपना काम करना शुरू कर दिया।

इस बार वह लड़का उसी समय चुपचाप घर में घुसा और अपनी मेंढकी पत्नी की खाल उठायी और उसको आग में फेंक दी। जब उस लड़की ने यह देखा तो उसने उसको बहुत बुरा भला कहा और फिर रो पड़ी और कहा — "तुम इस खाल को मत जलाओ नहीं तो तुम यकीनन ही बहुत परेशान हो जाओगे।"

पर वह खाल तो उस लड़के के आग में डालते ही जल गयी। लड़की ने दुखी हो कर कहा — "अब तुम्हारी खुशी दुख में बदल जाये तो इसके लिये मुझे जिम्मेदार मत ठहराना।।"

बहुत जल्दी ही सारे गॉव वालें को पता चल गया कि वह लड़का जिसके पास मेंढकी थी उसके पास अब उसकी जगह एक बहुत सुन्दर लड़की आ गयी है जो उसके पास स्वर्ग से आयी है।

उस देश के राजा ने जब यह सुना तो उसने चाहा कि उस लड़की को उससे वह ले ले। उसने उस लड़के को अपने पास बुलाया और कहा — "या तो तुम मेरे लिये एक भंडार भर कर गेंहू का खेत एक ही दिन में खोदो और उसमें बीज बोओ या फिर अपनी पत्नी मुझे दे दो।"

जब राजा ने उससे यह कहा तो उसको उसकी बात पर राजी होना पड़ा। वह दुखी हो कर घर चला गया।

घर जा कर उसने यह सब अपनी पत्नी अपनी पत्नी से कहा। उसने उसको फिर बुरा भला कहा और बोली — "मैंने तुमसे पहले ही कहा था कि अगर तुमने मेरी खाल जला दी तो क्या होने वाला है पर तुमने मेरी बात पर ध्यान ही नहीं दिया।

पर इस बात के लिये मैं तुमको गलत नहीं ठहराऊँगी। तुम दुखी मत हो। तुम सुबह उसी झील के किनारे जाना जहॉ से तुमने मुझे उठाया था और वहॉ जा कर कहना — "ओ माता और पिता, मैं आपसे प्रार्थना करता हूॅ कि मुझे आप अपने सबसे ज़्यादा तेज़ काम करने वाले बैल दे दें।"

तो वे तुमको बैल दे देंगे। तुम उन बैलों को ले कर आ जाना वे बैल तुम्हें एक दिन में ही एक भंडार भर कर गेंहॅू का खेत खोद कर और उसमें बीज बो कर दे देंगे।"

उसके पति ने ऐसा ही किया। वह उसी झील के किनारे गया और वहॉ जा कर पुकारा — "ओ माता और पिता, मैं आपसे

प्रार्थना करता हूँ कि मुझे आप अपने सबसे तेज़ काम करने वाले बैल दे दें।"

अब उस झील में से तो बैलों का एक इतना बड़ा झुंड निकल कर आया कि जैसा कि समुद्र या धरती कहीं पर कभी देखा नहीं गया था। वह लड़का उन बैलों को हॉक कर राजा के खेतों मे ले गया। उन्होंने राजा के खेतों में एक ही दिन में हल चला दिया और उनमें बीज बो दिया।

राजा तो यह देख कर बहुत आश्चर्यचकित हुआ। वह नहीं जानता था कि जिस आदमी की पत्नी वह लेना चाहता था उस आदमी के लिये कोई भी काम नामुमकिन था।

फिर भी उसने उसको दोबारा बुलाया और कहा — "जाओ उस खेत से सारा गेंहू इकट्ठा कर लाओ जो तुमने बोया था। गेंहू का एक दाना भी खेत में नहीं रहना चाहिये और मेरा भंडारघर पूरा भर जाना चाहिये। अगर तुमने ऐसा नहीं किया तो तुम्हारी पत्नी मेरी हो जायेगी।"

लड़के ने सोचा "यह काम तो बिल्कुल नामुमकिन सा लगता है।" पर फिर भी वह अपने घर की तरफ चल दिया। और जब आ कर उसने अपनी पत्नी को सब बताया तो उसकी पत्नी ने उसको फिर डॉटा।

पर फिर बोली — “जाओ तुम उसी झील के किनारे फिर जाओ और वहाँ जा कर उनसे जैकडौ चिड़िया[18] माँगना।”

वह लड़का फिर उसी झील के किनारे गया और बोला — “ओ माता और पिता मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि मुझे अबकी बार आप जैकडौ चिड़िया दीजिये।”

तुरन्त ही झील में से बहुत सारी जैकडौ चिड़ियें आ गयीं। वे तुरन्त ही जोते हुए खेत की तरफ उड़ गयीं और उन्होंने वहाँ से गेहूँ के सब दाने बीन कर राजा के भंडारघर में भर दिये।

राजा आया और चिल्लाया — “इसमें एक दाना कम है। मुझे हर दाने का पता है। इसमें एक दाना कम है।”

उसी समय एक जैकडौ की काँव काँव सुनायी दी और वह अपनी चोंच में गेंहूँ का एक दाना दबाये वहाँ आ गया। असल में वह लंगड़ा था सो उसको आने में कुछ देर हो गयी।

यह देख कर तो राजा बहुत गुस्सा हो गया कि इतना नामुमकिन काम भी इसके लिये मुमकिन हो गया। इसके बाद उसकी समझ में ही नहीं आया कि अब वह उसको क्या काम दे जो वह न कर सके और उसकी पत्नी उसकी हो जाये।

उसने अपने दिमाग पर काफी ज़ोर डाला और फिर यह प्लान सोचा। उसने उस लड़के को बुलाया ओर उससे कहा — “मेरी माँ यहीं इसी गाँव में मरी थी। वह अपने साथ एक अँगूठी ले गयी

[18] Jackdow is a crow-like bird – native of Europe and Northern Africa.

थी। तुम दूसरी दुनियाँ में जा कर उससे वह ॲगूठी ले आओ। अगर ले आते हो तो ठीक है नहीं तो तुम्हारी पत्नी मेरी हो जायेगी।"

लड़के ने अपने मन में सोचा "यह तो बिल्कुल ही नाममुमकिन काम है। भला दूसरी दुनियाँ मे कोई कैसे जा सकता है।"

ऐसा सोचते सोचते वह घर गया और जा कर अपनी पत्नी को बताया तो उसने लड़के को फिर डॉटा और बोली — "अबकी बार तुम झील जाओ तो उनसे एक बकरा मॉगना।"

सो वह लड़का फिर झील के पास गया और बोला — "ओ माता और पिता मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि मुझे आप अबकी बार बकरा दे दें।"

तुरन्त ही झील में से टेढ़े सीगों वाला एक बकरा निकल आया जिसके मुँह से आग की लपटें निकल रही थीं। वह लड़के से बोला — "आओ तुम मेरी पीठ पर बैठ जाओ।"

बह लड़का उसकी पीठ पर बैठ गया। उसके बैठते ही बकरा बिजली की सी तेज़ी से नरक की तरफ चल दिया। वह चला और तीर की तरह धरती में घुस गया।

वे चलते रहे चलते रहे। चलते चलते उनको एक आदमी और एक स्त्री एक बैल की खाल पर बैठे हुए मिले। वह बैल की खाल उन दोनों के बैठने के लिये काफी नहीं थी। वे उस पर से गिरे जा रहे थे।

लड़के ने उनसे पूछा — "इसका क्या मतलब कि एक बैल की खाल भी दो लोगों के बैठने के लिये काफी नहीं है।"

उन्होंने कहा — हमने तुम्हारे जैसे कई लोग यहाँ से जाते देखे हैं पर कोई वापस लौटता नहीं देखा। जब तुम इधर से लौटोगे तब हम तुम्हारे सवाल का जवाब देंगे।"

लड़का फिर आगे की तरफ बढ़ता चला गया। आगे चल कर उसने एक स्त्री और एक आदमी को एक कुल्हाड़ी के हत्थे पर बैठे देखा। इतने छोटे से हत्थे पर वे दो आदमी बैठे थे फिर भी वे गिरने से नहीं डर रहे थे।

लड़के ने उनसे पूछा — "आप लोग एक कुल्हाड़ी के इतने छोटे से हत्थे पर बैठे हैं और फिर भी आप गिरने से डर नहीं रहे।"

उन्होंने कहा — "हमने तुम्हारे जैसे कई लोग यहाँ से जाते देखे हैं पर कोई वापस लौटता नहीं देखा। जब तुम इधर से लौटोगे तब हम तुम्हारे सवाल का जवाब देंगे।"

सो वे फिर आगे चल दिये। आगे चल कर वे एक ऐसी जगह आये जहाँ एक पादरी जानवरों को घास खिला रहा था। इस पादरी की इतनी लम्बी दाढ़ी थी कि वह जमीन पर फैली पड़ी थी। और वे जानवर बजाय घास खाने उसकी दाढ़ी खा रहे थे। वह पादरी भी उनको अपनी दाढ़ी खाने से रोक नहीं पा रहा था।

लड़के ने चिल्ला कर पूछा — "पादरी जी इसका क्या मतलब है कि आपकी दाढ़ी इन जानवरों का घास का मैदान है।"

पादरी जी ने कहा — "मैंने तुम्हारे जैसे कई लोग यहाँ से जाते देखे हैं पर कोई वापस लौटता नहीं देखा। जब तुम इधर से लौटोगे तब मैं तुम्हारे सवाल का जवाब दूँगा।"

सो वे और आगे चले तो उन्होंने वहाँ कुछ नहीं देखा सिवाय एक बहुत गरम गड्ढे के जिसमें से आग की लपटें निकल रही थीं। यह नरक था।

बकरा बोला — "अब आप मेरे ऊपर मजबूती से बैठ जाइये क्योंकि अब हमें इस आग को पार करना है।"

लड़के ने उसको कस कर पकड़ लिया और बकरे ने एक बहुत ज़ोर की कूद लगायी और वे आग के ऊपर से बिना किसी परेशानी के कूद गये।

उसके बाद उन्होंने एक बहुत ही दुखी स्त्री को एक सोने के सिंहासन पर बैठे देखा। उसने कहा — "क्या बात है मेरे बच्चे। तुम्हें क्या दुख है? तुम यहाँ क्यों आये हो?"

लड़के ने उसको सब कुछ बता दिया तो वह बोली — "मुझे अपने इस नीच बच्चे को सजा जरूर देनी चाहिये। मैं तुमको उसके लिये एक बक्सा दूँगी। वह तुम यहाँ से उसके लिये जरूर ले जाना।"

कह कर उसने लड़के को एक बक्सा दिया और कहा — "तुम चाहे जो कुछ भी करो पर तुम इस बक्से को अपने आप मत

खोलना। तुम इसको अपने राजा को देना और इसको उसे दे कर उसके पास से तुरन्त ही दूर हट जाना।"

लड़के ने उस स्त्री से बह बक्सा लिया और वापस लौट पड़ा। वह उस जगह आया जहाँ पादरी जानवरों को घास खिला रहा था। उसको देखते ही पादरी बोला — "मैंने तुमसे वायदा किया था कि जब तुम लौटोगे मैं तुम्हें तब तुम्हारे सवाल का जवाब दूँगा। सो अब मैं तुम्हारे सवाल का जवाब देता हूँ।

अपनी सारी ज़िन्दगी में मैं केवल अपने आपको ही प्यार करता रहा और मैंने किसी की कोई परवाह नहीं की। मैंने अपने जानवरों को बजाय अपने मैदानों के दूसरे के मैदानों में चराया। इससे मेरे पड़ोसियों के जानवर भूख से मर गये। अब मैं उसी की सजा भोग रहा हूँ।"

चलते चलते वे उस जगह आये जहाँ एक आदमी और एक स्त्री एक कुल्हाड़ी के हत्थे पर बैठे हुए थे। वे भी बोले — "हमने तुमको तुम्हारे लौटने पर जवाब देने का वायदा किया था। सो अब तुम हमारी बात सुनो। जब हम धरती पर थे तब हम एक दूसरे को बहुत प्यार करते थे और वही बात यहाँ भी है। इसी लिये हमें गिरने का कोई डर नहीं है।"

वह लड़का यह जवाब पा कर फिर अपने रास्ते चल दिया। चलते चलते फिर वह वहाँ आया जहाँ एक स्त्री और एक आदमी एक बैल की खाल पर बैठे हुए थे।

वे भी बोले — “हमने तुमको तुम्हारे लौटने पर जवाब देने का वायदा किया था सो सुनो। हम एक दूसरे को ज़िन्दगी भर बुरा भला कहते रहे और हम यहाँ भी एक दूसरे को बुरा भला कह रहे हैं इसलिये इस बैल की खाल के इतने बड़े होते हुए भी हम गिरे गिरे से लगते हैं।”

इसके बाद लड़का धरती पर आ गया। वह बकरे पर से उतरा और राजा के पास गया। उसने उसको बक्सा दिया और तुरन्त ही उससे दूर चला गया। राजा ने वह बक्सा खोला तो उसमें से तो एक बहुत बड़ी सी आग निकली जो उसे खा गयी।

इस तरह से हमारे सबसे छोटे भाई ने राजा को भी जीत लिया और फिर किसी ने उसकी पत्नी को उससे नहीं माँगा। वे दोनों प्यार से और खुशी खुशी बहुत दिनों तक रहे।

5 किस्मत[19]

एक बार की बात है कि एक बहुत ही ताकतवर राजा था जिसके केवल एक ही बेटा था। जब यह लड़का बड़ा हो गया तो सारी लड़कियाँ इससे प्यार करने लगीं।

राजा की यह बड़ी इच्छा थी कि उसका बेटा जल्दी ही अपनी ज़िन्दगी में जम जाये। सो उसने उसके लिये एक राजकुमारी ढूँढ ली और उससे कहा कि वह उससे शादी कर ले।

पर बेटा नहीं माना और बोला — "यह मेरी किस्मत में नहीं है कि मैं इस लड़की से शादी करूँ। मैं इससे शादी नहीं करूँगा।"

कुछ समय बाद वह नौजवान अपने पिता के पास गया और बोला — "मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप मुझे बाहर जाने दें और मुझे अपनी किस्मत आजमाने दें। इसके लिये आप मुझे तीन थैले भर कर पैसे दे दें।"

राजा ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली और उसे बाहर जाने की इजाज़त दे दी। राजकुमार ने भी अपना सामान तैयार किया और अपने सफर पर जाने के लिये तैयार हो गया।

---

[19] Fate (Tale No 5) – a folktale from Georgia, Europe.
Adapted from the Web Site :
http://www.archive.org/stream/cu31924029936006#page/n19/mode/2up

वह चलता रहा कि चलते चलते वह एक अजनबी से मिला। यह अजनबी एक देवदूत[20] था जो एक आदमी के रूप में था।

उसने राजकुमार से पूछा — "तुम कहाँ जा रहे हो तुम्हें किसकी तलाश है।"

राजकुमार ने उसे सब बताया और कहा कि वह वह सब जानना चाहता था जो उसकी किस्मत की किताब में उसके लिये लिखा था।

इस पर उस अजनबी ने उसको एक बहुत सुन्दर महल दिखाया और कहा तुम वहाँ चले जाओ वहाँ जा कर तुम अपनी किस्मत के बारे में जान पाओगे। राजकुमार ने उसको धन्यवाद दिया और उस महल की तरफ चल पड़ा।

जब वह उस महल के कम्पाउन्ड में घुसा तो उसने चारों तरफ देखा। उसने देखा कि वहाँ तो चारों तरफ कागज के टुकड़े ही टुकड़े बिखरे पड़े हैं।

उसने उनको देखना शुरू किया कि शायद कहीं उसको अपनी किस्मत का कोई कागज मिल जाये पर वह बहुत देर तक वहाँ बेकार ही उसे इधर उधर ढूँढता रहा। उसको वहाँ अपनी किस्मत का कोई कागज मिला ही नहीं।

तभी महल में से एक दूसरा आदमी बाहर निकल कर आया और राजकुमार से पूछा — "भाई तुम क्या चाहते हो। तुम क्या ढूँढ रहे हो।"

---

[20] Translated for the word "Angel"

राजकुमार बोला — "मैं इन कागजों में एक कागज ढूँढ रहा हूँ जिसमें मेरी किस्मत लिखी हुई हो।"

वह अजनबी बोला — "तुम उसे वहाँ क्यों ढूँढ रहे हो। वहाँ तो गरीब लोगों की किस्मत के कागज पड़े हुए हैं। राजाओं की किस्मत के कागज तो अन्दर हैं। आओ तुम मेरे साथ आओ मैं तुम्हें तुम्हारी किस्मत दिखाता हूँ।"

कह कर वह आदमी राजकुमार को महल के अन्दर ले गया। राजकुमार महल के अन्दर घुसा और उस आदमी ने राजकुमार की किस्मत का कागज ढूँढ कर उसको बुलाया।

उसमें लिखा था "फलाँ फलाँ राजकुमार एक जुलाहे की बेटी से शादी करेगा जो नौ साल से बीमार पड़ी है।"

जब उसने यह राजकुमार के सामने यह ज़ोर से पढ़ा तो राजकुमार तो यह सुन कर डर के मारे काँप गया। उसकी तो सिट्टी पिट्टी गुम हो गयी। अब वह क्या करे।

राजकुमार ने मन ही मन सोचा कि वह अपनी किस्मत को बदलेगा। वह एक ऐसी लड़की से शादी कैसे कर सकता है जो एक जुलाहे की लड़की हो और नौ साल से बीमार पड़ी हो।

उसने अपनी किस्मत का वह कागज लिया और वहाँ से जुलाहे की बेटी को ढूँढने चल दिया।

वह चलता गया चलता गया और एक घने जंगल में जा पहुँचा। वहाँ पहुँचते पहुँचते उसे शाम हो गयी। वह वहाँ रात को सोने की इच्छा से इधर उधर घूम कर कोई घर तलाश करता रहा।

आखिर उसे एक चमकती हुई रोशनी दिखायी दे ही गयी। वह उधर ही की तरफ चल दिया। वहाँ जा कर उसे एक मकान दिखायी दिया। उसने मकान मालिक से रात को ठहरने की जगह माँगी।

मकान मालिक ने कहा — "आप तो कोई बड़े आदमी लगते हैं। हमारे पास आपके लायक तो कुछ भी नहीं है पर हम आपको हमारे पास जो कुछ सबसे अच्छा है वह दे सकते हैं क्योंकि मेहमान तो भगवान की दी हुई भेंट होता है।"

सो राजकुमार वहाँ रात को ठहर गया। उसके मेजबान को किसी तरह की शिकायत नहीं थी।

जब उन्होंने रात का खाना खा लिया तो राजकुमार को लगा कि कोई दूसरा आदमी एक दूसरे कमरे में खाना खा रहा था। उसने अपने मेजबान से कहा — "मुझे उम्मीद है कि आप बुरा नहीं मानेंगे अगर मैं आपसे उत्सुकतावश यह पूछूँ कि दूसरे कमरे में कौन है और इसका क्या मतलब है।"

तब उसके मेजबान ने उसको यह कहानी सुनायी —

“मैं एक जुलाहा हूँ और मेरी रोज की रोटी बड़ी मुश्किल से चलती है। भगवान ने मुझे कोई ऐसा आदमी भी नहीं दिया जो मेरे काम में मेरी सहायता कर सके।

मेरे केवल एक बेटी है जो नौ साल से बिस्तर से नहीं उठी है। मैं आपसे यह यकीन के साथ कह सकता हूँ कि वह मेरी कोई सहायता नहीं करती है।”

जब राजकुमार ने यह सुना तो उसने दुख से दाँतों तले अपनी जीभ काट ली और बहुत उदास हो गया। वह उस रात सो नहीं पाया। वह सारी रात बस यही सोचता रहा कि वह अपनी किस्मत से कैसे बच सकता है।

बीच रात में जब हर एक खर्राटे मार कर गहरी नींद सो रहा था तो राजकुमार चुपके से उठा अपने सोने के कमरे से बाहर निकला और चुपचाप जुलाहे की बेटी के सोने के कमरे में चला गया।

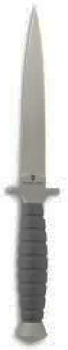

जब उसने उसको देखा तो वह अन्दर से बहुत ही परेशान हो गया। उसने अपना खंजर निकाला और उसके शरीर में घुसेड़ दिया। उसके बाद बिना कोई आवाज किये वह वहाँ से बाहर निकल आया। उसने अपना पैसा वहीं छोड़ दिया और रात में ही वहाँ से भाग लिया।

वहाँ से वह अपने घर अपने पिता के पास आया और उनसे अपनी बुरी किस्मत की शिकायत की। उसका पिता इस बात पर

बहुत दुखी हुआ पर उसने अपना दुख उससे छिपा लिया और अपने बेटे को तसल्ली दी।

कुछ समय बीत गया। एक दिन राजकुमार शिकार के लिये जंगल गया तो उसने वहाँ एक अकेली जगह में एक बहुत सुन्दर महल देखा और उस महल में सूरज जैसी चमकीली एक लड़की देखी।

राजकुमार तो उस लड़की की सुन्दरता को देखता का देखता ही रहा गया। वह तो उसको हमेशा के लिये देखता रह सकता था। वह उसकी तरफ बहुत देर तक देखता रहा पर वह उसको दूर से देखते सन्तुष्ट नहीं हो रहा था।

सो उसने अपना घोड़ा उधर की तरफ दौड़ा दिया। जब वह उस महल के पास आया तो वह उसकी सुन्दरता से और ज़्यादा प्रभावित हो गया। वह अपने घोड़े से उतरा और उससे पूछा कि क्या वह उससे शादी करेगी।

जब उसने खुशी से यह कह दिया कि हॉ वह उससे शादी करने के लिये तैयार है तो वह बहुत खुश हुआ और घर चला गया।

रास्ते में वह यह सोचता हुआ बहुत खुशी खुशी जा रहा था कि उसने अपनी किस्मत बदल ली थी। बजाय इसके कि वह जुलाहे की एक नौ साल से बीमार लड़की से शादी करता उसको तो अब कितनी सुन्दर पत्नी मिल रही थी।

घर जा कर उसने अपने पिता को बताया कि उस दिन जंगल में क्या हुआ था और शादी की तैयारियाँ करने के लिये कहा। राजा को भी अपने बेटे को खुश देख कर बहुत खुशी हुई और उसने एक शानदार शादी के लिये तैयारियाँ शुरू कर दीं।

बड़ी धूमधाम से दोनों की शादी हो गयी। शादी के कुछ दिन बाद राजकुमार ने अपनी पत्नी के दिल पर हाथ रखा तो वहाँ उसको कुछ सख्त सख्त सा लगा।

उसने पूछा — "यह क्या है।"

उसकी पत्नी ने जवाब दिया — "मैं एक गरीब जुलाहे की बेटी हूँ। नौ साल तक मैं बिस्तर में पड़ी रही – लाचार और अपंग, खीरे की तरह से पीली।

एक बार एक नौजवान मेरे पिता के पास रात को शरण माँगने आया। उसने खंजर मेरे शरीर में भौंक दिया और जल्दी से भाग गया और अपने रास्ते चला गया।

मैं बहुत बीमार थी पर मेरी माँ ने मेरी बगल में प्लास्टर लगाया और मैं बिल्कुल ठीक हो गयी। हमारा मेहमान तीन थैले पैसे छोड़ गया था। उससे हमने एक महल खरीद लिया।

उसके बाद मेरे पिता ने जुलाहे का काम छोड़ दिया। और हम लोग बिना किसी चिन्ता के रहने लगे।"

जब राजकुमार ने यह सुना तो वह बोला — "हे भगवान तेरे हुकुम बेकार नहीं हो सकते।"

तब उसने अपनी प्रिय पत्नी को वह सब कुछ बता दिया जो उसके साथ घटा था। पत्नी यह सुन कर खूब हॅसी।

6 सॉप और किसान[21]

एक बार की बात है कि एक बहुत ही खुश खुश राजा था। उसके राज्य में छोटे बड़े स्त्री पुरुष नौकर मालिक बड़े लोग छोटे लोग सब खूब खुश रहते थे।

एक बार इस राजा को सपना आया कि उसकी छत से एक लोमड़ा अपनी पूँछ से लटका हुआ है। राजा की ऑख खुल गयी पर उसको यह समझ में नहीं आया कि उसके इस सपने का मतलब क्या था।

अगले दिन उसने अपने वजीरों को बुलाया और उनको अपना सपना बता कर उनसे उसका मतलब पूछा पर वे भी उसका कोई मतलब नहीं निकाल सके। तब राजा ने कहा कि मेरे राज्य के सारे लोगों को बुलाओ शायद उनमें से कोई इसका मतलब बता सके।

सो तीसरे दिन राज्य के सारे लोग राजा के महल में जमा हुए। उन सब लोगों में एक गरीब किसान भी था।

जब यह गरीब किसान राजा के महल आ रहा था तो एक जगह उसको एक पतले से रास्ते से गुजरना पड़ा। उस रास्ते के दोनों ओर पहाड़ खड़े थे।

---

[21] The Serpent and the Peasant (Tale No 7) – a folktale from Georgia, Europe.
Adapted from the Web Site :
http://www.archive.org/stream/cu31924029936006#page/n19/mode/2up

जब वह वहाँ तक आया तो रास्ते में उसको एक साँप पड़ा हुआ दिखायी दिया। उसने अपनी गरदन उठा रखी थी और उसकी जीभ बाहर निकली हुई थी।

जब किसान उस साँप के पास पहुँचा तो वह साँप किसान से बोला — "गुड डे किसान भाई कहाँ चल दिये।"

किसान ने उसको बताया कि वह कहाँ जा रहा था। उसने उसको राजा की परेशानी भी बतायी। साँप बोला — "तुम उससे डरो नहीं। मुझसे वायदा करो कि जो कुछ भी राजा तुमको देगा तुम उसको मुझसे बाँटोगे और मैं तुम्हें बताऊँगा कि उस सपने का क्या मतलब है।"

किसान को यह सुन कर बड़ी खुशी हुई। उसने साँप से वायदा किया कि राजा उसे जो कुछ भी देगा वह उसे उसके साथ बाँटेगा। उसने कहा —"अगर तुम इस मामले में मेरी सहायता करोगे तो राजा जो कुछ भी मुझे देगा वह सब मैं तुम्हारे लिये ले कर आऊँगा और फिर हम उसे बराबर बराबर बाँट लेंगे।"

साँप बोला — "मैं उसको आधा आधा बाँटूँगा – आधा तुम्हारा और आधा मेरा। जब तुम राजा से मिलो तो उससे कहना "लोमड़े के इस तरह से सपने में आने का मतलब यह है कि तुम्हारे राज्य में चालाकी और बदमाशी है और धोखाधड़ी फैली हुई है।"

यह सुन कर किसान चला गया। किसान राजा के पास पहुँचा और उससे जा कर वही कह दिया जो साँप ने उससे कहने के लिये

कहा था। राजा उससे बहुत खुश हुआ और उसने उसको इनाम में बहुत सारी चीज़ें दीं।

किसान को लालच आ गया सो लौटते समय वह उस रास्ते से नहीं लौटा जिस रास्ते से वह गया था बल्कि उसने दूसरा रास्ता लिया ताकि राजा का दिया हुआ सामान उसे सॉप से न बॉटना पड़े।

कुछ समय गुजर गया। कुछ समय बाद राजा ने एक और सपना देखा। इस सपने में उसने देखा कि एक नंगी तलवार छत से लटकी हुई है। राजा की ऑख फिर से खुल गयी पर वह इस सपने का भी कोई मतलब न निकाल सका।उसको किसान की याद आयी सो उसने किसान को बुलवा भेजा।

यह सुन कर किसान बहुत परेशान हुआ क्योंकि वह तो उस सपने के बारे में कुछ जानता ही नहीं था। वह अपने पुराने रास्ते से राजा के महल चल दिया।

वह उस जगह आया जहॉ उसको पहले सॉप मिला था पर अब तो वहॉ कोई सॉप नहीं था। वह ज़ोर से चिल्लाया — "ओ सॉप मेहरबानी करके एक पल के लिये यहॉ आओ मुझे तुम्हारी बहुत सख्त जरूरत है।" जब तक सॉप वहॉ आ नहीं गया तब तक वह उसको चिल्ला चिल्ला कर बुलाता ही रहा।

जब सॉप वहॉ आ गया तब सॉप ने उससे पूछा — "अब तुम्हें क्या चाहिये। अब तुम्हें क्या परेशानी है।"

किसान बोला — "मुझे यह परेशानी है और मुझे तुम्हारी सहायता चाहिये।"

साँप ने कहा — "जाओ और जा कर राजा से कहना "नंगी तलवार का मतलब होता है लड़ाई। उसके दुश्मन उसके राज्य की तरफ बढ़ रहे हैं। उसको लड़ाई और हमले के लिये तैयार रहना चाहिये।"

किसान ने साँप को बहुत बहुत धन्यवाद दिया और वहाँ से चला गया। वह राजा के पास आया और राजा से वही कह दिया जो साँप ने उससे कहने के लिये कहा था।

राजा उससे यह सुन कर बहुत खुश हुआ। उसने किसान को फिर से बहुत सारी चीज़ें इनाम में दीं और लड़ाई और हमले की तैयारी करनी शुरू कर दी।

किसान अबकी बार उसी रास्ते से लौटा जहाँ साँप उसका इन्तजार कर रहा था। जब किसान साँप के पास आया तो साँप बोला — "लाओ मेरा आधा हिस्सा जो तुमने मुझको देने का वायदा किया था।"

किसान बोला — "आधा हिस्सा कैसा आधा हिस्सा? नहीं नहीं कभी नहीं। मैं तुमको एक काला पत्थर और एक जलता हुआ अंगारा दूँगा।" कह कर किसान ने अपनी तलवार निकाल ली और साँप के पीछे भागा पर साँप तो जल्दी से एक बिल में चला गया

था। पर फिर भी किसान उसकी पूँछ काटने में कामयाब हो ही गया।

फिर कुछ समय बीत गया। कुछ समय बाद राजा को फिर एक सपना आया। उसके इस सपने में एक कटी हुई भेड़ छत से लटक रही थी। राजा की ऑख फिर से खुल गयी और वह इस सपने को कोई मतलब नहीं निकाल सका तो उसने फिर से उसी किसान को बुलवा भेजा।

अबकी बार किसान बहुत डरा हुआ था। उसने सोचा "अबकी बार मैं राजा के पास कैसे जाऊँ।" पहले तो सॉप ने उसको बता दिया था कि उसको राजा से क्या कहना था पर अब वह उसकी सहायता कैसे ले सकता था। क्योंकि उसकी अच्छाई के बदले में तो उसने उसकी पूँछ ही काट डाली थी। अब वह क्या करे।

फिर भी वह उसी रास्ते से गया जिस पर वह सॉप से मिला था। जब वह उस जगह पर पहुँचा जहॉ वह सॉप से मिला था तो वह फिर चिल्लाया – "ओ सॉप एक पल के लिये यहॉ आओ। मैं तुमसे कुछ पूछना चाहता हूँ।"

सॉप बाहर आया तो किसान ने उससे अपनी परेशानी कही। सॉप ने कहा अगर तुम मुझे उसका आधा दो जो राजा तुम्हें देगा तो मैं तुमको बता सकता हूँ।

अबकी बार किसान ने वायदा भी किया और कसम भी खायी कि वह राजा की दी हुई चीज़ों में से आधी चीज़ें उसको जरूर दे देगा।

तब सॉप ने कहा — "यह एक ऐसा इशारा है जिससे यह पता चलता है कि राजा के राज्य में हर जगह शान्ति ही शान्ति होगी। और लोग भेड़ की तरह से बिल्कुल शान्त रहेंगे।"

किसान ने उसको धन्यवाद दिया और राजा के पास चल दिया। जब वह राजा के पास पहुँचा तो उसने राजा को वही बता दिया जो सॉप ने उसको बताया था।

राजा उससे बहुत खुश हुआ और इस बार उसने उसको और बहुत सारी चीज़ें इनाम में दीं। राजा का दिया हुआ सब सामान ले कर वह उसी रास्ते से लौटा जिस पर सॉप उसका इन्तजार कर रहा था।

वह सॉप के पास आया और उसने राजा के दिये हुए सामान को आधा आधा बॉटा और सॉप से बोला — "सॉप भाई तुमने मेरे साथ बहुत धीरज रखा। अब मैं तुम्हें उस सब में से भी हिस्सा दूँगा जो राजा ने मुझे पहले दिया था।"

फिर उसने अपने किये हुए अपराधों की उससे माफी मॉगी। सॉप बोला — "किसान भाई तुम न तो दुखी हो और न परेशान ही हो क्येंकि इसमें तुम्हारी कोई गलती नहीं थी।

पहली बार राजा के देश में जब सब लोग धोखा देने वाले और दूसरों को परेशान करने वाले हो गये थे तो तुम भी धोखा देने वाले और परेशान करने वाले हो गये थे। सो अपने वायदे के बावजूद तुम दूसरे रास्ते से अपने घर चले गये।

दूसरी बार जब सब जगह लड़ाई ही लड़ाई फैली हुई थी झगड़े हो रहे थे लोग एक दूसरे को मार रहे थे तब तुम भी मुझसे लड़े और तुमने अपनी तलवार से मेरी पूँछ काट डाली।

तीसरी बार अब जब सब जगह शान्ति और प्यार फैला पड़ा है तो तुमने भी राजा का दिया हुआ इनाम मुझसे बॉट लिया और यह इनाम केवल इसी समय का ही नहीं बॉटा बल्कि और पिछला इनाम भी बॉट लिया।

जाओ भाई जाओ और सुख शान्ति से रहो। भगवान तुमको हमेशा सुखी रखे। मुझे तुम्हारी कोई चीज़ नहीं चहिये।"

कह कर सॉप अपने बिल में चला गया।

7 गुलाम्बरा और सुलाम्बरा[22]

एक बार की बात है कि या तो था और या फिर नहीं था एक अन्धा राजा राज्य करता था। राज्य के सारे डाक्टरों ने अपनी पूरी कोशिश कर ली थी पर वे राजा की ऑखों की रोशनी नहीं ला सके थे।

आखिर एक डाक्टर बोला — "फलॉ फलॉ सागर में एक खून के रंग जैसी लाल मछली है। अगर उसको पकड़ लिया जाये और उसको मार कर उसका खून आपकी ऑखों पर छिड़का जाये तो वह शायद आपका कुछ भला कर सके।

हो सकता है कि वह आपकी ऑखों की रोशनी वापस ला सके। अगर उससे ऐसा नहीं होता तो फिर और कोई इलाज नजर नहीं आता।"

यह सुन कर राजा ने अपने राज्य के सारे मछियारों को बुलाया और उनको हुकुम दिया कि वे वहॉ भी जायें जहॉ उनको जाना है और वहॉ भी जायें जहॉ उनको नहीं जाना है और ऐसी मछली ढूॅढें और उसे पकड़ कर यहॉ लायें। मैं उनको बहुत सारा इनाम दूॅगा।

यह सुन कर सब मछियारे वैसी मछली ढूॅढने चले गये।

कुछ समय गुजर गया। एक बूढ़े मछियारे ने वैसी ही लाल मछली पकड़ी और उसको राजा के पास ले कर आया। राजा उस

[22] Gulambara and Sulambara (Tale No 8) – a folktale from Georgia, Europe.
Adapted from the Web Site :
http://www.archive.org/stream/cu31924029936006#page/n19/mode/2up

समय सो रहा था। कोई उसको जगाने की हिम्मत नहीं कर सका। सो वह मछली पानी से भरे एक बरतन में रख दी गयी।

उसी समय राजा का बेटा अपनी पढ़ाई से वापस लौटा तो उसने पानी से भरे बरतन में एक लाल मछली तैरती देखी। उसको वह बहुत अच्छी लगी।

उसने उसको अपने हाथ में उठा लिया और प्यार से उसको सहलाया और अपने नौकरों से पूछा — "तुम्हें पानी के बरतन में रखी हुई इस सुन्दर सी मछली से क्या चाहिये।"

उन्होंने जवाब दिया — "यह मछली आपके पिता के लिये बहुत अच्छी है। इसको मारा जायेगा और इसका खून आपके पिता की ऑखों पर छिड़का जायेगा। और इससे उनकी ऑखों की रोशनी वापस आ जायेगी।"

राजकुमार ने पूछा — "पर इसको मारना क्या पाप नहीं है।" और यह कह कर राजकुमार ने वह मछली पानी में से निकाली और मैदान में बहती एक नदी की तरफ ले गया और उसमें डाल दी। इस तरह से उसने उसको आजाद कर दिया।

कुछ देर बाद राजा जागा तो उसके वजीर ने कहा — "योर मैजेस्टी, एक बूढ़ा मछियारा आपको लिये खून जैसी लाल मछली ले कर आया था पर आपके बेटे ने जो अभी अभी पढ़ कर आया था उसको वहॉ से आजाद कर दिया। उन्होंने उसको नदी में फेंक दिया।"

राजा यह सुन कर बहुत गुस्सा हुआ और उसने अपने बेटे को उसके घर से बुला भेजा और कहा — "तू जा। मैं अपने आप ठीक हो जाऊँगा। तू तो राज्य में याद भी नहीं किया जायेगा। मैं अपनी आँखों से तुझे देख भी नहीं सकूँगा। मुझे तो अब तेरी यह बुरी आवाज भी नहीं सुननी। तू जा।"

राजकुमार यह सब सुन कर बहुत दुखी हुआ। वह उठा और उठ कर वहाँ से चला गया। वह चलता गया चलता गया। उसको यही नहीं पता था कि वह कहाँ जा रहा है।

रास्ते में एक नदी पड़ी। वह बहुत थक गया था सो वह उस नदी के किनारे सुस्ताने के लिये बैठ गया। लो कुछ देर में उसी की उम्र का एक लड़का नदी में से बाहर आया।

वह राजकुमार के पास आया उसने उसको नमस्ते की और पूछा — "तुम कहाँ से आ रहे हो और तुम परेशान क्यों हो।"

राजकुमार ने उसको अपनी सारी कहानी बता दी। उसके नये साथी ने कहा — "मैं भी अपने घर से बहुत परेशान हूँ सो चलो हम दोनों भाई बन जाते हैं और दोनों एक साथ रहते हैं।" राजकुमार राजी हो गया और वे दोनों एक तरफ चल दिये।

वे लोग कुछ दूर ही चले थे कि एक शहर आ गया। वे वहाँ रहने लगे। अगले दिन राजकुमार के नये भाई ने राजकुमार से कहा — "तुम घर पर ही रहो। घर के बाहर मत जाना कहीं ऐसा न हो कि वे तुम्हें खा जायें क्योंकि यहाँ का यही रिवाज है।"

राजकुमार ने उससे वायदा किया कि वह घर से बाहर बहीं निकलेगा। और वह सारे दिन घर में ही बैठा रहा। दूसरा लड़का सारे दिन शहर में रहा। शाम को वह घर लौटा तो उसके हाथ में एक चादर भर कर खाने का सामान था।

इस तरह से रहते रहते कुछ दिन बीत गये। राजकुमार सारे दिन घर में रहता और उसका मुँहबोला भाई बाहर से खाने पीने का सामान लाता।

आखिर राजकुमार ने एक दिन सोचा "यह तो मेरे लिये बड़े शरम की बात है कि मेरा भाई तो रोज बाहर खाना पीना लेने जाता है और मैं कुछ नहीं करता। मैं कुछ क्यों नहीं करता। मैं इतना आलसी क्यों हूँ। मैं भी बाहर जाऊँगा और कुछ करूँगा।"

और फिर ऐसा ही हुआ। एक दिन राजकुमार शहर में चला गया। वह इधर से उधर घूमता रहा। घूमते घूमते एक जगह उसने देखा कि उसका भाई जमीन पर पालथी मारे बैठा था।

उसके पैरों के पास एक रूमाल बिछा हुआ था। उसके हाथों में एक तार वाला बाजा था जो वह बजा रहा था और उसके साथ साथ अपनी मीठी आवाज में कुछ गा भी रहा था। जो कोई उधर से गुजरता वह उसके रूमाल में कुछ पैसे डालता जाता।

राजकुमार सुनता रहा सुनता रहा फिर बोला — "नहीं यह नहीं होना चाहिये। इस बात का मुझसे कोई मतलब नहीं है।" कह कर वह वहाँ से पलटा और चल दिया।

पास में ही उसको एक मीनार दिखायी दी। उसके बाहर की तरफ एक दीवार थी और उसकी चोटी पर आदमियों के सिर कतारों में लगे हुए थे। उनमें से कुछ चेहरों पर झुर्रियाँ पड़ी हुई थीं और कुछ पुराने थे जिनमें से सड़ने की बू आ रही थी और कुछ वहाँ अभी टाँगे गये थे।

वह उनको देखता रहा देखता रहा। जब उसकी कुछ समझ में नहीं आया तो उसने एक आदमी से पूछा — "यह किसकी मीनार है। और ये आदमियों के सिर इस तरह से कतार में क्यों लटके हुए हैं।"

आदमी ने जवाब दिया — "इस मीनार में एक लड़की रहती है। वह इतनी सुन्दर है जैसे सूरज। किसी भी राजा का बेटा उसका हाथ माँग सकता है।

पर वह उससे एक सवाल पूछती है और अगर वह उसका जवाब नहीं दे पाता तो वह उसका सिर कटवा देती है। और अगर वह उसके सवाल का जवाब दे दे तो वह उससे शादी कर सकता है। अभी तक कोई उसके सवाल का जवाब नहीं दे पाया है सो ये सब उन्हीं आदमियों के सिर हैं।"

राजकुमार ने बहुत सोचा बहुत सोचा और फिर यह तय किया "मैं उसके पास जरूर जाऊँगा और मैं उस लड़की का हाथ शादी के लिये माँगूँगा। इससे मैं यह जान जाऊँगा कि मेरी किस्मत में क्या है। हालाँकि जो होना है वह तो हो कर ही रहेगा। पर वह मुझसे

क्या पूछ सकती है यह तो मैं नहीं जानता।" सो वह उठा और उधर ही चल दिया।

वह मीनार में गया उस सूरज जैसी राजकुमारी से मिला और उससे उसका हाथ माँगा।

वह बोली — "यह तो ठीक है कि तुम मुझसे शादी करना चाहते हो पर पहले मुझे तुमसे एक सवाल पूछना है। अगर तुम मेरे सवाल का जवाब दे दोगे तो मैं तुम्हारी हूँ और अगर नहीं दे पाये तो मै तुम्हारा सिर कटवा दूँगी।"

राजकुमार बोला — "ऐसा ही सही।"

राजकुमारी बोली — "अच्छा तो यह बताओ कि गुलाम्बरा और सुलाम्बरा कौन हैं।"

राजा के बेटे ने अपने मन में सोचा "यह तो में जानता हूँ कि गुलाम्बरा और सुलाम्बरा फूलों के नाम हैं पर मैंने अपनी ज़िन्दगी में यह कभी नहीं सुना कि ये नाम किसी आदमी के भी हैं। अब मैं क्या बताऊँ कि ये कौन हैं।"

उसने राजकुमारी से तीन दिनों की मोहलत माँगी और घर चला गया। घर जा कर उसने अपने भाई को बताया कि उस दिन क्या हुआ था।

फिर वह बोला — "अगर अब तुम मेरी सहायता नहीं कर सकते तो तीन दिन बाद मेरा यह सिर कट जायेगा।"

उसके भाई ने उसको डॉटा — “क्या मैंने तुमसे यह नहीं कहा था कि तुम घर में अन्दर ही रहो। यह बहुत ही बुरा शहर है। और तुम माने नहीं।”

लेकिन फिर उसने उसको तसल्ली देते हुए कहा — “ठीक है जाओ एक पैनी का खुशबूदार गोंद और एक मोमबत्ती खरीद लाओ। मेरी एक दादी हैं। मै तुमको उनके पास ले जाऊँगा और इस मामले में वह तुम्हारी सहायता करेंगी।

पर जब मेरी दादी हमको देख रहीं हो तो उस समय तुम वह गोंद और मोमबत्ती उनको दे देना नहीं तो वह तुमको खा जायेंगी।”

सो राजकुमार ने एक पैनी का खुशबूदार गोंद और एक मोमबत्ती खरीदी और दोनों उस लड़के की दादी के पास चल दिये। दादी दरवाजे पर ही खड़ी हुई थी। राजकुमार ने तुरन्त ही वह गोंद और मोमबत्ती दादी को दे दी।

राजकुमार के भाई की दादी ने पूछा — “यह क्या है और तुम्हारे साथ क्या मामला है।”

राजकुमार का भाई आगे बढ़ा और उसने उसको सब कुछ विस्तार से बताया और कहा — “यह मेरा बहुत अच्छा भाई है और आपको इसकी सहायता जरूर करनी चाहिये।”

बुढ़िया ने राजकुमार से कहा — “ठीक है। मै तुम्हारी सहायता जरूर करूँगी। तुम मेरी पीठ पर बैठ जाओ।”

राजकुमार उसकी पीठ पर बैठ गया और वह बुढ़िया ऊँची और बहुत ऊँची उड़ चली। पर पलक झपकते ही वह नीचे गहराइयों उतर गयी।

वहाँ वह उसको एक शहर में ले गयी। वहाँ वे लोग बाजार में घुसने ही वाले थे कि वहाँ जा कर बुढ़िया ने एक दूकानदार की तरफ इशारा करते हुए उससे कहा — "तुम इस दूकानदार को देख रहे हो न। जाओ और इस दूकानदार के यहाँ जा कर काम करो।

पर जब शाम को जब यह दूकानदार अपना काम खत्म करके अपने घर जाये तो उससे कहना कि वह तुमको भी अपने साथ ले जाये। वह तुमको अपनी दूकान में किसी भी हालत में न छोड़े।

जब तुम उसके साथ जाओगे तब तुम गुलाम्बरा और सुलाम्बरा की कहानी जान पाओगे। फिर जब भी तुमको मेरी जरूरत हो बस एक सीटी बजा देना और मैं हाजिर हो जाऊँगी।"

राजकुमार ने ठीक वैसा ही किया जैसा कि उस बुढ़िया ने उससे करने के लिये कहा था। वह उस कसाई की दूकान पर गया और उसके साथ काम करने लगा।

शाम को जब कसाई घर जाने लगा तो वह बोला — "मैं इस जगह मैं एक अजनबी हूँ मेहरबानी करके मुझे यहाँ अकेला दूकान में मत छोड़ें मुझे डर लगता है। मुझे आप अपने साथ अपने घर ले चलिये।"

कसाई ने बहुत मना किया कि वह उसको अपने साथ अपने घर नहीं ले जा सकता पर राजकुमार तब तक उससे जिद करता रहा जब तक वह उसको अपने घर ले जानो के लिये राजी नहीं हो गया। सो मजबूरन कसाई को उसको अपने साथ ले कर जाना पड़ा।

वे एक दीवार के पास आये, वहॉ उसने एक दरवाजा खोला, वे दोनों उसके अन्दर गये और दरवाजा बन्द हो गया। उसके बाद एक और दीवार थी। वे उसमें से भी हो कर गये और वह भी उनके अन्दर पहुॅचते ही बन्द हो गयी। इस तरह से वे नौ दीवारों से हो कर गुजरे। उसके बाद ही वे उस कसाई के घर में पहुॅचे।

घर में पहुॅच कर कसाई ने एक आलमारी खोली उसमें से एक स्त्री का सिर निकाला और लोहे का एक कोड़ा निकाला। उसने उस सड़े हुए सिर को नीचे रखा और एक कोड़ा मारा। फिर वह उसको तब तक कोड़े मारता रहा जब तक कि वह सिर बिल्कुल ही खत्म नहीं हो गया।

राजकुमार ने जब यह देखा तो वह तो बहुत ही आश्चर्यचकित रह गया। वह उस कसाई से बिना पूछे न रह सका — "अगर आप बुरा न माने तो क्या में आपसे पूछ सकता हॅू कि आप यह क्या कर रहे थे। यह सिर तो वैसे ही सड़ा हुआ था फिर आप इसे क्यों मार रहे थे। और यह सिर किसका है।"

कसाई बोला — “मैं इस बात को किसी को नहीं बताता यह मेरा अपना भेद है। पर जब भी मैं यह बात जिस किसी को भी बताऊँगा उसका सिर धड़ से अलग हो जायेगा।”

राजकुमार बोला — “फिर भी मैं यह बात जानना चाहूँगा।”

कसाई उठा उसने एक तलवार उठायी अपने आपको तैयार किया और राजकुमार से बोला — “मेरी एक पत्नी थी जो इतनी सुन्दर थी कि सूरज भी उसके मुकाबले में कुछ नहीं था। उसका नाम गुलाम्बरा था। मैं इसी लिये उसको इन नौ तालों के अन्दर रखता था।

मैं उसको इतनी सॅभाल कर रखता था कि स्वर्ग की हवा भी उसको नहीं छू सकती थी। वह जो कुछ भी चाहती थी मैं उसको वह तुरन्त ही दे दिया करता था। मैं उसे अपने प्यार की हद तक प्यार करता था और उस पर विश्वास भी करता था। एक दिन उसने मुझसे कहा भी कि वह भी दुनियॉ में केवल मुझे ही प्यार करती थी।

उन दिनों मेरा एक नौकर था जिसका नाम सुलाम्बरा था। मेरी पत्नी ने मुझे धोखा दिया वह मेरे उस नौकर से प्यार करने लगी। एक बार मैंने उन दोनों को एक साथ देख लिया तो उनको पकड़ लिया। मैंने उन दोनों को दो आलमारियों में अलग अलग बन्द कर दिया।

जब मैं अपना काम खत्म करके घर आता तो उनको एक एक करके उन आलमारियों में से बाहर निकालता और खूब मारता। मैंने कल उन दोनों को इतना मारा इतना मारा कि सुलाम्बरा तो कल ही मर गया पर गुलाम्बरा का सिर अभी भी बच गया। और गुलाम्बरा का सिर आज तुम्हारे सामने ही खत्म हो गया।"

कहानी खत्म हो गयी थी सो कसाई ने अपनी तलवार सॅभाली और बोला — "अब मैं अपनी धमकी पूरी करने जा रहा हूॅ। सो अब तुम यहॉ आओ और मैं अब तुम्हारा सिर धड़ से अलग करता हूॅ।"

राजकुमार उससे दया की भीख मॉगता हुआ बोला — "मुझे थोड़ा सा समय दो। मैं दरवाजे की तरफ जा कर ज़रा भगवान की प्रार्थना कर लूॅ।"

कसाई ने सोचा "इसमें तो मेरा कोई नुकसान नहीं है कि यह मरने से पहले दरवाजे के पास जा कर भगवान की प्रार्थना कर ले क्योंकि यह तो पक्की बात है कि यह नौ दरवाजे तो किसी हालत में खोल ही नहीं सकता।"

राजकुमार दरवाजे के पास गया और जा कर सीटी बजायी। तुरन्त ही वह बुढ़िया वहॉ आ गयी। राजकुमार उसकी पीठ पर बैठा और वह बुढ़िया उसको ले कर उड़ चली।

राजकुमार सीधे राजकुमारी के महल पहुॅचा और उस सूरज जैसी राजकुमारी को गुलाम्बरा और सुलाम्बरा की कहानी सुनायी।

राजकुमारी तो यह सुन कर आश्चर्यचकित रह गयी। अब वह अपनी शर्त के मुताबिक उससे शादी करने को तैयार थी। सो उनकी शादी हो गयी। राजकुमारी ने अपना सारा सामान उठाया और राजकुमार के साथ उसके पिता के राज्य जाने के लिये तैयार हो गयी।

जब वे नदी के किनारे आये तब उसका वह मुँहबोला भाई आया और उससे बोला — "तुम्हारी मुसीबत में मैंने तुमसे अपनी दोस्ती निभायी। और अब जबकि तुम खुश हो तो क्या हमारी दोस्ती टूट जायेगी।

जे कुछ तुम्हें मिला वह तुम्हें मेरी दोस्ती की वजह से मिला अब तुम्हें उसे मुझसे बाँटना चाहिये।"

राजकुमार ने सब कुछ आधा आधा बाँट दिया फिर भी उसका मुँहबोला भाई सन्तुष्ट नहीं था। वह बोला — "मेरे साथ यह सब बाँटना तो ठीक है पर तुम्हारे पास तो राजकुमारी भी है। उसका क्या होगा।"

राजकुमार उठा और उसने अपने हिस्से का सामान भी उसको दे दिया। पर उसका मुँहबोला भाई उसको लेने के लिये तैयार नहीं था। वह उससे बोला — "अगर तुम्हें मुझसे अपनी दोस्ती कायम रखनी है तो तुम्हें मुझसे यह राजकुमारी भी बाँटनी पड़ेगी जो तुम्हारी सबसे ज़्यादा प्यारी चीज़ है।"

कहते हुए उसने राजकुमारी का हाथ पकड़ा और उसको एक पेड़ से बॉध दिया। फिर उसने अपनी तलवार निकाली और उसको मारने ही वाला था कि डरी हुई राजकुमारी के मुॅह से एक हरे रंग की धारा निकल पड़ी। भाई ने फिर से अपनी तलवार उठायी पर फिर से वही हुआ। उसने तीसरी बार तलवार उठायी पर फिर भी वही हुआ।

यह देख कर वह मुॅहबोला भाई राजकुमारी के पास आया उसे खोला और उसे राजकुमार को सौंप दिया और राजकुमार से बोला — "हालॉकि राजकुमारी बहुत सुन्दर थी फिर भी वह जहरीली थी और जल्दी या देर से तुम्हें मार डालती। अब उसका सारा जहर निकल गया है सो अब तुमको उससे डरने की बिल्कुल जरूरत नहीं है।

अब तुम जा सकते हो भगवान तुम्हारी रक्षा करे। जहॉ तक इन सब चीज़ों का सवाल है ये सब तुम्हारी हैं। मुझे ये सब नहीं चाहिये। भगवान तुम्हें शान्तिपूर्वक रखे।"

फिर उसने अपनी जेब से एक रूमाल निकाला और उसे राजकुमार को देते हुए कहा — "जब तुम घर पहुॅच जाओ तो इस रूमाल से अपने पिता की ऑखें पोंछ देना वह देखने लग जायेंगे।

मैं वही मछली हूॅ जो तुम्हारे महल में पानी के बरतन में पड़ी हुई थी और जिसे तुमने आजाद किया था। इससे तुम यह जान लो कि किसी के ऊपर की गयी दया कभी खाली नहीं जाती।"

इतना कहने के बाद राजकुमार का मुँहबोला भाई वहीं गायब हो गया। राजकुमार एक बार फिर आश्चर्य में पड़ गया। इससे पहले कि वह अपने उस भाई का धन्यवाद करता वह तो गायब ही हो चुका था।

आखिर जब वह अपने आपे में आया तो वह अपनी पत्नी के साथ अपने पिता के पास चला गया। उसने अपने भाई का दिया हुआ रूमाल अपने पिता की ऑखों पर रखा तो तुरन्त ही राजा की ऑखों की रोशनी वापस आ गयी।

जब उसने अपने बेटे और बहू को देखा तो वह तो इतना खुश हो गया कि उसकी ऑखों में तो ऑसू ही आ गये। फिर उसके बेटे ने उसको अपनी वह सारी कहानी सुनायी जो उसके साथ घटा था।

8 दो भाई[23]

एक बार की बात है कि एक जगह दो भाई रहा करते थे। दोनों के पास दस दस डबल रोटियाँ थीं। उन्होंने सोचा कि चलो बाहर चल कर अपनी अपनी किस्मत आजमाते हैं। बस वे उठे और उठ कर चल दिये।

कुछ दूर चलने के बाद उनको भूख लग आयी सो एक भाई ने दूसरे भाई से कहा — "पहले हम तुम्हारी रोटी खाते हैं। उसके बाद हम मेरी रोटी खायेंगे।"

दूसरा भाई इस बात पर राजी हो गया सो दोनों भाइयों ने मिल कर पहले दूसरे भाई की डबल रोटी खायी और खा पी कर वे फिर अपने रास्ते चल दिये। इसी तरह से वे चलते रहे और दूसरे भाई की दसों रोटियाँ खत्म हो गयीं।

रोटी खत्म होने के बाद पहला भाई बोला — "भाई अब तुम अपने रास्ते जाओ और मैं अपने रास्ते जाता हूँ। तुम्हारे पास अब कोई रोटी नहीं बची है और मैं तुम्हें अपनी रोटी खाने नहीं दूँगा।"

ऐसा कहते हुए वह अपने भाई को अकेले सफर करने के लिये छोड़ वहाँ से चल दिया। वह चलता गया चलता गया और एक घने जंगल में एक मिल के पास आ निकला।

---

[23] The Two Brothers (Tale No 9) – a folktale from Georgia, Europe.
Adapted from the Web Site :
http://www.archive.org/stream/cu31924029936006#page/n19/mode/2up

वह मिल वाले से मिला और बोला — "भगवान के लिये मुझे आज रात के लिये यहाँ ठहरने दो।"

मिल वाले ने कहा — "ठहरने को तो तुम यहाँ ठहर सकते हो पर यहाँ पर रात को बहुत मुश्किल होती है। जैसा कि तुम देख रहे हो मैं भी यहाँ पर रात को नहीं रहता। मैं भी सोने के लिये दूसरी जगह जाता हूँ। क्योंकि अभी यहाँ जंगल में जंगली जानवर निकल आयेंगे और शायद वे फिर यहाँ भी आ जायेंगे।"

पहला भाई बोला — "तुम मेरे लिये बिल्कुल मत डरो। मैं यहीं ठहरूँगा। जानवर मुझे नहीं मार सकते।"

मिल वाले ने उसको बहुत समझाने की कोशिश की कि वह वहाँ ठहर कर अपनी ज़िन्दगी खतरे में न डाले पर जब उसने देखा कि उसकी बात का उसके ऊपर कोई असर ही नहीं हो रहा तो वह उठा और अपने घर चला गया। और पहला भाई वहीं मिल में चला गया और सो गया।

अब न जाने कहाँ से एक बड़ा भालू वहाँ आ गया। उसके पीछे एक भेड़िया और एक गीदड़ भी आये। उस मिल में आ कर वे तीनों बहुत शोर मचाने लगे। फिर वे कूदने लगे जैसे कि वे सब नाच रहे हों।

यह सब देख कर पहला भाई बहुत डर गया और डर के मारे काँपने लगा। वह एक तरफ को लेट गया और डर के मारे कुछ कुछ बोलने लगा।

आखिर भालू बोला — “चलो हम सब एक दूसरे को वह सुनाते हैं जिसने जो देखा हो या जो सुना हो।”

पर भेड़िया और गीदड़ बोले — “हॉ हॉ हम सब सुनायेंगे पर पहले तुम शुरू करो।”

सो भालू ने सुनाना शुरू किया — “एक पहाड़ी पर जिसको मैं बहुत अच्छी तरह जानता हूँ एक चूहा रहता है। इस चूहे के पास बहुत सारा पैसा है। जब धूप निकलती है तब वह उसे वह धूप में फैला देता है।

अगर कोई इस चूहे का बिल जानता हो और वहॉ किसी धूप वाले दिन जाये जब उसने अपना पैसा फैला रखा हो और उस चूहे को डंडे से मार दे तो वह बहुत अमीर हो जाये।”

भेड़िया बोला — “हॉ यह तो है। पर यह तो कोई बहुत बड़ी बात नहीं हुई। मैं एक ऐसे शहर को जानता हूँ जहॉ कोई पानी नहीं है। वहॉ बहुत थोड़ा सा पानी भी लोग बहुत दूर दूर तक ले जाते हैं। और उसकी उनको बहुत कीमत देनी पड़ती है।

पर वहॉ के लोग यह नहीं जानते कि शहर के बीचोबीच एक पत्थर के नीचे बहुत सुन्दर शुद्ध पानी है। अगर कोई भी इस बात को जाने और उस पत्थर को वहॉ से हटा दे तो वह तो बहुत अमीर हो जायेगा और शहर के सब लोगों को पानी भी मिल जायेगा।”

गीदड़ बोला — “यह तो कुछ भी नहीं। मैं एक ऐसे राजा को जानता हूँ जिसके एक अकेली बेटी है। वह तीन साल से अपंग पड़ी

है पर कोई यह नहीं जानता कि उसकी दवा क्या है। जबकि उसकी बीमारी का एक बड़ा सादा सा इलाज है।

अगर कोई उसको बीच पेड़ की पत्तियों के पानी से नहला दे तो वह बिल्कुल ठीक हो जायेगी। अब सोचो अगर कोई उसको ठीक कर देगा तो वह कितना मालामाल हो जायेगा। पर कोई इस बात को जाने तब न।"

जब उन्होंने सबने अपनी अपनी कहानियाँ सुना कर खत्म कीं बस तभी दिन की पहली रोशनी फूटने लगी। यह देख कर भालू भेड़िया और गीदड़ तीनों वहाँ से जंगल में चले गये।

पहला भाई मिल में से बाहर निकला भगवान को धन्यवाद दिया और उस पहाड़ी की तरफ चल दिया जिस पर वह अमीर चूहा रहता था जिसके बारे में भालू बोला था।

वह उस पहाड़ी पर आया तो उसे पता चला कि उसकी कहानी तो सच्ची थी। वहाँ वह चूहा भी था और उसने अपना पैसा भी धूप में फैला रखा था।

बस वह एक डंडा ले कर उधर बिना आवाज किये चला गया और मौका मिलते ही चूहे को मार दिया। फिर उसने वहाँ से सारा पैसा इकट्ठा किया और पहाड़ी से नीचे चला आया।

वहाँ से वह फिर बिना पानी वाले शहर में गया। वहाँ आ कर उसने शहर के बीच में रखा वह पत्थर हटाया जिसके नीचे पानी था। पत्थर हटाते ही वहाँ से तो पानी की धारा बह निकली। पानी

देखते ही शहर वाले बहुत खुश हो गये और उसको इनाम में बहुत कुछ दिया।

अब वह सब ले कर वह उस शहर पहुँचा जिस देश के राजा की बेटी तीन साल से बीमार थी। उसने राजा से कहा — “अगर मैं आपकी बेटी को ठीक कर दूँ तो आप मुझे क्या देंगे।”

राजा बोला — अगर तुम मेरी बेटी को ठीक कर दोगे तो मैं अपनी बेटी की शादी तुमसे कर दूँगा।”

यह सुन कर पहले भाई ने दवा तैयार की राजकुमारी को उस पानी से नहलाया और वह ठीक हो गयी। राजा बहुत खुश हुआ उसने अपनी बेटी की शादी उससे कर दी।

अब यह कहानी दूसरे भाई के पास पहुँची कि उसका भाई अमीर हो गया तो वह अपने भाई से मिलने चल दिया। चलते चलते वह अपने भाई के पास आ पहुँचा। उसने अपने भाई से पूछा — “यह सब कैसे हुआ भाई ज़रा मुझे भी तो बताओ।”

पहले भाई ने उसको सब कुछ विस्तार में बता दिया तो दूसरे भाई ने कहा — “मैं भी वहाँ जाता हूँ और उस मिल में एक दो रात रुकूँगा।”

उसके भाई ने उसको बहुत समझाया कि वह ऐसा न करे पर वह नहीं माना सो पहला भाई बोला — “अगर तुम नहीं मानते तो जाओ पर मैं तुम्हें फिर चेतावनी दे रहा हूँ कि तुम वहाँ मत जाओ। क्योंकि तुम्हारा वहाँ जाना खतरे से खाली नहीं है।”

पर वह नहीं माना और वहाँ चला गया। वह मिल में जा कर छिप गया और वहाँ सारी रात रहा।

रात को न जाने कहाँ से फिर से वे ही पुराने जानवर वहाँ आ पहुँचे – भालू भेड़िया और गीदड़। भालू बोला — "उस दिन मैंने तुमको जो चूहे की कहानी सुनायी थी उस चूहे को किसी ने मार दिया और उसका सारा पैसा ले गया। क्योंकि अब न तो वहाँ पर चूहा है और न ही उसका पैसा।"

भेड़िया बोला — "और मैंने जिस शहर के बारे में तुम लोगों को बताया था कि वहाँ पानी नहीं है वहाँ किसी ने जा कर वह पत्थर उठा दिया है और अब तो वहाँ पानी धड़ाके से बह रहा है।"

गीदड़ बोला — "और मैंने तुम लोगों को जिस बीमार राजकुमारी के बारे में बताया था वह अब ठीक भी हो गयी है और उसकी शादी भी हो गयी है।"

भालू बोला — "इससे ऐसा लगता है जैसे उस दिन कोई हमारी बात सुन रहा था। हो सकता है वह अभी भी यहीं हो।

सब बोले — "तब हमको उसे चल कर देखना चाहिये। फिर उसके बाद हमारी बातें कोई नहीं सुनेगा।"

वे सब इधर उधर देखने चले गये। उन्होंने चारों तरफ देखा तो उनको यह दूसरा भाई दिखायी दे गया। बस उन्होंने उसको पकड़ लिया और उसको फाड़ कर उसके टुकड़े टुकड़े कर दिये।

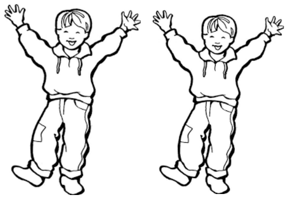

9 राजकुमार[24]

एक बार की बात है कि एक जगह एक राजा था जिसके पास बहुत कुछ था। पर उसकी पत्नी के कोई बच्चा नहीं था इसलिये वह बहुत दुखी रहता था।

एक दिन वह बहुत उदास बैठा था कि एक दरबारी उसके पास आया और बोला — "ओ ताकतवर योर मैजेस्टी, आपके कोई बेटा नहीं है और आपने किसी को कुछ दिया भी नहीं है। तो आपकी प्रजा आपके बारे में क्या सोचेगी। आपने जो इतनी धन दौलत इकट्ठी कर रखी है आप इसका क्या करेंगे।"

अपने दरबारी के यह शब्द राजा के दिल को लग गये। उसने सोचा यह दरबारी कहता तो ठीक ही है मेरी इतनी सारी धन दौलत का क्या होगा। सो उसने अगले दिन ही अपनी प्रजा के लिये एक बहुत बड़ी दावत का इन्तजाम किया और उसमें उसने खूब दान दिया।

उसी समय न जाने कहाँ से एक बुढ़िया वहाँ आयी। वह राजा के पास आयी और बोली — "अगर मैं तुम्हें एक बेटा दूँ तो तुम मुझे क्या दोगे।"

राजा बोला — "जो तुम माँगोगी मैं तुम्हें वही दूँगा।"

---

[24] The Prince (Tale No 10) – a folktale from Georgia, Europe.
Adapted from the Web Site :
http://www.archive.org/stream/cu31924029936006#page/n19/mode/2up

इस पर बुढ़िया ने अपनी जेब से एक सेब निकाला उसे तीन हिस्सों में काटा और राजा को देते हुए बोली — "इसको अपनी पत्नी को खाने के लिये दे देना। इससे उसको तीन बच्चे होंगे। पर याद रखना कि मैं सात साल बाद आऊँगी तब तुम मुझे अपने उन तीनों बेटों में से सबसे छोटा बेटा मुझे दे देना।"

राजा ने हामी भर दी। वह सेब उसने अपनी रानी को खाने के लिये दे दिया और रानी ने उसे खा लिया। समय आने पर रानी ने तीन बेटों को जन्म दिया। उनका सबसे छोटा बेटा सबसे ज़्यादा सुन्दर था।

राजा जब अपने तीनों बेटों के देखता तो वह तो यह सोच भी नहीं सकता कि वह अपने सबसे छोटे बेटे को किसी को दे देगा।

उसने अपने मन में सोचा "मैं अपने इस बेटे को नौ तालों में बन्द करके रखूँगा। और जब वह बुढ़िया आयेगी तब मैं उससे कह दूँगा कि मेरा सबसे छोटा बेटा मर गया। पर वह मेरे दोनों बड़े बेटे ले जाना चाहे तो ले जा सकती है।"

सात साल जाते कितनी देर लगती है। सात साल हवा की तरह से उड़ गये। और सात साल बाद वह बुढ़िया राजा के दरवाजे पर खड़ी थी। उसने राजा का सबसे छोटा बेटा माँगा।

राजा ने वैसा ही किया जैसा उसने सोचा था। उसने अपने सबसे छोटे बेटे को नौ तालों में बन्द कर दिया और बुढ़िया से कहा

— "मेरा सबसे छोटा बेटा तो मर गया है पर मेरे ये दोनों बड़े बेटे यहाँ है तुम इन्हें ले जाओ।"

अब वह बुढ़िया तो उसका विश्वास ही न करे। उसने उसके छोटे बेटे को ढूँढने के लिये महल का हर कोना छाना नौ ताले भी खोले और राजा के सबसे छोटे बेटे को ले गयी। वह उसको अपने साथ ले कर अपने घर चली गयी।

कुछ दूर जाने पर वे एक नदी के पास आये जहाँ एक बुढ़िया मैली चादरें आदि धो रही थी। जब उसने सुन्दर राजकुमार को देखा तो उसको पुकारा और दुखी हो कर कहा — "क्या तुझे मालूम है कि तू अपनी बदकिस्मती की तरफ ले जाया जा रहा है। तू उस जादूगरनी के पीछे जा ही क्यों रहा है। तू यकीनन उसके हाथों से ज़िन्दा नहीं बच सकता। वह तुझे मार देगी।"

जब राजकुमार ने यह सुना तो वह उस जादूगरनी के पास गया और उससे कहा — "ज़रा में इस बुढ़िया से बात कर लूँ मैं अभी तुम्हारे साथ चलता हूँ।" जादूगरनी ने उसको जाने की इजाज़त दे दी।

राजकुमार अपने घर चला गया एक प्याले में पानी भरा और आग के पास रख दिया। यह करके वह बोला — "जब यह पानी खून में बदल जायेगा तो मैं मर जाऊँगा और अगर यह ऐसे ही साफ रहा तो मैं ज़िन्दा रहूँगा।"

इसके बाद वह वहाँ से चला गया और जा कर उस जादूगरनी से मिल गया फिर दोनों साथ साथ आगे चलने लगे।

चलते चलते वे एक अँधेरी घाटी में पहुँच गये। उसके दोनों तरफ पहाड़ थे। उस जादूगरनी का घर वहीं एक चट्टान की गुफा में था। उसके घर में तीन बेटियाँ थीं दो घोड़े थे एक उसके अपने लिये और एक उसकी बेटियों के लिये। बुढ़िया अन्दर गयी और राजकुमार को अपनी बेटियों को सौंपा और जा कर सो गयी।

अब इस जादूगरनी को सात दिन सात रात तक सोने की आदत थी और उस समय उसको कोई उठा भी नहीं सकता था।

जब उसकी बेटियों ने राजकुमार को देखा तो वह उनको बहुत अच्छा लगा तो उन्होंने आपस में बात की कि यह कितना सुन्दर राजकुमार है इसको मारना ठीक नहीं है। हम इसको अपनी माँ को भी खाने नहीं देंगे। हमें इसकी इसके भाग जाने में सहायता करनी चाहिये।

सब बहिनें एक साथ बोलीं "हाँ हम इसके भाग जाने में इसकी सहायता करेंगे।" और उन्होंने उसको भगा देने का प्लान बनाया।

उनमें से एक ने कहा — "अगर हमारी माँ तुमको पकड़ ले तो तुम यह कंघा अपने पीछे फेंक देना। इससे तुम्हारे और उनके बीच में एक बहुत ही घना जंगल पैदा हो जायेगा और हमारी माँ को उसे पार करने में बहुत मुश्किल होगी।"

दूसरी बहिन ने उसको एक कैंची दी और कहा — "जब हमारी मॉ तुमको पकड़ लें तो तुम यह कैंची अपने पीछे फेंक देना तो तुम्हारे और उनके बीच में ऊँची नीची बहुत सख्त चट्टानें खड़ी हो जायेंगी जिनको पार करने में उनको बहुत मुश्किल होगी और तुम इतनी देर में जल्दी से भाग जाना।"

सबसे छोटी बहिन ने उसको नमक का एक डला दिया और कहा — "जब हमारी मॉ तुमको पकड़ लें तो तुम यह नमक का डला अपने पीछे फेंक देना तो तुम दोनों के बीच में एक समुद्र पैदा हो जायेगा जिसे हमारी मॉ पार नहीं कर पायेगी।"

यह सब कह कर उन्होंने उसको जीन कस कर अपना वाला घोड़ा दिया और वह सब भी उसको दिया जो वह चाहता था और वहॉ से उसको भेज दिया। राजकुमार ने भी उनसे वे तीनों चीज़ें लीं घोड़े पर सवार हुआ उन्हें धन्यवाद दिया और अपने घर की तरफ चल दिया।

सात दिन बीत जाने के बाद जादूगरनी जागी तो उसने अपना खाना ढूँढा पर वह तो वहॉ था ही नहीं। वह अपने घोड़े के पास गयी और उससे पूछा — "पहले हम रोटी खा लें या फिर तुरन्त ही चल दें?"

घोड़े ने जादूगरनी से कहा — "चाहे हम रोटी खायें या न खायें पर हम उसको पकड़ नहीं सकते।"

पर जादूगरनी ने अपना इरादा नहीं छोड़ा। उसने अपनी रोटी खायी घोड़े पर चढ़ी और राजकुमार को ढूँढने चल दी। कुछ दूर जाने के बाद ही उसने राजकुमार को पकड़ लिया।

राजकुमार ने पीछे मुड़ कर देखा और बुढ़िया को अपने पास आते देख कर उसने अपनी जेब से कंघा निकाला और अपने पीछे फेंक दिया। कंघा पीछे फेंकते ही उन दोनों के बीच में इतना घना जंगल पैदा हो गया कि उसमें से एक मक्खी भी नहीं गुजर सकती थी।

बुढ़िया का रास्ता रुक गया था जिससे वह कुछ नाराज सी हो गयी। पर किसी तरह से वह उसको पार कर गयी। जंगल पार करके जब वह खुली जगह में पहुँची तो उसने अपने घोड़े को एड़ लगायी और फिर से राजकुमार को पकड़ लिया।

राजकुमार ने फिर बुढ़िया जादूगरनी को आते देखा तो इस बार उसने अपनी कैंची निकाली और अपने पीछे फेंक दी। कैंची पीछे फेंकते ही उन दोनों के बीच में लोहे की तरह सख्त पहाड़ी खड़ी हो गयी। उसे कोई लोहा नहीं काट सकता था।

उसको पार करने में जादूगरनी के घोड़े के खुर कट गये इससे वह और आगे नहीं जा सका और वहीं गिर पड़ा पर वह जादूगरनी भी छोड़ने वाली नहीं थी। वह घोड़े से कूदी और पैदल ही चलने लगी। उसने वह पहाड़ी पार की और मैदान में पहुँच कर फिर जल्दी जल्दी चलने लगी।

वह धरती के ऊपर उड़ी जैसे उसके पंख लगे हों। उड़ कर उसने फिर से राजकुमार को पकड़ लिया। राजकुमार ने देखा कि जादूगरनी तो फिर चली आ रही है तो अबकी बार उसने अपनी जेब से नमक का डला निकाला और अपने पीछे फेंक दिया।

नमक का डला फेंकते ही उन दोनों के बीच एक समुद्र पैदा हो गया इतना बड़ा कि उसको कोई चिड़िया पार नहीं कर सकती थी। बुढ़िया बहुत निडर थी। वह इससे भी नहीं डरी और समुद्र में चल दी। उसका इरादा था कि वह उसको पार कर लेगी पर वह उसमें डूब गयी।

राजकुमार आगे बढ़ता जा रहा था। पर वह अक्सर पीछे भी देख लेता था। उसने देखा कि अब वह बुढ़िया कहीं नहीं थी। यह देख कर वह बहुत खुश हो गया और खुशी खुशी आगे बढ़ता गया। पर उसको यह पता नहीं था कि वह कहाँ जा रहा है।

चलते चलते उसे भूख लग आयी। आखिर उसको एक जगह आग जलती दिखायी दी। वह वहाँ गया तो उसने देखा कि वहाँ तो एक बहुत बड़ी आग जल रही है और उसके ऊपर शराब की एक केटली थी और खाना बन रहा था। उसके चारों तरफ नौ देवियाँ[25] लेटे हुए थे। ये सब आपस में भाई थे।

वे सब बहुत ज़ोर से सो रहे थे। पर उनमें एक लंगड़ा देवी भी था जो इन सबको देख रहा था। राजकुमार ने देवियों से इजाज़त

---

[25] Devi seems like some demon type of beings.

लेने का इन्तजार नहीं किया वह तो बस आया आग के ऊपर से बरतन उठाया उसमें से खाना खा कर उसको फिर से आग पर रख दिया और फिर वह भी वहीं लेट गया और खर्राटे मारने लगा।

लॅगड़ा देवी आश्चर्य से दूर से यह आश्चर्य से देख रहा था।

कुछ देर बाद एक देवी उठा। उसने इधर उधर देखा तो देखा कि वहॉ तो एक आदमी सो रहा है। उसको देख कर उसने खुशी से कहा — "आहा आज तो यह हमारे लिये बहुत अच्छा खाना है।" कह कर वह उस लड़के की तरफ चल दिया।

पर लंगड़ा देवी बोला — "तुम उसको छोड़ दो। उसको तुम छूना भी नहीं। हमें उसको डराना है। उसने आग पर से हमारा बरतन उठा कर उसमें से खाना खाया है और खाना खा कर फिर से उसे आग पर रख दिया है। उसने वह किया है जो हम दस लोगों के लिये भी करना मुश्किल है।"

देवी ने सोचा यह तो यह ठीक कह रहा है और वहॉ से चला गया। एक और देवी उठा और उसने भी यही करना चाहा जो पहले वाला करना चाह रहा था पर लंगड़े देवी ने उसको भी रोक दिया। इसी तरह से सारे देवी उठे और उन सबने वही करना चाहा जो पहले वाले देवी ने करना चाहा था पर लंगड़े देवी ने सबको रोक दिया।

जब सारे देवी उठ गये तब सबने खाना शुरू कर दिया। उसी समय राजकुमार भी उठा। वह देवियों के पास आया और उनसे उससे भाईचारे के लिये प्रार्थना की।

देवियों ने पूछा — "तुम कौन हो जो इतनी हिम्मत वाले हो। और तुम यहाँ क्यों आये हो।"

राजकुमार बोला — "मैं तो भूखा था। मैंने आग देखी सो मैं इधर चला आया।"

देवियाँ बोले — "अगर तुम यह चाहते हो कि हम तुम्हारे साथ भाईचारे की कसम खायें तो पहले तुम वहाँ तक जाओ जहाँ तुम्हें एक चौराहा मिलेगा। वहाँ तुमको एक लड़की रूमाल बिछाये मिलेगी। अगर तुम उसका रूमाल हमें ला कर दे दो तब हम तुम्हारे साथ भाईचारे की कसम खा सकते हैं।

और अगर तुम उसका वह रूमाल नहीं ला सके तो फिर हमारा तुम्हारा कोई सम्बन्ध नहीं। बहुत सारे लोगों ने उस लड़की का वह रूमाल लेने की कोशिश की है पर वे ले नहीं पाये। वह लड़की उनको हमेशा ही मार देती है।"

देवियों ने सोचा कि इस तरह से यह राजकुमार भी मारा जायेगा और इस तरह से वे उससे छुटकारा पा जायेंगे।

राजकुमार चल दिया और एक चौराहे पर आया और लो वहाँ तो एक बहुत सुन्दर लड़की उड़ कर नीचे आयी। एक रूमाल उसके

आगे आगे फैला हुआ आ रहा था इससे वह लड़की को देख नहीं पा रहा था।

राजकुमार उसके सामने आया और उसने वह रूमाल पकड़ लिया। पर जैसे ही वह रूमाल ले कर जाने वाला था कि उस लड़की ने उसके ऊपर हमला किया। राजकुमार उस लड़ाई में जीत गया। लड़ाई में राजकुमार के हाथ में उस लड़की का एक सुनहरा जूता रह गया।

वह लड़की का रूमाल ले कर देवियों के पास आया और उनको उसका सुनहरा जूता दे कर कहा — "आप लोग शहर जायें वहॉ इसको बेच कर मुझे इसके पैसे ला कर दें।"

देवियों ने लंगड़े देवी को वह सुनहरा जूता दे कर शहर भेज दिया। शहर जा कर वह एक सौदागर से मिला और उसे वह जूता दिखाया।

उस जूते को देख कर वह सौदागर बोला — "मेरी पत्नी के पास ऐसे ही सुनहरी जूते हैं। ऐसा लगता है कि तुमने उसका जूता चुरा लिया है।"

लंगड़ा देवी कसम खा कर बोला — "नहीं हमने यह जूता चुराया नहीं है हमने तो यह जूता पाया है।"

पर उस सौदागर को उसकी बात पर पर विश्वास ही नहीं हुआ। उसने देवी से वह जूता ले लिया और उसे ताले में बन्द कर दिया।

दूसरे देवियों ने उसका बहुत देर तक इन्तजार किया पर जब वह नहीं आया तो उन्होंने अपने नवें भाई को उसे ढूँढने भेजा। जब वह शहर में पहुँचा जहाँ लंगड़ा देवी जूता बेचने गया था तो वहाँ जा कर उसने अपने लंगड़े भाई के बारे में पूछताछ की।

उसको लंगड़े देवी के बारे पूछताछ करते देख कर उन्होंने सोचा यह आदमी यकीनन उस चोर का साथी होगा। यह सोच कर उन्होंने उसको भी ताले में बन्द कर दिया।

बचे हुए देवियों ने अपने नवें भाई का इन्तजार किया और जब उन्होंने देखा कि वह भी लौट कर नहीं आया तो उन्होंने अपने आठवें भाई को भेजा। उन लोगों ने उसको भी ताले में बन्द कर दिया। फिर सातवाँ गया फिर छठा गया इस तरह सभी भाई वहाँ गये पर सबको ताले में बन्द कर दिया गया।

जब सब देवियाँ ताले में बन्द हो गये और कोई वापस लौट कर नहीं आया तो राजकुमार ने सोचा "ऐसा सबके साथ क्या हो सकता है कि कोई भी वापस लौट कर नहीं आया। मैं जाता हूँ और मैं ढूँढता हूँ उनको। हो सकता है कि मुझे पता चल जाये कि वे किस मुसीबत में फँस गये हैं।"

ऐसा सोच कर वह उठा और शहर की तरफ चल दिया। वहाँ जा कर उसने भी लंगड़े देवी के बारे में पूछताछ की। जब सौदागर को पता चला कि फिर कोई लंगड़े देवी को पूछता चला आ रहा है तो उसने उसको भी पकड़ना चाहा।

पर राजकुमार बोला — "अगर मैं अपने सुनहरे जूते का दूसरा जूता नहीं पाऊँगा तो आप मुझे झूठा कह सकते हैं और फिर आप मेरे और देवियों के साथ जो कुछ करना चाहें वह कर सकते हैं।

पर अगर वह मुझे मिल गया और आप लोगों ने झूठ बोला तो फिर जो हम आपके साथ करना चाहेंगे वह करेंगे।"

सौदागर बोला "ठीक है।"

सो राजकुमार उस सुनहरी जूते का दूसरा जूता देखने के लिये चल दिया। वह बहुत दूर तक गया और एक ऐसे राज्य में आया जो समुद्र के किनारे था। इस राज्य पर एक सूरज जैसी चमकती लड़की राज करती थी।

जो भी उस राज्य में गेंहू बेचने जाता था उसको उस लड़की से मिलना पड़ता था। वह लड़की उस गेंहू को और उस गेंहू के लाने वाले दोनों को समुद्र में फिंकवा देती थी और वहाँ से कोई बच नहीं सकता था।

जब राजकुमार ने यह सुना तो उसने सोचा कि वह इस देश में गेंहू ले कर आयेगा और देखेगा कि वह लड़की उसके साथ क्या करती है। वह गेंहू लाने गया और गेंहू से एक नाव भर कर उस राज्य को लौटा।

जब वह समुद्र के किनारे के पास आया तो न जाने कहाँ से एक सुन्दर लड़की वहाँ आयी। उसने अपना हाथ फैलाया और वह गेंहू

वाली नाव डुबोने को थी कि राजकुमार ने नाव में अपना पैर मारा जिससे वह नाव हिल गयी और नाव डूबने से बच गयी।

फिर उसने उस लड़की का हाथ पकड़ लिया और उसको अपनी तरफ खींचा। यह देख कर कि उसकी कोशिश बेकार कर दी गयी है उस लड़की ने अपनी पूरी ताकत लगा कर अपने आपको उससे खींचा। वह तो उसके हाथ से निकल आयी पर उसकी अँगूठी राजकुमार के हाथ में रह गयी।

इस तरह से उसने उस लड़की को हरा दिया था। इसके बाद अब जो भी वहाँ गेंहू लाना चाहता था ला सकता था और उस राज्य में अब बहुत सारा गेंहू था।

उस देश के लोग राजकुमार के पैरों पर गिर पड़े और उसके घुटनों को चूमा। उन्होंने उससे प्रार्थना की कि वह उनका राजा बन जाये। पर वह तो उनका राजा बनने वाला नहीं था।

उसने कहा — "मैं तो यहाँ किसी दूसरे काम से आया हूँ। असल में तो मुझे केवल एक खास जूते की तलाश है और मुझे कुछ नहीं चाहिये।" और फिर उसने उनको अपनी कहानी बता दी।

वहाँ उसको वह जूता नहीं मिला तो वह उस राज्य को छोड़ कर फिर आगे चला और एक दूसरे देश में आया। यहाँ आ कर उसे पता चला कि एक सुन्दर लड़की ने राजा के बेटे को मार दिया है और उसको एक तहखाने में दफ़न कर दिया गया है।

अब हर रात वह लड़की वहाँ आती है और उसको डंडियों से मारती है। ऐसा करने से वह राजा का बेटा फिर से ज़िन्दा हो जाता है। उसके बाद वे दोनों खाना खाते हैं और सुबह तक का समय आनन्द से गुजारते हैं।

सुबह को वह उसे फिर डंडे से मारती है जिससे वह फिर से लाश बन जाता है और वह लड़की वहाँ से उड़ जाती है।

जब राजकुमार ने उस नौजवान की यह कहानी सुनी तो उसने उसकी सहायता करने का फैसला कर लिया। वह उसकी कब्र में घुसा और वहाँ उस लड़की का इन्तजार करने लगा।

कुछ ही देर में वह लड़की वहाँ उड़ती हुई आयी। उसने अपनी जेब से डंडियाँ निकालीं और उनसे राजा के बेटे को मारती रही जब तक वह ज़िन्दा नहीं हो गया।

फिर उन्होंने खाना खाया और रात भर आनन्द मनाते रहे। सुबह होने पर जैसे ही वह लड़की उसको डंडियों से मारने वाली थी कि हमारे राजकुमार ने उसके हाथ से डंडियाँ छीन लीं। इस तरह से वह राजा के बेटे को डंडिया नहीं मार पायी और वह ज़िन्दा रहा।

राजकुमार उसको फिर उसके पिता के पास ले गया। राजा अपने बेटे को ज़िन्दा पा कर बहुत खुश हुआ और राजकुमार को अपना राज्य देने के लिये कहा पर वह राजा बनना नहीं चाहता था।

उसने कहा — "मैं एक खास सुनहरे जूते की तलाश में हूँ अगर मुझे वह मिल जाये तो मैं खुश हूँ। मुझे उसे ढूँढना है इसलिये मैं चलता हूँ।" कह कर वह वहाँ से चल दिया।

कुछ दूर चलने के बाद वह एक खुले मैदान में आ गया। वहाँ उसने एक बहुत सुन्दर घर देखा। उसको देख कर उसने सोचा "पता नहीं यहाँ कौन रहता होगा।" और वह उस घर की तरफ चल दिया।

रास्ते में उसको एक अरब कुछ खच्चरों को खाना खिलाता दिखायी दिया। उसने उससे पूछा — "भाई क्या तुम जानते हो कि यह घर किसका है। यहाँ कौन रहता है।"

अरब ने इधर उधर देखा और बोला — "मैं तुम्हारा सिर पहले खाऊँ या पैर पहले खाऊँ।"

राजकुमार बोला — "मैंने तो तुमसे इस घर के बारे में पूछा था तो तुम उसका जवाब क्यों नहीं देते।"

अरब ने फिर चारों तरफ देखा और बोला — "मैं तुम्हें सिर से खाऊँ या फिर पैर से।"

राजकुमार फिर बोला — "जहाँ तक खाने का सवाल है मैं तुम्हें अभी बताता हूँ कि मैं क्या करने वाला हूँ।" कह कर राजकुमार ने अरब को इतनी ज़ोर से मारा कि वह नौ पहाड़ के दूसरी तरफ जा कर पड़ा। फिर उसने खच्चरों को मारा और घर आया।

वह उस घर के चारों तरफ घूमता रहा और उसको देख कर बहुत खुश हुआ। फिर वह खिड़की से हो कर घर में घुसा और उसके सब कमरे देख आया। इन कमरों में से एक कमरे में एक सोने का सिंहासन रखा था और उस पर रखे थे सोने के जूते जैसे कि वह ढूँढ रहा था।

उसने अपने मन में सोचा "शायद यह उसी लड़की का घर है जिसका जूता मेरे पास है। मैं यहाँ इन्तजार करता हूँ और देखता हूँ कि क्या होता है।" वह सिहासन के नीचे छिप कर बैठ गया और इन्तजार करने लगा।

जल्दी ही वहाँ एक बहुत सुन्दर लड़की उड़ती हुई आयी। फिर दूसरी फिर तीसरी और आखीर में वह अरब। वे चारों खाना खाने बैठ गये। पलक झपकते ही अरब ने उन तीनों लड़कियों के लिये कपड़ा बिछा दिया। और जो कुछ जिसकी इच्छा हुई वह सब उसके लिये वहाँ उस कपड़े पर आ कर रखा गया।

कुछ समय बाद सबसे बड़ी बहिन ने अपना शराब का कटोरा उठाया और बोली — "भगवान उस नौजवान को लम्बी उम्र दे जो मुझसे मेरा रूमाल और मेरा सुनहरा जूता ले गया।" यह कह कर उसने वह शराब पी और शराब का कटोरा नीचे रख दिया।

उसके बाद दूसरी बहिन ने अपना शराब का कटोरा उठाया और बोली — "उस नौजवान की लम्बी उम्र के लिये जिसने मेरे हाथ से

मेरी अँगूठियाँ छीन लीं और एक राज्य को गेंहूँ दिया।" उसने भी अपने शराब के कटोरे में से शराब पी और कटोरा नीचे रख दिया।

फिर सबसे छोटी बहिन ने अपना शराब का कटोरा उठाया और बोली — "यह जाम उस नौजवान की लम्बी ज़िन्दगी के नाम जिसने मेरे हाथ से डंडियाँ छीनीं और राजा के बेटे को ज़िन्दगी दी।"

उसके बाद अरब ने अपना शराब का प्याला उठाया और बोला — "यह जाम उस नौजवान की लम्बी उम्र के नाम जिसने मुझको इतनी ज़ोर से मारा कि मैं नौ पहाड़ों के उस पार जा कर पड़ा।" कह कर उसने भी उस प्याले में से शराब पी कर अपना प्याला नीचे रख दिया।

यह सुन कर राजकुमार सिंहासन के नीचे से निकला शराब का एक प्याला उठाया और बोला — "मुझे भी यह जाम किसी के नाम में पीना है। यह जाम उस लड़की की लम्बी ज़िन्दगी के नाम जिसका मैंने रूमाल लिया है।" कह कर उसने शराब पी और शराब का प्याला नीचे रख दिया। फिर उसने अपनी जेब से रूमाल निकाला और सबसे बड़ी बहिन को दे दिया।

उसने फिर शराब का प्याला उठाया और बोला — "यह जाम उस लड़की की लम्बी ज़िन्दगी के नाम जिससे मैंने अँगूठियाँ लीं।" कह कर उसने शराब पी और शराब का प्याला नीचे रख दिया। फिर उसने अपनी जेब से अँगूठियाँ निकालीं और दूसरी बहिन को दे दीं।

उसने फिर अपना शराब का प्याला उठाया और बोला — "यह जाम उस लड़की की लम्बी ज़िन्दगी के नाम जिससे मैंने डंडियाँ लीं।" कह कर उसने शराब पी और शराब का प्याला नीचे रख दिया। फिर उसने अपनी जेब से डंडियाँ निकालीं और तीसरी बहिन को दे दीं।

फिर वह अरब की तरफ घूमा और बोला — "यह जाम उस अरब की लम्बी ज़िन्दगी के नाम जिसको मैंने नौ पहाड़ों के उस पार फेंक दिया था।"

उसके बाद तो तीनों बहिनें कूद पड़ीं कि "यह शादी मुझसे करेगा।" "नहीं नहीं यह शादी मुझसे करेगा।" और उन तीनों ने आपस में लड़ना शुरू कर दिया।

राजकुमार बोला — "तुम लोग आपस में क्यों लड़ती हो। मैं सबसे छोटी लड़की से शादी करूँगा क्योंकि मैं अपने तीन भाइयों में सबसे छोटा हूँ। और तुम दोनों बड़ी बहिनें मेरे दोनों बड़े भाइयों से शादी करना।

लड़कियों ने पूछा — "इधर की तरफ आने का तुम्हारा क्या काम है।"

राजकुमार बोला — "मैं यहाँ दूसरा सुनहरा जूता ढूँढने के लिये आया था पर मुझे तो वह यहीं मिल गया। इस जूते की वजह से नौ देवी भाई एक शहर में कैद हैं। और अगर मैं इसके बिना वहाँ गया तो मैं भी उनके साथ ही वहाँ कैद हो जाऊँगा।"

बहिनें बोली — "यह जूता तुम्हारा है। इसके अलावा और भी जितने जूते तुम्हें चाहिये तुम ले जा सकते हो। तुम अरब की पीठ पर बैठ जाओ और तुम तीन घंटे में उस शहर में पहुँच जाओगे।"

राजकुमार ने वैसा ही किया जैसा उन बहिनों ने उससे करने के लिये कहा था। उसने सुनहरे जूतों से एक थैला भरा अरब की पीठ पर बैठा और तीन घंटे में वह उस शहर में था।

उसको देख कर देवी लोग बहुत खुश हुए। उन्होंने सौदागर को बुलाया तो वह जूते ले कर आया। उसने एक एक करके अपने सारे जूते निकाले पर उस एक सुनहरी जूते जैसा उनमें से कोई नहीं था। उसके बाद राजकुमार ने अपने थैले में से जूते निकाले तो सौदागर झूठा साबित हुआ। क्योंकि वे सब जूते लंगड़े देवी के जूते जैसे थे।

राजकुमार ने सौदागर को देवियों को सौंप दिया और कहा "इसका तुम लोग जो चाहे वह करो। इसका सब कुछ बेच दो या और जो कुछ भी। पर मुझे इजाज़त दो मुझे अभी अपने रास्ते जाना है।"

जब देवियों ने यह सुना तो उन्होंने राजकुमार को अपने पास रुक जाने के लिये कहा पर वह नहीं माना। वह वहाँ से तीनों बहिनों के पास आया और सबसे छोटी वाली लड़की से शादी कर ली।

तीनों बहिनों ने अरब को एक घोड़े पर टाँगने वाला थैला दिया जिसमें उनके लिये वह सब कुछ था जो उनको सफर के लिये चाहिये था और उसके हाथ में एक पेड़ दिया और कहा — "राजकुमार के

पिता के राज्य में जाओ और जब उनके महल के पास फलाँ जगह पहुँचो तो यह पेड़ वहाँ लगा देना।

यह एक बड़े मैदानी पेड़ की तरह बड़ा हो जायेगा। इसके नीचे एक नदी बहेगी। उस नदी के किनारे तुम लोग एक कपड़ा बिछा देना और फिर हमारे आने का इन्तजार करना।"

अरब ने वैसा ही किया जैसा उससे करने के लिये कहा गया था। उसके कपड़ा बिछाते ही लड़कियाँ वहाँ आ गयीं।

राज्य के हर आदमी और स्त्री ने यह सुना तो वह उनको देखने के लिये वहाँ आ गया। राजकुमार के माता पिता अभी भी अपने बेटे के गम में बहुत दुखी थे।

राजकुमार जो पानी से भरा प्याला आग के पास रख कर गया था वह वहाँ अभी तक वैसा का वैसा ही रखा था पर फिर भी वे उसको ज़िन्दा देखने की उम्मीद बिल्कुल छोड़ चुके थे। फिर भी जब उन्होंने लड़कियों के आने की खबर सुनी तो वे भी उन लड़कियों को देखने गये।

राजकुमार ने जब अपने माता पिता को वहाँ आते देखा तो वह बहुत आश्चर्य में पड़ गया उसने उनसे पूछा कि वे इतने दुखी क्यों थे। उन्होंने कहा कि उनका एक बेटा खो गया है इसलिये वे इतने दुखी थे।

राजकुमार बोला — "मैं ही तो आपका वह बहुत दिनों से खोया हुआ बेटा हूँ।"

अपने बेटे को ज़िन्दा देख कर राजा और रानी बहुत खुश हुए और उसको अपने घर ले गये। घर जा कर उन्होंने अपने तीनों बेटों की शादियाँ इतनी धूमधाम से कीं कि सारा महल गूँज उठा।

10 एक गड़रिया और एक खुशनसीब बच्चा[26]

पता नहीं वह था भी या नहीं पर एक बार की बात है कि एक जगह एक आदमी था जिसकी एक पत्नी थी। उनके पास पैसा तो बहुत था पर उनके कोई बच्चा नहीं था।

एक बार पत्नी ने अपने पति से कहा — "चलो हम अपने बैलों को अपने चर्चों में रखते हैं। रात को कोई उनकी पहरेदारी कर लेगा। हो सकता है कि भगवान ऊपर से हमको देखे और शायद हमको एक बच्चा दे दे।"

पति ने उसके इस विचार को मान लिया और पाँच बैल पाँच चर्चों में रख आया।

एक दिन दोनों एक चर्च में गये वहाँ उन्होंने एक बैल मारा और अपने गड़रिये[27] को दिया और कहा — "लो इसका माँस लो और गरीबों में बाँट दो। और देखो रात भर चर्च में ही रहना और पहरा देते रहना। और जो कुछ सुनायी दे उसको ठीक से सुनते भी रहना।"

गड़रिया यह सुन कर वहाँ से चला गया और बैल का माँस गरीबों में बाँट दिया। फिर वह चर्च में चला गया और रात भर वहीं

---

[26] The Shepherd and the Child of Fortune (Tale No 13) – a folktale from Georgia, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.archive.org/stream/cu31924029936006#page/n19/mode/2up

[27] Translated for the word "Shepherd"

रहा। पर उसने अपने मालिक के बच्चे होने के बारे में वहाँ कुछ भी नहीं सुना।

सुबह हुई तो गड़रिया मालिक के पास गया और उससे कहा — "मालिक मैं रात भर वहाँ बैठा रहा पर मैंने वहाँ एक आवाज भी नहीं सुनी।"

उसके बाद यह आदमी दूसरे चर्च में गया। वहाँ जा कर उसने अपना दूसरा बैल मारा और अपने गड़रिये को दे दिया और उससे कहा कि वह उसके माँस को गरीबों में बाँट दे जैसे उसने अपने पहले बैल का माँस बाँटा था।

और उससे उस चर्च में रात भर ठहरने के लिये कहा और अगर कुछ भी आवाज सुनायी दे तो उसको ध्यान से सुनने के लिये कहा। गड़रिया रात भर चर्च में रहा और कोई आवाज सुनने की कोशिश करता रहा पर उसे उस रात भी वहाँ कोई आवाज सुनायी नहीं दी। अगले दिन सुबह को उसने यह बात मालिक को बतायी।

उसके बाद वह आदमी तीसरे और चौथे चर्च में गया पर वहाँ भी यही हुआ।

अब केवल पाँचवाँ चर्च ही बचता था। यहाँ भी मालिक के कहने पर गड़रिये ने एक बैल का माँस गरीबों में बाँटा और कोई आवाज सुनने के लिये चर्च में एक तरफ को छिप कर बैठ गया।

बीच रात में लो देखो तो वहाँ पाँच देवदूत[28] उड़ कर आये और आपस में बात करने लगे। सब देवदूत बोले — "हमें इस आदमी के लिये कुछ करना चाहिये। इसके कोई बच्चा नहीं है हमको इसे एक बेटा देना चाहिये।"

पहला देवदूत बोला — "हाँ यह तो तुम ठीक कहते हो पर जब वह 20 साल का हो जाये तब उसको हमारे पास लौट कर आ जाना चाहिये।"

दूसरे देवदूत ने कहा — "नहीं नहीं। जब पादरी उसको कैथेड्रल ले कर जाये और उसके सिर पर ताज रखे तब वह मर जाये।"

तीसरे देवदूत ने कहा — "नहीं। जब इसकी शादी हो जाये और बच्चे हो जायें तब यह मर जाये।"

चौथा देवदूत बोला — "नहीं नहीं। उसको बहुत दिनों तक ज़िन्दा रहना चाहिये। उसको बूढ़ा होना चाहिये। पर उसको एक बेकार का आदमी होना चाहिये।"

पाँचवाँ देवदूत बोला — "अगर हमें इस आदमी को एक बच्चा ही देना है तो हमें इससे उसको कुछ ज़्यादा अच्छा ही देना चाहिये।"

दूसरे बोले — "हम लोग तो बोल चुके अब आपकी बारी है। आपको क्या कहना है।"

---

[28] Translated for the Word "Angels"

पाँचवाँ देवदूत बोला — "हमको इसको एक अमर नौजवान देना चाहिये। और उसको यह ताकत देनी चाहिये कि जो कुछ भी वह भगवान से माँगे वह सब उसको मिल जाये।"

"बहुत अच्छे बहुत अच्छे। हमको ऐसा ही करना चाहिये।" दूसरों ने हाँ में हाँ मिलाते हुए कहा और फिर वे सब अपनी अपनी जगह चले गये।

वहाँ बैठे गड़रिये ने उनकी यह सब बातें सुनी। सुबह को जब वह मालिक के पास आया तो उसके मालिक ने उससे पूछा — "आज की रात क्या तुमने कुछ सुना?"

गड़रिये ने जवाब दिया — "जी सरकार। चर्च के पाँच देवदूत वहाँ आये और उन्होंने कहा कि इस साल के आखीर तक आपके एक बेटा होना चाहिये पर साथ में यह भी तय किया गया कि जिस समय आपके यह बेटा हो यह गड़रिया भी वहाँ पर मौजूद होना चाहिये।"

यह सुन कर आदमी और उसकी पत्नी दोनों बोले — "भगवान का लाख लाख धन्यवाद है। अगर हमारे एक बेटा होता है तो तुमको भी वहाँ मौजूद रहना चाहिये।"

इसके बाद गड़रिया अपनी भेड़ों के पास चला गया और आदमी और उसकी पत्नी अन्दर चले गये। एक साल गुजर गया। गड़रिये ने थोड़ी देर कर दी। उसने एक छोटी बकरी को अपनी जेब में रखा और मालकिन के कमरे में चला गया।

आदमी की पत्नी बिस्तर में थी। गड़रिये ने अपने मालिक के बच्चे को अपनी जेब में रखा और बकरी के बच्चे को मालिक की पत्नी के बिस्तर की चादर में लपेट दिया। फिर उसने मालिक की पत्नी के सोने के कमरे का दरवाजा खोला और बच्चे को ले कर बाहर चला गया।

जब उसे गये हुए कुछ देर हो गयी तो बच्चा उसकी जेब में और ज़्यादा नहीं रुक सका। उसने उससे अपने आपको नीचे रखने के लिये कहा। गड़रिये ने उसे नीचे रख दिया तो वह तो अपने आप ही उठ कर वहाँ से चल दिया।

गड़रिये को यह पूरा विश्वास था कि अब उसकी सब इच्छाऐं पूरी हो जायेंगीं सो उसने बच्चे से कहा — "मेरी इच्छा है इस मैदान में खूब सजा हुआ रहने लायक एक घर बन जाये। उसके बाहर एक गाँव हो जिसके ऊपर मैं राज कर सकूँ और फलाँ फलाँ राजकुमारी मेरी पत्नी बन जाये।"

लड़के ने जैसे ही यह इच्छा प्रगट की कि उसकी इच्छा के अनुसार वहाँ सब कुछ बन गया। उसके लिया एक बहुत बढ़िया मकान भी बन गया, गाँव भी आ गया और उसी राजकुमारी से उसकी शादी भी हो गयी।

कुछ समय बीत गया। एक बार राजकुमारी ने गड़रिये से पूछा — "ऐसा कैसे हुआ कि मुझ जैसी राजकुमारी ने तुम जैसे सीधे सादे गड़रिये से शादी कर ली?"

उसके पति ने जवाब दिया — “एक लोहे की सलाख गरम करो और उसको लड़के के पैर के तलवे के नीचे यह देखने के लिये रखो कि वह सोया हुआ है या नहीं। अगर वह सोया हुआ है तब मैं तुम्हें सब बात बताऊँगा।”

बच्चा ये सब बात सुन रहा था उसने अपने दिल में यह इच्छा प्रगट की — “हे भगवान तू मेरे पैर इतने सख्त कर दे कि मुझे कुछ महसूस ही न हो।”

राजकुमारी ने लोहे की सलाख गरम की और उसको लड़के के पैर के तले पर छुआया पर वह लड़का तो हिला भी नहीं सो गड़रिये ने सोचा कि वह सचमुच में सोया हुआ है तो उसने अपनी पत्नी को सब कुछ विस्तार से बता दिया।

बच्चा चुपचाप पड़ा रहा और सब कुछ सुनता रहा। आज उसे पहली बार पता चला कि वह किसका बेटा है और वह गड़रिये के पास कैसे आ गया।

अगली सुबह वह सुबह सवेरे तड़के उठा और अपने माता पिता को ढूँढने चल दिया। वह चलता रहा चलता रहा और हर जगह अपने गाँव की खबर पूछता रहा।

आखिर वह अपने गाँव आ गया। वहाँ आ कर वह अपने पिता के घर गया और बोला — “क्या आपको एक मेहमान चाहिये?”

"सचमुच, बच्चे, मेहमान तो भगवान के बराबर होता है। आओ अन्दर आओ।" कह कर वे उसको घर के अन्दर ले गये।

बच्चे ने उनसे पूछा — "क्या आपका कुछ खो गया है?"

पिता ने कहा — "हॉ बच्चे मैंने अपना गड़रिया खोया है। मुझे उसकी चार साल की तनख्वाह भी देनी है।"

बच्चे ने कहा — "मैंने उसको बहुत सारे पैसे, पत्नी और परिवार के साथ अभी अभी इधर आते हुए देखा है।"

रात को जब सब लोग सो गये तब लड़के ने यह इच्छा प्रगट की कि "आज की रात गड़रिया अपने घर, अपने परिवार और अपने गॉव सहित यहॉ हमारे ऑगन में मौजूद हो।"

अगली सुबह जब उसका पिता घर के बाहर निकला तो उसको बड़ा आश्चर्य हुआ — "हे भगवान यह क्या? मेरे ऑगन में इतना बड़ा गॉव कैसे बन गया?"

उसकी पत्नी ने कहा — "प्रिय यह तुम क्या कह रहे हो? यह ऑगन तो हमारा ही है पर क्या हम कहीं और हैं?"

आदमी बोला — "नहीं नहीं प्रिये। यह घर तो हमारा ही है पर इसके आसपास की जगह वैसी नहीं है जैसी कि होनी चाहिये।"

पत्नी बोली — "अच्छा ज़रा मुझे अन्दर देखने दो अगर उसके अन्दर कोई लड़का सो रहा है तो फिर तो यह घर हमारा ही है।"

लड़का जागा हुआ था पर उसने सोने का बहाना किया। आदमी और उसकी पत्नी अन्दर गये तो उन्होंने देखा कि लड़का तो अन्दर सो रहा है।

उन्होंने उसको जगाया और उससे पूछा — “तुम कौन हो जो यहाँ आये हो। हम तुमसे प्रार्थना करते हैं कि तुम हमें यह बताओ कि तुमने यह सब क्या किया है कि हम अपना घर भी नहीं पहचान पा रहे हैं।”

लड़का मुस्कुराया और बोला — “मैंने तो आपसे कल ही कहा था कि आपका गड़रिया अपना सब सामान ले कर आज ही यहाँ आ रहा है। और देखिये वह कल ही आ पहुँचा और आपके घर के ऑगन में आ कर रहने लगा। चलिये इस गड़रिये को अब हम यहाँ बुलाते हैं।”

उसी समय गड़रिया भी जाग गया। उसको लगा कि वह अपने घर में नहीं है सो वह बिस्तर से कूदा और उसने बाहर झाँका तो चिल्लाया — “हे भगवान मैं कहाँ हूँ। मैं तो अपने घर में अच्छे से रह रहा था और अब मैं यहाँ हूँ।”

वह तुरन्त अपने मालिक के पास गया और घुटनों के बल बैठ कर बोला — “मालिक मैंने ऐसा ऐसा किया है। मैने बहुत बुरा किया है। अब मैं आपकी शरण में हूँ आप जैसा चाहें मेरे साथ वैसा ही करें।”

जब उस आदमी और उसस्की पत्नी ने उसकी कहानी सुनी तो वह तो यह सोच ही नहीं सके कि वे अपनी खुशी दिखाने के लिये क्या करें। पहले तो दोनों ने एक एक करके बच्चे को गले लगाया।

फिर बच्चे ने कहा — "मैं सचमुच में आप ही का बेटा हूं पर यह गड़रिया भी आप ही का बच्चा है। इसने गलती की है पर आप इसको माफ कर दें और इसकी तनख्वाह इसको दे दें।"

बच्चे के पिता ने गड़रिये को माफ कर दिया और उसकी बची हुई तनख्वाह भी उसके दो दी।

पर फिर भी बच्चा सन्तुष्ट नहीं था। उसने अपने माता पिता से कहा — "पिता जी इस गड़रिये को मेरे बदले में कम से कम एक बकरी दे दीजिये। क्योंकि अगर मेरी माँ ने एक बकरी पाली तो इसने भी तो मुझे पाला।

अगर आप चाहें तो बकरी आप रख लें और मैं इसके साथ चला जाता हूँ। और अगर आप मुझे रख रहे हैं तो बकरी इसको दे दीजिये।"

लड़के के पिता ने कहा — "मैं इसको केवल बकरी ही नहीं दूँगा बल्कि मैं इसको अपने आधे जानवर भी दे देता हूं।

कह कर लड़के के पिता ने अपने जानवर आधे आधे किये और उनमें से एक आधा हिस्सा अपने गड़रिये को दे दिया।

पिता अपने लड़के को घर के अन्दर ले गया। वह अपने माता पिता के साथ ही रहा और वे सब खुशी खुशी रहे।

11 दो चोर[29]

एक बार की बात है कि एक शहर में एक चोर था उसका नाम था बड़ा चोर। एक बार यह बड़ा चोर एक शहर में चोरी करने गया। कुछ दूर चलने पर इसको एक अजनबी मिला।

अजनबी बोला — "भगवान तुम्हें विजयी करे।"[30]

बड़ा चोर बोला — "तुम भी विजयी हो। तुम कौन हो और तुम क्या करते हो?"

अजनबी बोला — "मैं चोरी करता हूँ और मेरा नाम छोटा चोर है।"

बड़ा चोर बोला — "मैं भी चोर हूँ तो हमको आपस में साथी बन जाना चाहिये।"

छोटा चोर राजी हो गया और दोनों आपस में साथी बन गये। सो अब दोनों एक साथ चोरी करने चले। रास्ते में बड़े चोर ने छोटे चोर से कहा — "तुम साबित करो कि तुम चोर हो।"

छोटे चोर ने कहा — "तुम बड़े चोर हो पहले तुम मुझे अपनी चोरी की होशियारी दिखाओ। मैं तुम्हारे मुकाबले में क्या कर सकता हूँ मैं तो छोटा चोर हूँ।" बड़ा चोर मान गया।

---

[29] The Two Thieves (Tale No 14) – a folktale from Georgia, Europe.
Adapted from the Web Site :
http://www.archive.org/stream/cu31924029936006#page/n19/mode/2up

[30] Usual greetings among Georgians

उसी समय उन्होंने एक कबूतर एक पेड़ पर बैठे हुए देखा। बड़ा चोर बोला — "देखो अब तुम देखना कि मैं बिना कबूतर को पता चले उसकी पूँछ कैसे ले आता हूँ।"

इतना कह कर वह उस पेड़ के पास गया। जब वह आधे रास्ते में ही था तो छोटा चोर उस पेड़ के नीचे पहुँच गया। जब बड़ा चोर उस कबूतर की पूँछ खींच रहा था तो छोटे चोर ने अपने साथी का खींचने वाला चुरा लिया और तुरन्त ही पेड़ से नीचे उतर आया।

कुछ देर में बड़ा चोर पेड़ से नीचे उतर आया और बड़े गर्व से कबूतर की खींची हुई पूँछ छोटे चोर को दिखाने लगा तो छोटे चोर ने अपनी जेब में हाथ डाला और उसका खींचने वाला दिखा दिया।

जब बड़े चोर ने यह देखा तो वह तो आश्चर्य में पड़ गया। उसने कहा — "हालाँकि मैं बहुत बड़ा चोर समझा जाता हूँ पर मुझे लगता है कि तुम भी मुझसे कुछ कम नहीं हो।"

इस तरह दोनों ने एक दूसरे की चोरी की होशियारियाँ जाँचीं और आगे चल दिये।

रास्ते में छोटे चोर ने बड़े चोर से पूछा — "तो फिर आज क्या चोरी करें?"

बड़ा चोर बोला — "चलो आज हम लोग राजा का खजाना लूटने चलते है।"

"ठीक है।" छोटे चोर ने हाँ में हाँ मिलायी और वे राजा के महल की तरफ चल दिये।

रात को जब लोगों का आना जाना बन्द हो गया तो चोरों ने दो थैले लिये राजा के खजाने की तरफ चले। छोटे चोर ने कहा — "तुम खजाने में चढ़ो और पैसा इकट्ठा करो मैं थैले भरता हूँ और फिर हम दोनों उनको ले कर चलते हैं।"

पर बड़ा चोर इस बात पर राजी नहीं हुआ। उसने कहा — "नहीं तुम छोटे से हो इसलिये तुम राजा के खजाने के अन्दर घुसो और मैं यहाँ बाहर ठहरता हूँ।" और वह अपनी बात पर अड़ा ही रहा जब तक छोटा चोर उसकी बात नहीं मान गया।

सो आखिर छोटा चोर अन्दर घुसा। अन्दर जा कर उसने पैसा इकट्ठा किया और बड़े चोर ने बाहर रह कर उस पैसे को थैलों में भरा। जब उसके दोनों थैले भर गये तो उसने छोटे चोर को इशारा किया कि वह अब खजाने से बाहर निकल आये। सो छोटा चोर बाहर आ गया। दोनों ने थैले उठाये और घर आ गये।

अगले दिन राजा अपने खजाने में गया। जब उसने वहाँ इधर उधर देखा तो उसकी समझ में आ गया कि वहाँ क्या हुआ था।

उसने अपनी काउन्सिल बुलायी और उनको बताया कि उसके खजाने में क्या हुआ था। सब लोगों ने सोचा और सोचा और फिर

इस नतीजे पर पहुँचे। उन्होंने एक बैरल[31] लिया उसको गोंद से भरा और खजाने के दरवाजे पर रखवा दिया।

---

[31] A barrel is a hollow cylindrical container traditionally made of wooden staves bound by wooden or metal hoops. It has a standard size – in UK it is 36 Imperial gallons (160 L, 43 US Gallons). Modern barrels are made of US Oak wood and measure 59, 60 and 79 US Gallons. A US Gallon is 3.8 Liter and an Imperial Gallon is 4.5 Liter.

चोरों को इस बारे में कुछ पता नहीं था। अगली रात को वे फिर से राजा के खजाने से पैसा चुराने के ख्याल से आये। छोटे चोर ने कहा — "कल मैं खजाने के अन्दर गया था आज खजाने के अन्दर जाने की तुम्हारी बारी है। मैं तुमको देखता रहूँगा।"

बड़ा चोर राजी हो गया। वह जैसे ही खजाने में घुसा तो वह तो गोंद में पकड़ा गया। छोटे चोर ने उसको बहुत खींचा पर वह वहॉ से निकल ही नहीं सका। वह तो उसमें पूरा का पूरा गरदन तक धॅस गया था और अब उसका केवल सिर ही दिखायी दे रहा था।

कोशिश करते करते सुबह हो आयी। जब छोटे चोर ने देखा कि वह अपने साथी को किसी तरह भी नहीं निकाल सका तो उसने अपने साथी की गरदन काटी और उसको एक ऐसी जगह छिपा दिया जहॉ कोई आदमी उसको ढूँढने की सोच भी नहीं सकता था।

इसके बाद वह अपने साथी के घर गया और उसके बारे में उसकी पत्नी को बताया। उसकी पत्नी सब कुछ सुन कर बहुत दुखी हुई।

छोटे चोर ने उसको उसके पति के बारे में सावधान किया और कहा कि वह कहीं बाहर न जाये क्योंकि अगर किसी को पता चल गया कि हम लोग उसके बारे में जानना चाहते हैं तो वे लोग यकीनन हमें पकड़ लेंगे और हमें मार देंगे।

जब सुबह हुई तो राजा के दरबारी खजाने की तरफ देखने गये कि कोई चोर पकड़ा गया या नहीं। उन्होंने देखा कि एक चोर जाल

में पकड़ा तो गया है पर उसका सिर नहीं है। यह बात उन्होंने जा कर राजा से कही।

यह सुन कर राजा वह सब देखने के लिये खुद वहाँ गया तो उसने देखा कि उसके दरबारी ठीक कह रहे थे। चोर तो फँस गया था पर उसका सिर वहाँ नहीं था। यह देख कर तो वह आश्चर्यचकित रह गया। बिना सिर का आदमी चोरी कैसे कर सकता था।

उसने उनको हुकुम दिया — "इसके शरीर को ले जाओ और बीच बाजार में रख दो। वहाँ कुछ पहरेदार रख दो जो इसकी रखवाली करें। जो इसके पास से गुजरे और इसको देख कर रोये समझो कि वही इसका साथी है क्योंकि उस समय वह इस मरने वाले के लिये सहानुभूति दिखा रहा होगा। बस तुम उसको पकड़ कर मेरे पास ले आना।"

जब छोटे चोर ने यह सुना तो वह बड़े चोर के घर गया और उसकी पत्नी को बताया कि उसको क्या करना है। उसने कहा कि वह इस बात का पूरा पूरा खयाल रखे कि वह बाहर न जाये कहीं ऐसा न हो कि वे तुमको पहचान जायें।

उसने उसको राजा के हुकुम के बारे में भी बताया कि उसने क्या हुकुम दे रखा है।

बड़े चोर की पत्नी यह सब कुछ न सह सकी और उसने उससे यह कहते हुए प्रार्थना की कि वह उसको वहाँ जाने की इजाज़त दे

दे। बस वह दूर खड़ी रहेगी और चुपचाप रोयेगी। उसे कोई पहचान नहीं पायेगा।

छोटा चोर बोला — "ठीक है पर सावधान रहना। अपने साथ पानी का एक घड़ा लेती जाना जिससे ऐसा लगे कि तुम पानी भरने जा रही हो। जब तुम अपने पति के पास पहुँच जाओ तो अपना पैर किसी पत्थर से मार लेना और अपना घड़ा तोड़ देना। फिर रोने बैठ जाना जिससे ऐसा लगे कि तुम अपने टूटे घड़े के लिये रो रही हो।"

बड़े चोर की पत्नी ने वैसा ही किया जैसा कि उससे करने के लिये कहा गया था। उसने अपने कन्धे पर पानी भरने वाला एक घड़ा रखा और पानी भरने चली।

जब वह उस जगह के पास पहुँची जहाँ उसके पति की लाश पड़ी हुई थी उसने अपना पैर एक पत्थर पर मारा और घड़ा नीचे गिरा दिया। इससे वह टूट गया।

तब वह उस टूटे हुए घड़े के टुकड़ों के पास बैठ गयी और रोने लगी – दूसरे लोगों के लिये घड़े के लिये पर वास्तव में अपने पति के लिये। जब वह काफी रो चुकी तब वह उठी और वहाँ से चली गयी।

यह देख कर पहरेदारों को बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने आपस में कहा — "यह स्त्री बेचारी कितनी बदकिस्मत होगी जो एक टूटे घड़े के लिये इतना रो रही थी।"

रात हुई तो पहरेदार चोर के शरीर को ले कर राजा के पास आये और राजा से कहा — "हमने वहॉ किसी को रोते नहीं देखा सिवाय एक स्त्री के जिसको एक पत्थर से ठोकर लग गयी थी इससे वह गिर गयी और उसका मिट्टी का घड़ा टूट गया। और इसके लिये वह काफी देर तक बहुत ज़ोर ज़ोर से रोती रही।"

राजा यह सुन कर बहुत नाराज हुआ क्योंकि उसने जान लिया कि इस तरह से उस स्त्री ने चाल खेली थी। वह पहरेदारों पर बहुत गुस्सा हुआ कि उन्होंने उसको क्यों नहीं पकड़ा। उसको वे उसके पास क्यों नहीं लाये क्यों उसको जाने दिया। क्योंकि वह स्त्री उस चोर की जरूर ही कुछ रही होगी।

सो राजा ने उन पहरेदारों का सिर धड़ से कटवाने का हुकुम दे दिया।

अब क्योंकि यह तरकीब नाकामयाब रही सो राजा ने दूसरी तरकीब सोची। अबकी बार राजा ने चोर की लाश शहर के बाहर भेजी और उसको वहीं छुड़वा दिया। शायद ठीक आदमी उसको वहॉ देख ले और उसको वहॉ से चोरी करने के लिये आये।

यह खबर सुन कर छोटा चोर एक गधा हॉक कर उसके पास वाले गॉव में ले गया। वहॉ उसने कुछ केक बेक करवायीं कुछ टर्की और मुर्गे भुनवाये उन सबको एक थैले में रखा और गधे पर लाद लिया। उसके बाद उसने थोड़ी सी शराब खरीदी और फिर जहॉ बड़े चोर की लाश पड़ी हुई थी वहॉ चल दिया।

वह उस जगह पर आया जहाँ राजा के पहरेदार बड़े चोर की लाश पर पहरा दे रहे थ। वहाँ आ कर वह चिल्लाया — "क्या तुम लोग एक मेहमान को नहीं चाहोगे? मैं बहुत दूर से आया हूँ और आज की रात यहाँ ठहरना चाहता हूँ। मुझे डर है कि कहीं कोई मेरा गधा न चुरा ले इसलिये मैं तुम लोगों के पास ही बैठना चाहता हूँ। चलो पहले अच्छा सा खाना खाते हैं।"

पहरेदारों ने जब खाने की बात सुनी तो वे तो बहुत खुश हो गये। सो सब खाना खाने बैठे। छोटे चोर ने उनके लिये शराब परोसी। उन सबने शराब पी पर छोटे चोर ने वह शराब नहीं पी।

जब उन सब लोगों ने काफी खा पी लिया तो छोटा चोर बोला — "अब मुझे नींद आ रही है मैं सोने जा रहा हूँ। मेहरबानी करके ज़रा मेरे गधे का खयाल रखना कोई इसे चुरा न ले जाये। अगर यह चोरी हो गया तो मैं राजा के पास जाऊँगा और तुम्हीं को इसका जिम्मेदार ठहराऊँगा।"

पहरेदार बोले — "जाओ और जा कर लेटो और आराम करो। तुम्हारा गधा कोई इतना खूबसूरत नहीं है जो तुमको इसके चोरी होने का डर रहे।"

छोटा चोर लेट गया और सोने का बहाना करने लगा पर उसका ध्यान उन पहरेदारों की तरफ ही लगा रहा। कुछ देर बाद ही सब पहरेदार गहरी नींद सो गये। वे इतनी गहरी नींद सो गये थे जैसे मर ही गये हों।

छोटा चोर उठा उसने अपने मरे हुए साथी की सिर कटी हुई लाश अपने गधे पर डाली और उस गधे का मुँह घर की तरफ कर दिया। खुद वह वहीं पर फिर से सो गया।

गधे को अपने घर का रास्ता मालूम था सो उसने अपना सिर नीचे किया जैसे वह ध्यान कर रहा हो और अपने घर की तरफ चल दिया और जा कर घर का दरवाजा खटखटाया।

बड़े चोर की पत्नी ने दरवाजा खोला अपने पति की लाश गधे पर से उतारी एक काउच पर रखी और रोने लगी। जब वह काफी रो चुकी तो उसने उसको काउच के नीचे जमीन में दफ़न कर दिया।

सुबह हुई तो पहरेदार जागे तो उन्होंने अपने मेहमान को जगाया। छोटा चोर जागा तो उसने इधर उधर देखा और अपने गधे को पुकारा। उसने देखा कि वह तो वहाँ नहीं है तो उसने डर के मारे चिल्लाना शुरू कर दिया।

उसने कहा — "मैं राजा के पास जाऊँगा जा कर उनसे तुम्हारी शिकायत करूँगा।"

यह सुन कर पहरेदार बहुत डर गये। और यह देख कर तो उनका सिर ही घूम गया कि वहाँ से तो उनके मेहमान का केवल गधा ही नहीं बल्कि वह लाश भी गायब है जिसकी पहरेदारी के लिये वे वहाँ रखे गये थे।

उन्होंने कुछ पैसा अपनी जेब से निकाला और अपने मेहमान को अपना मुँह बन्द रखने के लिये दिया। यही तो वह छोटा चोर

चाहता भी था। उसने न केवल अपने दोस्त की लाश ले ली थी बल्कि कुछ पैसे भी बना लिये थे।

पहरेदार राजा के पास गये। राजा ने जब उनकी कहानी सुनी तो वह तो फिर बहुत नाराज हुआ। उसने उनका भी सिर काटने का हुकुम दिया।

राजा ने देखा कि उसका तो यह दूसरा प्लान भी नाकामयाब रहा सो उसने फिर तीसरा प्लान सोचा।

अबकी बार उसने एक सड़क पर पैसे बिखेर दिये और अपने पहरेदारों को कहा कि वह यह देखें कि कोई उन पैसों को बटोरने के लिये आता है या नहीं। और अगर कोई आये तो उसको पकड़ लें क्योंकि वह या तो उस चोर का मालिक होगा या फिर उसका साथी होगा।

छोटे चोर ने जब यहा सुना तो वह तो बहुत खुश हो गया। उसने अपने एक जोड़ी जूते में तारकोल लगाया उनको अपनी बगल में दबाया और वहाँ चल दिया जहाँ पैसे बिखरे पड़े थे।

जब वह उस सड़क के पास आया जहाँ पैसे बिखरे पड़े थे तो उसने अपने पहने हुए जूते उतारे और तारकोल लगे जूते पहने और उस सड़क पर निडर हो कर कोई गीत गुनगुनाता हुआ चलने लगा।

जब वह उस सड़क के आखीर तक पहुँचा तो वहाँ पहुँच कर उसने अपने जूतों में चिपके हुए पैसे निकाले जो उनमें तारकोल की वजह से चिपक गये थे और उनको एक गड्ढे में दबा दिया।

फिर वह उसी सड़क पर वापस लौट गया। सड़क के आखीर में जा कर उसने फिर से अपने जूते साफ किये और जो पैसे फिर से उसके जूतों में चिपक गये थे वे निकाल कर जमीन में गाड़े और फिर उसी सड़क पर वापस चल दिया।

ऐसा वह सारा दिन करता रहा। इस बीच उसने राजा के फैलाये हुए पैसों में से करीब करीब आधे पैसे अपने जूतों में चिपका लिये थे।

शाम को पहरेदारों ने जो कुछ पैसे वहाँ बचे थे उन्हें इकट्ठा किया और राजा के पास पहुँचे और उनको बताया कि वहाँ पैसे लेने के लिये तो कोई नहीं आया था पर एक आदमी उस सड़क पर सुबह से शाम तक चलता रहा।

राजा को यह सुन कर फिर से बहुत गुस्सा आया। उसने कहा — "जो आदमी सड़क पर सारा दिन चलता रहा वही तो वह आदमी था जो मेरे पैसे ले गया। और वही उस चोर का साथी था। तुमको उसी को तो पकड़ना था।"

सो गुस्से में आ कर उसने उन पहरेदारों का भी सिर कटवाने का हुकुम दे दिया।

अब राजा बहुत परेशान हो गया था क्योंकि अपनी कई कोशिशों के बावजूद वह किसी को नहीं पकड़ पा रहा था सो अब की बार उसने अपने सलाहकारों को बुलाया और उनसे सलाह माँगी।

इस राजा के पास एक हिरनी थी। अगर वे उसको खोल देते तो वह उसके घर के सामने घुटनों पर बैठ जाती जिसने राजा के खिलाफ कोई काम किया होता था।

सो वजीर[32] बोला — "योर मैजेस्टी, हम इस हिरनी को खोल देते हैं। यह हिरनी चोर के घर के सामने अपने घुटने मोड़ कर बैठ जायेगी। इससे हम चोर को पहचान लेंगे।"

राजा ने उनकी सलाह मान ली और हिरनी को खोल दिया गया। हिरनी सड़कों पर भागती रही और आखीर में छोटे चोर के घर के सामने जा कर अपने घुटनों पर बैठ गयी।

सुबह को जब छोटा चोर जागा तो उसने अपनी खिड़की से बाहर झॉका तो देखा कि राजा की हिरनी तो उसके घर के सामने बैठी हुई है।

उसने इस हिरनी के बारे में पहले से सुन रखा था तो वह समझ गया कि इसका क्या मतलब था। वह तुरन्त बाहर गया और हिरनी को पकड़ कर अन्दर ले आया। उसने उसको मार दिया और उसकी खाल निकाल ली। खाल तो उसने छिपा दी और उसका मॉस घर में रख लिया।

जब राजा को उसकी हिरनी नहीं मिली तब तो राजा गुस्से से पागल ही हो गया। उसने फिर अपने वजीरों को बुलाया और उनको अपनै खोयी हुई हिरनी की कहानी सुनायी।

---

[32] Vazeer means Minister

वजीरों की तरकीबें अब खत्म हो चुकी थीं। वे अब चोर को पकड़ने के लिये किसी और जाल के बारे में सोच ही नहीं सके।

तभी वहाँ कहीं से एक बुढ़िया आ गयी। वह राजा के पास गयी और बोली — “आप मुझे क्या देंगे अगर मैं आपकी खोयी हुई हिरनी ढूँढ दूँ।”

राजा बोला — “जो तुम चाहो।”

बुढ़िया बोली — “तो आप मुझे आजाद कर दें।”

राजा बोला — “न मैं केवल तुम्हें आजाद कर दूँगा बल्कि तुम्हें मैं राजकुमारी का ओहदा दे दूँगा। तुम बस मेरी हिरनी ढूँढ दो।” सो बुढ़िया उठी और हिरनी ढूँढने चली गयी।

वह शहर में चारों तरफ हिरनी का माँस माँगती हुई घूमती रही पर किसी के पास हिरनी का माँस नहीं था। घूमते घूमते वह छोटे चोर के घर तक आयी। छोटा चोर उस समय घर में नहीं था पर बड़े चोर की पत्नी घर में थी।

उसने उससे कहा — “बेटी अगर तुम्हारे पास हिरनी का थोड़ा सा माँस हो तो मुझे दे दो। मुझे यह एक बीमार आदमी के इलाज के लिये चाहिये।”

बड़े चोर की पत्नी को बुढ़िया की चालाकियों का पता नहीं था सो वह घर में गयी और हिरनी के माँस का एक टुकड़ा ला कर उसको दे दिया। बुढ़िया हिरनी के माँस को देख कर बहुत खुश हुई। उसको ले कर वह तुरन्त ही राजा के पास चल दी।

कुछ दूर जाने के बाद ही उसको छोटा चोर मिल गया। छोटे चोर ने उससे पूछा — "यह आप क्या ले कर जा रही हैं माँ जी?"

बुढ़िया बोली — "थोड़ा सा हिरनी का माँस है बेटा इसे मैं अपने इलाज के लिये ले जा रही हूँ। यह मुझे उस घर से एक स्त्री ने दिया है।"

छोटा चोर समझ गया कि यह बुढ़िया जरूर कुछ चालाकी करके जा रही है। सो वह उससे बोला — "इतने छोटे से माँस के टुकड़े का क्या फायदा है। आप मेरे साथ चलिये तो मैं आपको बहुत सारा हिरनी का माँस दूँगा। अगर आप उसको पूरा न खा सको तो बाकी बचा आप अपनी दोस्तों को दे दीजियेगा। इस तरह से वह आपके काम आयेगा।"

बुढ़िया तो यह सुन कर बहुत खुश हो गयी। वह लौट पड़ी और छोटे चोर के साथ बहुत सारा हिरनी का माँस लेने के लिये उसके साथ चल पड़ी।

जैसे ही वह धोखा देने वाली बुढ़िया छोटे चोर के साथ उसके घर में घुसी कि छोटे चोर ने अपनी कटार निकाली और उसका सिर काट लिया। उसका शरीर भी उसने उसी काउच के नीचे जमीन में दफ़न कर दिया जिसके नीचे बड़े चोर का शरीर दफ़न था।

इधर राजा उस बुढ़िया का इन्तजार करता रहा कि वह उसको उसकी हिरनी की खबर ला कर देगी पर वह तो आयी ही नहीं।

जब कुछ समय बीत जाने पर भी बुढ़िया नहीं आयी तो राजा का गुस्सा तो सातवें आसमान पर चढ़ गया।

उसने अपने सलाहकारों को फिर से बुलाया और कहा — "इस सबसे हमें क्या फायदा हो रहा है। क्या इस चोर को पकड़ने का कोई रास्ता नहीं है?"

वजीर बोले — "योर मैजेस्टी, यह चोर इतना बहादुर और होशियार है कि हम लोग इसको पकड़ ही नहीं पा रहे।"

यह सुन कर राजा उठा और बोला — "उस चोर को मेरे पास आने दो। मैं उसको कोई नुकसान नहीं पहुँचाऊँगा बल्कि अपनी बेटी की शादी उसके साथ कर दूँगा। क्योंकि वह इतना चालाक है कि मैं उसको चालाकी से नहीं पकड़ सकता।"

जब छोटे चोर ने यह सुना तो वह राजा के पास गया और बोला — "मैं ही वह चोर हूँ जिसे आप ढूँढ रहे हैं और मैं योर मैजेस्टी की इच्छा पूरी करने आया हूँ।"

अब राजा तो अपने कहे से मुकर नहीं सकता था सो उसने अपनी बेटी की शादी उस चोर से कर दी।

पड़ोसी राजा ने यह कहानी सुनी तो उसने उस चोर के ससुर राजा को रोज कई तंग करने वाली चिट्ठियाँ लिखीं — "क्या तुम एक नीच चोर को अपना दामाद बना कर कोई शरमिन्दगी महसूस नहीं कर रहे हो?"

राजा इन चिट्ठियों को पा कर बहुत गुस्सा हो रहा था। जब वह उनको और नहीं सह सका तो आखिर वह बीमार पड़ गया।

राजा की बीमारी देख कर उसका चोर दामाद उसके पास आया और उससे पूछा — "राजा साहब क्या बात है। आप क्यों बीमार हैं?"

राजा ने उसको सारी बात बता दी तो चोर बोला — "आप इतने परेशान क्यों होते हैं। मुझे कुछ दिनों की छुट्टी दे दीजिये तब मैं आपको कुछ दिखाऊँगा। फलॉ फलॉ दिन आप एक बहुत बढ़िया दावत का इन्तजाम कीजिये और मैं यहॉ मौजूद रहूँगा।"

यह कह कर उसने दावत का एक दिन निश्चित किया और वहॉ से चला गया।

चलते चलते वह उस पड़ोसी राजा के देश में आया जो उसके ससुर की हॅसी उड़ा रहा था। वहॉ आ कर वह एक घर में ठहर गया।

अगले दिन वह एक दरजी से मिला। उसने उससे कहा — "मुझे एक पोशाक बनवानी है जो खाल की बनी हो और जो बहुत सारे रंगों की हो। उसके ऊपर कुछ घंटियॉ भी हों।"

दरजी ने उसके लिये वैसी ही पोशाक बना दी। चोर ने उसको उसका पैसा दिया वह पोशाक पहनी हाथ में एक नंगी चमकती हुई तलवार ली और राजा के महल जा पहुँचा।

महल के पहरेदार उसको अन्दर नहीं आने दे रहे थे तो चोर ने कहा — "मैं भगवान का भेजा हुआ माइकल गैब्रील हूँ। मुझे यह हुकुम मिला है कि मैं तुम्हारे राजा और रानी की आत्माओं को स्वर्ग ले जाऊँ और अगर तुम लोग मुझे परेशान करो तो मैं तुम्हारी आत्माओं को भी ले जाऊँ और उनको नरक में भेज दूँ।"

ऐसा कह कर वह उनमें से एक की तरफ आगे बढ़ा तो उसकी पोशाक में लगी घंटियाँ बज उठीं। पहरेदार यह सब सुन कर और देख कर डर गये तो वे छिप गये।

चोर को रास्ता मिल गया तो वह राजा के पास गया। राजा ने जब उस आदमी को देखा तो वह तो पीला पड़ गया।

माइकल गैब्रील बोला — "मैं तुमको तीन दिन की मोहलत देता हूँ। इन तीन दिनों में तुम अपना हिसाब किताब ठीक कर लो और अपना वारिस निश्चित कर लो। अपना सब कुछ उतार दो और अपने आपको ताबूत में बन्द कर लो और उसकी चाभी उसके ऊपर रख दो। तीन दिन बाद मैं फिर आऊँगा ताबूतों को ताला लगाऊँगा और उनको अपने साथ ले जाऊँगा।"

यह कह कर वह वहाँ से चला गया। वह वापस घर आया अपनी खालों वाली पोशाक उतारी और तीन दिन तक इन्तजार किया।

तीसरे दिन वह वैसे ही तैयार हुआ जैसे वह पहले तैयार हुआ था और राजा के महल पहुँच गया। वहाँ राजा और रानी ने अपना सब कुछ उतार दिया था और ताबूत में लेटे हुए माइकल गैब्रील का इन्तजार कर रहे थे।

वहाँ आ कर वह बोला — "जब तुम स्वर्ग पहुँचो तो तुम वहाँ मीठा सा संगीत सुनोगे। तब ताबूत खोले जायेंगे और तुम स्वर्ग का शानदार दृश्य देखोगे।"

फिर उसने चाभियाँ उठायीं ताबूतों को ताला लगाया उनको अपनी पीठ पर रखा और उनको बाहर ले चला। बाहर निकल कर उसने उनको अपने गधे पर लादा फिर गधे के पीछे जा कर उसको कहा "चल बेटा चल।"

तय किये दिन वह अपने ससुर के राज्य आया। उस दिन राजा ने अपने राज्य के सारे लोगों को और पड़ोसी राज्य के बहुत सारे राजकुमारों को दावत के लिये बुला रखा था।

चोर वहाँ ताबूतों के साथ आया। उसने गधे पर से ताबूत उतारे तो बड़ा मीठा सा संगीत सुनायी पड़ा। फिर चोर ने ताबूत खोले तो राजा और रानी ताबूतों में से कूद कर नंगे ही निकल पड़े और नाचने लगे।

वहाँ आये लोगों ने उनकी वह बेवकूफी देखी तो वे तो हँसते हँसते दोहरे हो गये।

तब राजा आया उसने उनको शाही कपड़े पहनाये और कहा — “अब आप लोग अपने देश वापस जा सकते हैं और अपने राज्य पर राज कर सकते हैं। आगे से कभी किसी का मजाक मत बनाना।”

उसके बाद तो राजा अपने दामाद को बहुत प्यार करने लगा और जब वह मरा तो अपने बाद उसको वहाँ का राजा बना गया।

12 एक लोमड़ा और एक राजा का बेटा[33]

एक बार की बात है कि एक राजा था जिसके एक ही बेटा था। सब उसके साथ बुरा बरताव करते थे और उसको अपने पास से भगा देते थे। यहाँ तक कि आस पास से जाने वाले भी उसकी तरफ देखना पसन्द नहीं करते थे।

राजकुमार ने सोचा और सोचा और सोचा कि क्या किया जाये। आखिर वह अपने घोड़े पर चढ़ा अपना तीर कमान लिया और अपने पिता के महल से चल दिया।

चलते चलते वह एक जंगल में आ गया। वहाँ उसने एक अच्छी सी जगह चुन कर अपने लिये मिट्टी की एक झोंपड़ी बनायी और उसमें रहने लगा।

वह रोज शिकार करने जाता और रोज ही कोई न कोई बारहसिंगा या फिर कोई हिरन मार कर घर ले आता। उसमें से काफी सारा माँस खाने के बाद में भी उसके पास अगले दिन के लिये काफी माँस बच जाता पर वह उसको अगले दिन खाता नहीं था। क्योंकि वह अगले दिन वह फिर शिकार के लिये जाता था।

इस तरह से उसके पास बहुत सारा माँस बचा पड़ा था। एक लोमड़ा यह सब देख रहा था। रोज जब राजकुमार शिकार करने के

---

[33] The Fox and the King's Son (Tale No 15) – a folktale from Georgia, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.archive.org/stream/cu31924029936006#page/n19/mode/2up

लिये चला जाता तो वह उसकी झोंपड़े में जाता और उसका बचा हुआ सारा खाना खा जाता। और फिर वहाँ से चुपचाप चला आता।

कुछ दिनों तक ऐसे ही चलता रहा। एक दिन लोमड़े ने सोचा "इस तरह से माँस चुराने में न तो कोई मजा है और न ही कोई बहादुरी कि मैं उसका सारा माँस इस तरह छिप कर ले आता हूँ और फिर भी बहुत सारा पड़ा रह जाता है। मुझे उसको अपने आपको दिखाना चाहिये।"

सो एक बार जब राजकुमार शिकार के लिये गया हुआ था तो वह लोमड़ा उसके घर में घुस गया। वहाँ जा कर पहले उसने माँस खाया और फिर उसकी झोंपड़ी में रखी उसकी सब चीज़ें ठीक करके रखने लगा।

जब राजकुमार घर आया तो वह उसके सामने ही वहाँ से कूद कर बाहर भागने लगा। पर राजकुमार भी कोई सुस्त नहीं था। उसने तुरन्त अपनी कमान निकाली और उस पर तीर रख कर चलाने ही वाला था कि लोमड़ा बोला — "मुझे मत मारो। मैं तुम्हारी तुम्हारी किस्मत बनाने में सहायता करूँगा।"

सो राजकुमार का हाथ रुक गया और उसने लोमड़े को नहीं मारा। अब लोमड़ा राजकुमार के घोड़े की देखभाल करता और उसको घास चराता। इस तरह से रहते रहते उन्हें कुछ समय बीत गया।

लोमड़ा उसकी आग जलाता उसकी झोंपड़ी की सफाई करता और घर का सब काम करता। इस सबके बाद भी राजकुमार का लाया काफी मॉस बच जाता।

एक दिन लोमड़ा बोला — "मैं जा कर किसी को ढूँढ कर लाता हूँ जो इस मॉस को खाने में हमारी सहायता करे।"

सो वह बाहर गया और एक भेड़िये को देखा जो भूख के मारे इतना कमजोर हो गया था कि वहा जहाँ था वहाँ से बहुत मुश्किल से हिल पा रहा था।

लोमड़ा बोला — "आओ मेरे साथ मेरे घर चलो। वहाँ तुमको हर चीज़ बहुत सारी मिलेगी।" भेड़िया उसके पीछे पीछे चल दिया।

दोनों झोंपड़ी में आये तो लोमड़े ने भेड़िये से कहा — "मैं घर की सफाई करता हूँ तुम यहीं ठहरो जब मालिक आ जायें तो तुम उनके घोड़े की देखभाल करना।"

कुछ देर बाद राजकुमार आ गया। उसके घोड़े की जीन से एक बारहसिंगा लटक रहा था। भेड़िया उसको देखते ही घोड़े की देखभाल के लिये कूद पड़ा।

राजकुमार ने तुरन्त भेड़िये को मारने के लिये अपनी कमान निकाली और भेड़िये को तीर मारने ही वाला था कि लोमड़ा बोला — "उसे मत मारो। वह हमारा दोस्त है।"

राजकुमार रुक गया उसने भेड़िये को नहीं मारा और अपने घोड़े से उतर पड़ा। उसने अपने घोड़े से बारहसिंगा उतारा और घर में चला गया।

भेड़िया घोड़े की देखभाल करने लगा और उसको इधर उधर घुमाने लगा। लोमड़ा घर के अन्दर की देखभाल करता रहा। इस तरह उनको फिर कुछ समय बीत गया।

लोमड़े ने देखा कि मॉस अभी भी काफी बच जाता है। सो वह एक बार फिर बाहर गया और एक भालू को बुला लाया। भेड़िये को घास लाने के लिये भेज दिया गया। भालू को घोड़े की देखभाल करने के लिये रख दिया गया। और लोमड़ा घर की देखभाल करता रहा।

थोड़ी देर में ही राजकुमार घर आया तो भालू कूद कर घोड़े की देखभाल के लिये आगे बढ़ा तो राजकुमार ने अपनी कमान निकाल कर उसे तीर मारना चाहा तो लोमड़ा चिल्लाया — "इसे मत मारो यह तो एक दोस्त है।"

सो राजकुमार ने भालू को नहीं मारा। भालू ने फिर घोड़े की देखभाल की और उसको घुमाने ले गया। कुछ देर में भेड़िया घास ले कर आ गया। उसने घोड़े को घास खिलायी।

फिर कुछ समय बीत गया। लोमड़े ने देखा कि मॉस अभी भी बहुत बच रहता है सो वह फिर बाहर गया और अबकी बार वह एक गरुड़ को घर ले आया।

उसने गरुड़ से कहा कि वह घोड़े की देखभाल करे भालू को घास लाने के लिये भेज दिया भेड़िये को जंगल से जलाने के लिये लकड़ी लाने के लिये भेज दिया और खुद वह उसके घर की देखभाल करता रहा।

इस तरह से अब सबके पास अपना अपना काम था। जब मालिक घर लौटा तो गरुड़ घोड़े की देखभाल के लिये उड़ा। राजकुमार उसको तीर मारने ही वाला था कि लोमड़ा चिल्लाया — उसको मत मारना वह हमारा दोस्त है।"

राजकुमार ने उसको मारा तो नहीं पर मन ही मन में सोचा "अब की बार यह लोमड़ा पता नहीं किसको ले कर आयेगा। क्या मुझे सारे शिकार यहीं मिल जायेंगे।" इस तरह से वे फिर कुछ दिन तक रहते रहे।

एक बार लोमड़े ने मालिक से कहा — "हमको दो हफ्ते की छुट्टी चाहिये। दो हफ्ते बाद हम आपके पास लौट आयेंगे।"

मालिक ने सबको छुट्टी दे दी और अपने मन में सोचा "मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता अगर तुम लोग वापस न भी आओ तो। क्योंकि मुझे तुम सबसे बहुत डर लगता है।

इस तरह लोमड़ा भेड़िया भालू गरुड़ सब राजकुमार से दो हफ्ते की छुट्टी ले कर चले गये। चलते चलते वे एक जंगल में एक खाली जगह जा पहुँचे जहाँ जा कर उन्होंने आराम किया।

लोमड़े ने अपने साथियों से कहा — "अब हमको अपने मालिक के लिये एक बहुत अच्छा घर बनाना चाहिये।" सो सब जानवर राजकुमार के लिये मकान बनाने में लग गये।

भेड़िये ने पेड़ काटे। भालू ने उस लकड़ी को जिस तरीके की शक्लों में काटना चाहिये था उस शक्ल में काटा और उनको जोड़ा। गरुड़ उनको ले कर गया। और लोमड़े ने उनको सबको बताया कि फिर क्या करना है।

जब लकड़ी तैयार हो गयी तब वे मकान बनाने के लिये तैयार हुए। उन्होंने इतना सुन्दर मकान बनाया कि उसके जैसा मकान राजकुमार सपने में भी नहीं सोच सकता था। मकान तो बन कर तैयार हो चुका था पर अभी उसमें कोई फर्नीचर नहीं था।

लोमड़ा उठा और अपने साथियों को ले कर पास के शहर में गया। वहाँ जा कर वे बाजार गये और घर के लिये फर्नीचर देखा। अब फिर हर एक के करने लिये एक काम था।

लोमड़े ने सामान चुना। भेड़िये ने शटर बनाने का आर्डर दिया। भालू ये सब सामान उठा कर दरवाजे तक ले गया और गरुड़ उनको महल में ले गया।

उन्होंने वह सब सामान खरीदा जो एक महल के लिये जरूरी था – घर के बरतन, कालीन, बड़े बड़े बरतन आदि आदि। वे सब चीज़ें उन्होंने महल में ले जा कर सजा दीं। अब वहाँ किसी चीज़ की कमी नहीं थी।

दो हफ्ते गुजर चुके थे सो चारों घर गये। राजकुमार उस समय शिकार पर गया हुआ था पर वे उससे वहीं मिलने गये। उन्होंने जा कर उसको चारों तरफ से घेर लिया और उसको कहीं जाने न दें।

लोमड़ा ज़ोर से बोला — "हम तुम्हें हुकुम देते हैं कि तुम हमारे साथ आओ जिधर भी हम तुम्हें ले चलें।"

राजकुमार तो यह सुन कर डर गया। उसको यह पता ही नहीं था कि इस सबका क्या मतलब था। पर फिर भी उसको जाना पड़ा। थोड़ी ही देर में जब वे सब खुली जगह पहुँच गये। वह जगह एक दीवार से चारों तरफ से घिरी हुई थी जिसके पार कोई चिड़िया तक नहीं उड़ सकती थी।

उन्होंने उसके फाटक खोले और उसके अन्दर गये। जब राजा के बेटे ने वह सब देखा तो वह तो आश्चर्य से भौंचक्का रह गया। दीवार के अन्दर बहुत ही सुन्दर बागीचा था जिसमें कई फव्वारे पानी बिखेर रहे थे। और उनके बीच खड़ा था एक बहुत सुन्दर महल।

यह दिखा कर वे बोले — "यह हम सबने मिल कर तुम्हारे लिये दो हफ्ते में बनाया है। अब तुम इस मकान में खुशी खुशी आराम से रहो।"

राजकुमार तो यह सब देख कर बहुत खुश हुआ और लोमड़े का दिल से धन्यवाद किया। वहाँ रहते रहते फिर कुछ समय बीत गया।

अब लोमड़ा बोला — “अब मुझे लगता है कि मालिक के लिये एक बहुत अच्छी सी पत्नी ढूँढ दूँ।”

सो वह राजकुमार के पास गया और उसने उससे फिर से दो हफ्ते की छुट्टी माँगी। राजकुमार ने तुरन्त ही उसको छुट्टी दे दी।

छुट्टी ले कर उसने एक स्ले[34] बनायी। उसने उसमें भालू और भेड़िया जोता और गरुड़ से कहा — “तुम बहुत ऊँचे ऊपर उड़ जाओ और ज़रा ध्यान से देखते रहो। जब तुमको कोई बहुत सुन्दर राजकुमारी मिल जाये तो उसको अपने पंजों में पकड़ कर यहाँ ले आना।” वह खुद उस स्ले में बैठ कर कोचवान का काम करने लगा। इस तरह से वे जगह जगह घूमते फिरे।

गाँवों में लोमड़े ने बिगुल बजाये भालू और भेड़िया कूदे और नाचे। उनका नाच कूद देखने के लिये बहुत सारी भीड़ जमा हो गयी। जब वे राजधानी में आये तो वहाँ सूरज की तरह से सुन्दर एक बहुत सुन्दर लड़की आयी।

---

[34] Sledge or sleigh is a wheelless carriage which is used normally in snow covered regions and is drawn by horses or reindeers. See its picture above.

गरुड़ ने उसको देखा तो तुरन्त ही उसको अपने पंजों में दबोचा और उड़ चला। भालू और भेड़िये भी अपने घर को लौट चले।

जब लोगों ने देखा तो वे भी उनके पीछे पीछे चले। लोमड़ा अपने साथियों से पीछे था। कुत्ते उसके पीछे भागे चले आ रहे थे। वे तो उसका शाल पकड़ने ही वाले हो रहे थे कि किसी तरह से वे सब उस सुन्दर राजकुमारी को ले कर अपने मालिक के पास अपने घर आ गये।

राजकुमार तो यह देख कर खुशी के मारे उछल ही पड़ा। उसके तो पैर ही जमीन पर नहीं पड़ रहे थे।

यह सब देख कर राजकुमारी का पिता बहुत गुस्सा था। उसने कहा — "जो कोई भी मेरी बेटी को ढूँढेगा और उसे मेरे पास वापस लायेगा मैं उसे अपना आधा राज्य दूँगा।" पर कोई उसका निशान भी नहीं पा सका।

आखिर एक बुढ़िया वहाँ आयी और बोली — "मैं अपकी बेटी को ढूँढ कर लाऊँगी।" कह कर वह उठी और चल दी।

आखिर वह राजकुमार के घर आयी और वहाँ आ कर पूछा — "क्या आपको कोई नौकरानी चाहिये। मैं बहुत कम पैसे में आपका काम कर दूँगी।"

लोमड़ा भेड़िया भालू गरुड़ यहाँ तक कि राजकुमारी ने भी उसको यह कह दिया कि उनको उसकी जरूरत नहीं थी। पर राजकुमार उनसे राजी नहीं था। उसने उसको नौकर रख लिया।

बुढ़िया ने काफी दिनों तक उनकी बड़ी वफादारी से सेवा की और उनको किसी तरह की कोई तकलीफ नहीं होने दी।

एक दिन जब राजकुमार सोया हुआ था तो बुढ़िया ने राजकुमारी से उसके साथ बागीचे में जाने के लिये कहा।

राजकुमारी जाना नहीं चाहती थी पर बुढ़िया उससे जिद करती रही जब तक कि वह राजी नहीं हो गयी। सो दोनों बागीचे में घूमने आ गयीं। दोनों फव्वारे के पास आयीं तो बुढ़िया ने उसको पानी पीने को दिया। राजकुमारी ने मना किया तो उसने उससे पीने की जिद की।

उसने पानी का एक बड़ा सा बरतन राजकुमारी के होठों से लगा दिया। अचानक ही उसने राजकुमारी को निगल लिया। फिर बुढ़िया ने उसको अपने मुँह से लगाया तो उसने उसको भी निगल लिया। अब बरतन लुढ़क चला।

लोमड़ा यह सब देख रहा था। उसने उस बरतन का पीछा भी किया पर वह जल्दी ही उसकी ऑखों से ओझल हो गया। लोमड़ा तुरन्त अपने मालिक के पास गया पर अब उससे कुछ कहने का कोई फायदा नहीं था।

उसने उससे फिर से दो हफ्ते की छुट्टी मॉगी उसने फिर से अपनी पुरानी तरह की स्ले बनायी उसने फिर से भालू और भेड़िये को उसमें जोता और खुद फिर से कोचमैन की जगह पर बैठ कर चल दिया।

अबकी बार उसके पंजों में तम्बूरीन्स थी। वह उसको बजाता था और भालू और भेड़िया नाचते थे। गरुड़ ऊपर उड़ता हुआ इधर उधर राजकुमारी को ढूँढ रहा था। उस देश में बहुत सारे लोग यह नजारा देखने के लिये घर से बाहर आ गये।

राजा अपनी बेटी से अभी भी बहुत नाराज था। जब राजकुमारी ने बाहर जाना चाहा तो राजा ने उससे कहा — "नहीं बाहर मत जाओ। बल्कि बाहर देखना भी नहीं।"

गरुड़ बहुत देर तक इधर उधर देखता रहा। आखीर में उसने एक खिड़की में से राजकुमारी की एक छोटी सी झलक देख ली। बस वह उस खिड़की से जा कर टकराया और उसको तोड़ दिया। राजकुमारी को अपने पंजों में पकड़ा और उड़ चला।

वह अपने साथियों से जा कर मिल गया और वे सब घर की तरफ चल पड़े। वे राजकुमारी को अपने मालिक के पास ले आये। उधर राजा ने अपनी सेना इकट्ठी की और उस बुढ़िया के साथ राजकुमार के महल भेज दिया।

लोमड़े ने दूर से उनको एक मक्खियों के झुंड की तरह आते देखा तो उसने गरुड़ को आसमान में पत्थर ले जाने के लिये कहा और कहा कि जब सेना आ जाये तो वे पत्थर वह उन आदमियों के ऊपर फेंक दे। लोमड़ा भालू और भेड़िया उन पर अलग से हमला कर देंगे और उनको सबको मार देंगे। ऐसा ही हुआ।

केवल एक आदमी बचा सो वे उस पर भी टूट पड़े और उस पर अपना एक पंजा रख कर उससे कहा — "जाओ और जा कर अपने राजा को बता दो कि उसके आदमियों पर क्या बीती है।"

वह आदमी अपने राज्य चला गया। जब राजा ने अपने केवल एक आदमी को वापस आते देखा और अपनी सेना के मारे जाने के बारे में सुना तो वह दुख से पागल हो गया।

उसने अपने राज्य के सारे बड़े बड़े पादरियों को बुलाया और उनको ले कर राजकुमार के महल ले गया। वे आये और उसके सामने घुटने टेक कर बैठ गये।

जब वे पास आये तो लोमड़े ने उनको देखा और अपने मालिक को बताया। राजकुमार उनसे मिलने के लिये दौड़ा गया और उनको उनके पैरों पर खड़ा किया। फिर वह उनको अपने घर में अन्दर ले गया। राजकुमारी का पिता और उनके दामाद ने फिर आपस में समझौता कर लिया और दोनों खुशी खुशी रहे।

लोमड़ा अपने मालिक से बोला — "मैं अब बूढ़ा हो रहा हूँ। मैं अब जल्दी ही मर जाऊँगा। आप मुझसे वायदा कीजिये कि आप मुझे एक मुर्गीखाने में दफ़नायेंगे।"

राजकुमार ने वायदा किया कि वह वैसा ही करेगा जैसा कि उसने उससे करने के लिये कहा है।

लोमड़े ने सोचा "मैं देखता हूँ कि मेरे मालिक अपना वायदा निभाते हैं या नहीं।" और वह ऐसा पड़ गया जैसे कि वह मर गया

हो। राजकुमार ने जब उसकी लाश देखी तो उसने हुकुम दिया कि उसको ले जा कर बाहर जमीन में गाड़ दें।

इस पर लोमड़ा बहुत गुस्सा हुआ। वह कूद पड़ा और ज़ोर से चिल्लाया — "मेरी अच्छाइयों को क्या आप इसी तरह से याद रखेंगे। अब क्योंकि आपने ऐसा कर दिया है तो जब मैं मरूँगा तब आप सब पर मेरा शाप पड़ेगा आप सबका नामोनिशान तक मिट जायेगा।"

इसके कुछ समय बाद लोमड़ा मर गया। इसके बाद उसके वे शब्द सच हुए। वे सब मर गये। बस केवल भेड़िया भालू और गरुड़ ही वहाँ के मालिक रहे।

13 एक राजा और सेब[35]

एक बार की बात है कि या तो था और या फिर बिल्कुल ही नहीं था एक राजा रहा करता था। वह बहुत बूढ़ा हो गया था और उसकी मौत का समय पास आ गया था।

सो उसने अपने बेटे को बुलाया और उससे कहा — "लो बेटा यह सन्दूकची तुम अपने पास रखो। जिस दिन तुम शिकार के लिये पूर्व की तरफ जाओ और तुम बहुत परेशानी में हो तब इसे खोलना।"

यह कह कर राजा मर गया। उसको जिस तरह वह चाहता था उसी तरह से दफ़ना दिया गया। पिता की मौत के बाद राजकुमार बहुत दुखी हो गया और इतना दुखी हो गया कि उसने घर से बाहर ही निकलना बन्द कर दिया।

आखिर राज्य के मन्त्री लोग अपने नये राजा के पास आये और उसको सलाह दी कि उसको शिकार के लिये जाना चाहिये ऐसे घर में बैठे रहने से कैसे काम चलेगा।

राजा को यह विचार अच्छा लगा और वह शिकार के लिये चल दिया। वे लोग पूर्व की तरफ गये और उन्होंने बहुत सारे शिकार मारे।

---

[35] The King and the Apple (Tale No 16) – a folktale from Georgia, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.archive.org/stream/cu31924029936006#page/n19/mode/2up

जब वे लोग लौट रहे थे तो नौजवान राजा ने सड़क के पास एक मीनार देखी। उसको देख कर उसने यह इच्छा प्रगट की कि वह उसमें जा कर देखे कि उसमें क्या है।

उसने अपने एक मन्त्री से कहा कि वह उसके अन्दर जाये और जा कर देखे कि उसके अन्दर क्या है। उसने राजा का हुकुम माना पर कहा — "मुझे लगता है कि मैं इसमें से तीन दिनों में वापस आ जाऊँगा और अगर मैं न आऊँ तो समझियेगा कि मैं मर गया।"

तीन दिन बीत गये। मन्त्री नहीं लौटा। राजा ने दूसरा मन्त्री भेजा फिर तीसरा मन्त्री भेजा फिर चौथा मन्त्री भेजा पर चारों में से कोई भी मन्त्री वापस लौट कर नहीं आया। तब वह खुद उठा और उसमें अन्दर जाने के लिये तैयार हुआ।

जब वह दरवाजे के पास पहुँचा तो उसने देखा कि दरवाजे के ऊपर लिखा था "तुम घुसोगे तो तुम पछताओगे। और नहीं घुसोगे तो भी तुम पछताओगे।"

राजा ने सोचा "तो मुझे कुछ न कुछ तो करना ही है। मैं घुसूँ या फिर न घुसूँ। मैं घुस कर भी पछताऊँगा और बिना घुसे भी। तो फिर मैं घुस कर ही क्यों न पछताऊँ।" उसने दरवाजा खोला और उसके अन्दर घुस गया।

लो वहाँ तो बारह आदमी नंगी तलवारें हाथ में लिये खड़े थे। उन्होंने उसका हाथ पकड़ा और उसको बारह कमरों में से निकाल कर ले गये।

जब वह बारहवें कमरे में आया तो उसने वहाँ एक सोने का काउच देखा जिस पर एक आठ नौ साल की उम्र का लड़का लेटा हुआ था। उसकी आँखें बन्द थीं और वह एक शब्द भी नहीं बोला।

राजा को बताया गया कि वह लड़के से तीन सवाल पूछ सकता था। पर अगर वह उन सवालों को नहीं समझता और सब सवालों के जवाब नहीं देता तो उसका सिर कटवा दिया जायेगा।

यह सुन कर तो राजा बहुत दुखी हो गया कि वह अब क्या करे। पर फिर उसको अपने पिता की दी हुई सन्दूकची का ध्यान आया। उसने सोचा "इससे ज़्यादा मेरी बदकिस्मती क्या होगी कि मुझे मरना पड़ रहा है।"

सो उसने सन्दूकची निकाली और उसे खोला। खोलते ही उसमें से एक सेब निकल कर नीचे गिर पड़ा। गिर कर वह काउच की तरफ लुढ़क गया। राजा ने सोचा "यह मेरी क्या सहायता करेगा।"

वह यह सोच ही रहा था कि सेब बोलने लगा। उसने लड़के को नीचे लिखी हुई कहानी सुनायी —

"एक आदमी अपनी पत्नी और भाई के साथ यात्रा कर रहा था। चलते चलते उनको रात हो गयी। उनके पास खाना भी नहीं था। सो भाई पास के गाँव में डबल रोटी खरीदने गया। रास्ते में उसको डाकू मिल गये जिन्होंने उसे लूट लिया और उसका सिर काट दिया।

जब आदमी ने देखा कि उसका भाई लौट कर नहीं आया तो वह उसको देखने गया। उसका भी वही हाल हुआ जो उसके भाई का हुआ था। अगले दिन वह दुखी स्त्री उनको देखने गयी। बीच रास्ते में उसने अपने पति और उसके भाई की लाशें पड़ी देखीं जिनका सिर नहीं था।

पास में ही उनके सिर पड़े थे। उनके चारों तरफ खून बिखरा पड़ा था। वह स्त्री बेचारी वहीं बैठ गयी। वह अपने बाल नोचने लगी और उसने बहुत ज़ोर ज़ोर से रोना शुरू कर दिया।

तभी वहाँ एक छोटा सा चूहा आया और उसने खून चाटना शुरू कर दिया। इस पर स्त्री ने एक पत्थर उठाया उसको चूहे पर दे मारा जिससे चूहा मर गया।

अब चूहे की माँ बाहर आयी और बोली — "मेरी तरफ देख। मैं तो अपने बच्चे को ज़िन्दा कर सकती हूँ पर तू अपने पति और उसके भाई के लिये क्या कर सकती है।" कह कर उसने एक जड़ी बूटी उखाड़ी और उसे चूहे के शरीर पर मल दिया और लो वह चूहा तो ज़िन्दा हो गया। बस फिर वे दोनों अपने बिल में घुस गये।

यह देख कर वह स्त्री तो बहुत खुश हो गयी। उसने भी वही जड़ी बूटी तोड़ी अपने पति और उसके भाई के सिर उनके धड़ से जोड़े और वह जड़ी बूटी उनके ऊपर लगा दी। उसका पति और उसके पति का भाई दोनों ज़िन्दा हो गये। पर उससे एक गलती हो गयी। उसने वे सिर गलत शरीरों पर लगा दिये।

अब मेरे नौजवान बेटे तुम यह बताओ कि उस स्त्री का पति कौन सा था।" कह कर सेब ने अपनी कहानी खत्म की।

लड़के ने अपनी ऑखें खोलीं और कहा — "निश्चित रूप से वही जिसके शरीर पर ठीक सिर था।"

राजा यह सुन कर बहुत खुश हुआ।

सेब फिर बोला — "एक बार एक मिलाने वाला[36], एक दरजी और एक पादरी एक साथ कहीं जा रहे थे। चलते चलते उनको जंगल में रात हो गयी सो उन्होंने एक बहुत बड़ी आग जलायी खाना खाया फिर बोले — "हमको नौकरी दिलवा दीजिये। हममें से हर एक बारी बारी से पहरा देगा और अपने अपने काम में कुछ न कुछ करेगा।"

मिलाने वाले की बारी पहली थी सो उसने एक पेड़ काटा और उसकी लकड़ी से एक आदमी बनाया। फिर वह लेट गया और सो गया। अब दरजी की पहरा देने की बारी आयी। तो उसने एक आदमी की मूर्ति देखी तो उसने अपने कपड़े उतारे और उसको पहना दिये।

दरजी के बाद अब पादरी की पहरा देने की बारी थी। जब उसने एक आदमी कपड़े पहने हुए देखा तो उसने भगवान से प्रार्थना की वह उसमें आत्मा डाल दे। उसने प्रार्थना की और भगवान ने उसकी इच्छा पूरी की।

---

[36] Translated for the word "Joiner"

अब यह बताओ मेरे बच्चे कि उस आदमी को किसने बनाया?”

“जिसने उसमें आत्मा डाली।” लड़के ने जवाब दिया।

राजा यह सुन कर बहुत खुश हुआ। उसने अपने मन में सोचा “ये दो सवाल हो गये।”

सेब फिर बोला — “एक बार एक ज्योतिषी था एक डाक्टर था और एक तेज़ भागने वाला था। ज्योतिषी बोला — “एक जगह एक राजकुमार है जो फलॉ फलॉ बीमारी से बीमार है।”

डाक्टर बोला — “मैं जानता हूँ कि उसका इलाज क्या है।”

तो तेज़ भागने वाला बोला — “मैं उस दवा को वहॉ जल्दी से जल्दी ले जा सकता हूँ।”

सो डाक्टर ने उसके लिये दवा तैयार की और वह तेज़ भागने वाला उस दवा को ले कर वहॉ भाग गया। और राजकुमार ठीक हो गया।

अब यह बताओ कि राजकुमार को किसने ठीक किया – ज्योतिषी ने जिसने राजकुमार के बारे में बताया या फिर डाक्टर ने जिसने दवा तैयार की या फिर उस आदमी ने जो दवा ले कर भाग कर गया।”

लड़का बोला — “जिसने दवा तैयार की।”

जब लड़के ने तीनों के जवाब दे दिये तो वह सेब फिर से अपनी सन्दूकची में जा कर बैठ गया। और राजा ने वह सन्दूकची अपनी जेब में रख ली।

लड़का उठा उसने राजा को गले लगाया और बोला — “यहॉ बहुत लोग आये पर इससे पहले मैं बोल नहीं सका। अब तुम मुझे अपनी इच्छा बताओ कि तुम्हारी क्या इच्छा है मैं वही पूरी करूँगा।”

राजा ने कहा कि उसके मन्त्री जो मर चुके थे उनको ज़िन्दा कर दिया जाये।

लड़के ने वैसा ही किया। सब लोग बहुत सारी भेंटें ले कर अपने घर वापस गये।

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

36 पुस्तकें www.Scribd.com/Sushma_gupta_1 पर उपलब्ध हैं।

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें ई–मीडियम पर सोसायटी औफ फौकलोर, लन्दन, यू के, के पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।
Write to :- E-Mail : thefolkloresociety@gmail.com

1 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं — 10 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — 45 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — प्रभात प्रकाशन
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — प्रभात प्रकाशन
4 शेबा की रानी मकेडा और राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
5 राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन

नीचे लिखी पुस्तकें रचनाकार डाट आर्ग पर मुफ्त उपलब्ध हैं जो टैक्स्ट टू स्पीच टैकनोलोजी के द्वारा दृष्टिबाधित लोगों द्वारा भी पढ़ी जा सकती हैं।

1 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/08/1-27.html
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/08/2-1.html
3 रैवन की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1.html
4 रैवन की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/09/2-1.html
5 रैवन की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/09/3-1-1.html
6 इटली की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1_30.html

7 इटली की लोक कथाऐं–**2**
http://www.rachanakar.org/2017/10/2-1.html
8 इटली की लोक कथाऐं–**3**
http://www.rachanakar.org/2017/10/3-1.html
9 इटली की लोक कथाऐं–**4**
http://www.rachanakar.org/2017/10/4-1.html
10 इटली की लोक कथाऐं–**5**
http://www.rachanakar.org/2017/10/5-1-italy-lokkatha-5-seb-wali-ladki.html
11 इटली की लोक कथाऐं–**6**
http://www.rachanakar.org/2017/11/6-1-italy-ki-lokkatha-billiyan.html
12 इटली की लोक कथाऐं–**7**
http://www.rachanakar.org/2017/11/7-1-italy-ki-lokkatha-kaitherine.html
13 इटली की लोक कथाऐं–**8**
http://www.rachanakar.org/2017/12/8-1-italy-ki-lokkatha-patthar-se-roti.html
14 इटली की लोक कथाऐं–**9**
http://www.rachanakar.org/2017/12/9-1-italy-ki-lok-katha-do-bahine.html
15 इटली की लोक कथाऐं–**10**
http://www.rachanakar.org/2017/12/10-1-italy-ki-lok-katha-teen-santre.html
16 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_54.html
17 चालाक ईकटोमी
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_88.html

नीचे लिखी पुस्तकें जुगरनौट डाट इन पर उपलब्ध हैं
https://www.juggernaut.in/authors/2a174f5d78c04264af63d44ed9735596
1 सोने की लीद करने वाला घोड़ा और अन्य अफ्रीकी लोक कथाऐं
2 असन्तुष्ट लड़की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
3 रैवन आग कैसे लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
4 रैवन ने शादी की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
5 कौआ दिन लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on May 27, 2018

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको “देश विदेश की लोक कथाऐं” क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
मई **2018**